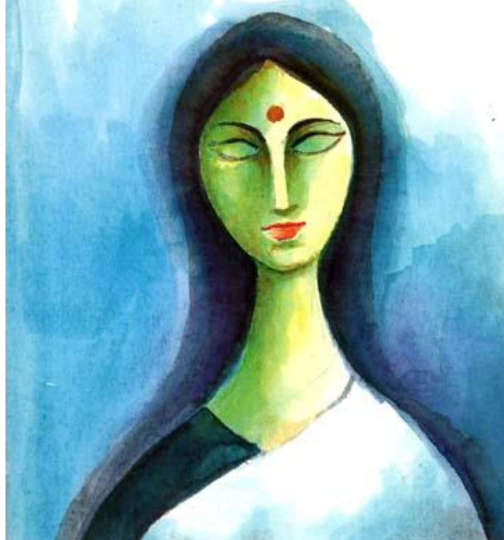


1- डर

अगली सुबह काफी सर्द थी।

अपना त्यागपत्र मैं क्लासें शुरू होने से पहले ममस्टर व्हिसलर की मेज़ पर छोड़ आया था। उस समय चेपल की घंमियााँ बज रही थीं , इसमलए र्फ्तर में मसवाय चपरासी फकीरे के और मकसी से सामना होने की सम्भावना नहीं थी। ख्याल था मक अभी एकाध मर्न शायर् स्टाफ में मकसी को इसका पता नहीं चलेगा। पर ग्यारह बजे िी ब्रेक में सब लोग कामन रूम में जमा हुए, तो लगा मक कम से कम चार व्यव्हि तब तक उस बात को जानते हैं—बसदर बुधवानी, हेड क्लकद पाकदर, ममसेज़ पाकदर और एकाउंर्िंि मगरधारीलाल।

रात का कोहरा सुबह तक घना होकर बरफानी बार्ल में बर्ल गया था, हालााँमक बरफ पडऩी अभी शुरू नहीं हुई थी। हर हाथ की प्याली से उठती भाप मुाँह की भाप से िकराकर कुछ ऐसा आभास ◌र्ेती थी जैसे सीधे भाप की ही चुव्हियााँ ली जा रही हों। बड़े सोफे पर और उसके आसपास ममहलाओं का जमाव था। उस जमाव में बॉनी हाल स्टाफ की एकमात्र कुाँवारी मिरन होने के नाते सबसे ज़्या◌र्ा चहक रही थी। वह कान खोले जैसे हर बात को र्बोचने के मलए तैयार रहती थी और ज्◌ोंही बात कानों तक पहुाँचती थी , एकाएक व्हखल-व्हखलाकर हाँस उठती थी। आाँखें उसकी पूरे कमरे में तफरीह कर रही थीं। यह बॉनी हाल की खामसयत थी मक वह मजस मकसी भी समु◌र्ाय में हो, उस समु◌र्ाय के हर व्यव्हि को अपनी तरफ ◌र्ेखती जान पड़ती थी। उसकी आाँखें एक मिट्ठे की तरह यहााँ से वहााँ और वहााँ से यहााँ फुर्कती रहती थीं।

कोहली और जेम्स हमेशा की तरह साथ-साथ एक कोने में खड़े थे। जैसे मक वे लोग स्टाफ के सर्स्य न होकर बाहर से आए मेहमान हों या ऐसे र्शदक मजन्हें बाहर ◌र्ेखकर चाय पीने के मलए अन्दर बुला मलया गया हो। उनसे थोड़ा हिकर ◌र्ूसरे ग्रुप में चारों हाउस-मास्टर एक-◌र्ूसरे से सिकर खड़े मकसी गम्भीर मसले पर बात कर रहे थे। ममसेज़ पाकदर एक अलग कुसी पर बैठी अपनी कामपयााँ जााँच रही थी। उसकी कामपयों का कुछ ऐसा मसलमसला था मक हर समय जााँचते रहने पर भी वे कभी पूरी जााँचने में नहीं आती थीं। हर बार हाथ की कापी हिाकर ◌र्ूसरी कापी उठाने पर वह एक उसााँस छोड़ लेती थी।

बुधवानी, पाकदर और मगरधारीलाल तीनों अलग-अलग खड़े थे—पूरे कमरे में यहााँ से वहााँ चक्कर किाते हुए वे मेरे काफी नज़◌र्ीक आ गये थे। मफर भी तीनों मुझसे और एक-◌र्ूसरे से इतना फासला बनाए हुए थे मक यह न लगे मक उनके उस तरह खड़े होने का कोई खास मतलब है। मुझे लग रहा था मक उनमें से हर एक मुझसे अलग से बात करना चाहता है और इस प्रतीक्षा में है मक ◌र्ूसरे ◌र्ो ज़रा परे हि जाएाँ , तो वह ◌र्ो कर्म और पास चला आये।

उन तीनों ने—बव्हि ममसेज़ पाकदर समेत चारों ने—बीच में कई-कई आ◌र्ान-प्र◌र्ान चाहती नज़र से मुझे ◌र्ेख मलया था। मगर ऊपर से हर एक अपनी गम्भीरता और उ◌र्ासीनता बनाए हुए था। पहले ◌र्ो-एक बार उस तरह ◌र्ेखे जाने से मुझे असुमवधा हुई थी। पर बार् में मैंने स्वयं खोजना शुरू कर मर्या था मक उन चार के अलावा क्या कोई और भी है जो उस तरह मुझसे आाँख ममलाना चाहता हो।

ममहलाओं के वगद में उस समय मौसम और आनेवाली छुमियों को लेकर

बात हो रही थी। वहाँ से डोरी थामकर बुधवानी ने ◌ूर से ही मुझसे बात का मसलमसला शुरू करने की कोमशश की, “असली जाड़ा उतर आया है आज तो। इसके बार् लगता है ◌िम्परेचर रोज़-रोज़ मगरता जाएगा। छुमियों से पहले अब धूप नहीं मनकलेगी। क्या ख्याल है ?”

“इस बार काफी जल्दी बरफ पडऩे लगी है।” मैंने कहा, “एक बरफ पहले पड़ चुकी है, एक आज पड़ जाएगी। इसके बार् धूप अगर मनकली भी , तो जाड़ा कम नहीं होगा।”

बुधवानी ने हाथ की प्याली रख ◌ ्री और अपने को गरमाने के मलए अपने ◌ ्रोनों हाथ मलने लगा। “अच्छी खुली धूप के मलए हमें तीन महीने इन्तज़ार करना पड़ेगा।” उसने कहा, “मेरा ख्याल है छुमियों से पहले अभी ◌ ्रो-एक बरफें और पड़ेंगी—कम से कम एक तो ज़रूर पड़ेगी।”

“मेरा भी यही ख्याल है। ” मैंने अपने हाथ बगलों में र्बा मलये। बुधवानी के हाथ उसकी जेबों में चले गये।

“आज बरफ पड़ गयी , तो बाहर मनकलने के मलए शाम बहुत अच्छी हो जाएगी।” वह मुिराया पर वह मुिराहि उसकी बात से जुड़ी हुई नहीं थी। वह हि-हि अपना होंठ किाकर अपनी उत्तेजना को मछपाना चाह रहा था। पर इससे उसकी उत्तेजना मछप नहीं पा रही थी। उस समय बुधवानी के अन्दर से उत्तेमजत होने का अथद था मक वह ममस्टर व्हिसलर को उत्तेमजत ◌ ्रेखकर आया था। उसका चेहरा एक आईना था मजसमें हेडमास्टर के मन की हर प्रमतमिया का अक्स ◌ ्रेखा जा सकता था। जब हैडमास्टर खुश रहता था, तो बुधवानी भी खुश नज़र आता था। पर जब हैडमास्टर की त्योरी चढी रहती , तो बुधवानी के मलए भी चीज़ों का बर◌ ्राश्त करना मुव्हिल हो जाता था। इसमलए पीठ पीछे लोग उसका मज़ि ‘हेडमास्टजद माइंड’ और ‘हेडमास्टजद वायस’ के रूप में करते थे। ममस्टर व्हिसलर को अच्छा-बुरा जो भी करना होता था, उसे मुँह से कहने की मज़म्मे◌ ्रारी बुधवानी पर ही आती थी। यूँ भी वह कुछ इस तरह अपने को हैडमास्टर के तौर-तरीके में ढाले रहता था —कपड़े पहनने से लेकर चलने तक के अन्दाज़ में—मक उसका अपना कोई अलग व्यव्हित्व नज़र ही नहीं आता था। —अगर मकसी ◌ ूसरे की तरह सोचने , महसूस करने और व्यवहार करने को ही एक तरह का व्यव्हित्व न मान मलया जाए तो। मजस मकसी से बुधवानी खासी बेतकल्लुफी से बात करता था , उसके बारे में यह मनमित रूप से सोचा जा सकता था मक ◌िनी व्हिसलर आजकल उस आर्मी पर खुश है। मजससे ◌िनी व्हिसलर नाराज हों , उससे बेतकल्लुफी तो ◌ ूर, बुधवानी की बातचीत तक बन्द हो जाती थी। मकसी खास चीज़ को लेकर ◌िनी व्हिसलर का क्या रुख है , इसकी काफी पहचान बुधवानी की मुिराहि या

उसके होंठ महलाने के अन्दाज से हो जाती थी। वह मजस भाव से उस समय मुझे ◌ेख रहा था, उसका अथद था मक मेरे त्यागपत्र को लेकर हेडमास्टर ने अभी कोई मनिय नहीं मकया था। मनिय करने से पहले अभी मेरा मन र्टोलने की ज़रूरत थी —क्योंमक बुधवानी की मुिराहि में मुिराने से ज़्यार्◌ा र्टोलने की ही कोमशश थी।

उसकी मुिराहि के जवाब में मैं भी मुिराया—उसके बढक़र और पास आने की प्रतीक्षा में और उस मवषय में पहली बातचीत की तैयारी के साथ। बुधवानी अपने किो के कालर को उँगली और अ◌ाँगूठे के बीच मसलता हुआ सचमुच मेरे बहुत करीब आ गया। यह ◌ेखकर मक अब उनके मलए मौका नहीं रहा , पाकदर और मगरधारीलाल अलग-अलग मर्शा से कोहली के ग्रुप में जा शाममल हुए। ममसेज़ पाकदर ने माथे पर त्योरी डाले हाथ की कापी पर तीन जगह िास खींच मर्ए।

“तो?” अब मैंने हाथ बगलों से मनकालकर जेबों में डाल मलये।

“पहले मकसी से मज़ि तक नहीं मकया और अचानक... ?”

“बात इतनी महत्त्वपूर्द नहीं थी मक मैं पहले मकसी से मज़ि करता।”

“मफर भी... ,” उसने एक ◌ोस्त की तरह मेरी कुहनी पर हाथ रख मलया। “...हेड ने अभी मुझे बताया, तो मुझे बहुत हैरानी हुई। मुझे मवश्वास है मक तुम...मक तुम उस बात को लेकर बहुत गम्भीर नहीं हो। ”

“बात अपने में ही ज़्यार्◌ा गम्भीर नहीं है।” मैंने अपनी कुहनी पर उसके स्पशद से असुमवधा महसूस करते हुए कहा, “मैं नौकरी छोडऩा चाहता था, इसमलए मैंने त्यागपत्र ◌े मर्या है।”

बुधवानी ने एक बार आसपास ◌ेख मलया मक मेरे मुाँह से मनकले शब्द ‘त्यागपत्र’ ने मकसी का ध्यान तो नहीं खींचा। मफर हि से अपना हाथ र्बाकर बोला, “◌ेखो, जब तक अक्न्तम रूप से बात तय नहीं हो जाती, तब तक बेहतर है इस शब्द को जबान पर न लाओ। तुम तो जानते ही हो मक लोग मकस तरह हर बात को लेकर तरह-तरह के मतलब मनकालने लगते हैं।”

“ठीक है जहााँ तक मेरा सवाल है... ”

“वह बात अभी ◌ेखने की है।” कहते हुए उसने मफर एक बार पूरे कमरे का जायज़ा ले मलया—हाउस-मास्टरों का ग्रुप तब तक मछतरा गया था। ममस्टर िाइि और ममस्टर िाउन बाहर चले गये थे और बाकी ◌ोनों—

ममस्टर ब्रैंडल और ममस्टर मफी—ममहलाओं के बीच जा खड़े हुए थे। ममसेज़ ज्ाफ्रे वहााँ कोई मकस्सा सुना रही थी, मजससे सब लोग एक ठहाके में फ्ूि पडऩे की तैयारी में थे।

"हेड तुमसे बात करना चाहते हैं। " बुधवानी ने मफर मेरी तरफ मुडक़र कहा, "तुम्हारा छठा पीररयड आज खाली है न ?"

मैंने मसर महला मर्या।

"तो लंच के बार् हेड के कमरे में उनसे ममल लेना। उन्होंने बुलाया है। वे इस बात से काफी परेशान हैं मक मबना कारर् ही तुमने..."

"कारर् मेरे मलए अपने हैं। तुम जानते हो मबना कारर् ऐसा कर्म कोई नहीं उठाता। "

"कारर् जो भी हों, तुम्हें उन पर हेड से बात कर लेनी चामहए।" वह मेरी कोहनी थामे हुए मुझे मैगजीनों वाली मेज की तरफ ले आया। पाकदर इस बीच मफर कोनेवाले ग्रुप से थोड़ा इधर को हि आया था। मेरी तरफ उसने एक बार हि से आाँख भी र्बा र्ी थी, मजसका मतलब था मक यह आर्मी तुम्हें क्या समझ रहा है, मुझे पता है। ममसेज़ ज्ाफ्रे की बात से फ्ूिा ठहाका अचानक ही र्ब गया था, क्योंमक एकाएक सब लोग सचेत हो गये थे मक ्ूिल के अन्दर हाँसी की इतनी ऊाँची आवाज़ ममस्टर व्हिसलर को बर्ा्दश्त नहीं है।

"हेड सचमुच तुमसे तुम्हारी बात जानना और समझना चाहते हैं ," बुधवानी को कमरे में छा गई खामोशी ने कुछ अव्यवव्थथथत कर मर्या। वह जो बात ढककर करना चाहता था, वह इससे नंगी हुई जा रही थी। आगे बात करने के मलए उसने तब तक प्रतीक्षा की जब तक ममसेज़ ज्ाफ्रे ने एक नया मकस्सा छेडक़र मफर लोगों का ध्यान नहीं बााँि मलया। मफर बोला , "यह मैं ही जानता हाँ मक तुम्हारी तरफ हेड का रुख हमेशा मकसी हमर्र्ी का रहा है। वे तुम्हारी कद्र भी बहुत करते हैं। सो तुम्हारे मन में जो भी बात हो , तुम खुलकर उनसे कर सकते हो।"

तभी बॉनी हाल मथरकती हुई हम लोगों के पास आ गयी, "मेरे आफ डे का क्या हुआ?" उसने बुधवानी से पूछा।

"मैंने हेड से बात कर ली है।" बुधवानी कोमल अमभवार्न के साथ बोला, "इस सप्ताह से छुमियााँ होने तक हर शमनवार तुम्हें खाली ममल जाएगा। तुम यही चाहती थीं न?"

“ओह फाइन, फाइन!” बॉनी अपनी एड़ी पर घूमकर वापस लौ गयी, “इस उपकार के बर्ले में मैं एक शमनवार को तुम्हारे साथ डि रखूँगी।”

“हर शमनवार को नहीं ?”

“हर शमनवार को तुम्हारे साथ ? तुम इतने खूबसूरत नहीं हो।”

“तो मैं हेड से कहूँगा मक... ”

“शि अप! मैं एक भी शमनवार को तुम्हारे साथ डि नहीं रखूँगी।”

बुधवानी के जबड़े उतनी ◌ेर् ढीले रहने के बार् मेरी तरफ ◌ेर्खकर मफर कस गये , “तुम्हारा कागज़ पढक़र हेड को बुरा नहीं लगा, यह मैं नहीं कहता।” वह मुझसे बोला, “तुम्हें पता ही है इन सब मामलों में उनका रवैया क्या रहता है। तुम्हारी जगह और आर्मी होता , तो वे उसे बुलाकर हरमगज़ बात न करते। चुपचाप उस कागज़ पर र्स्तख़त करके मुझसे उसका महसाब करने को कह ◌ेर्ते। पर तुम्हारे साथ वे बात करना चाहते हैं , इसी से तुम सोच सकते हो मक तुम्हारे मलए उनके मन में क्या एहसानात हैं। तुम उन लोगों में से नहीं हो मजनके चले जाने से उन्हें लगे मक मकसी चीज़ को कोई फ़क़द नहीं पड़ता , बल्कि वे तो सोच रहे थे मक...।”

अब मगरधारीलाल पास आ गया, “वह वाउचर अभी बनाना है या...?” उसने पूछा।

“तुमसे कहा था ि◌ ब्रेक के बार् तुम्हें बताऊँगा।” बुधवानी मचढे हुए स्वर में बोला, “मैं यहाँ से सीधा फ्तर में ही आऊँगा।”

मगरधारीलाल इस स्वर से कुछ घबरा गया और एक रोनी-सी मुिराहि ◌ेर्नों की तरफ मुिराकर कामन रूप से बाहर चला गया।

“...वे तो बल्कि सोच रहे थे। ” बुधवानी ने बात आगे जारी रखी, “मक सीमनयर महन्दी मास्टर की जो जगह खाली है , उसके मलए तुम्हारा नाम बोडद के सामने रखें। तुम एक ◌ेर्ास्त के नाते मेरी राय लेना चाहो, तो मैं तुमसे कहूँगा मक तुम्हें उनसे काफी साँभालकर बात करनी चामहए। तुमने जो कर्म उठाया है , इसे तुम अपनी बेहतरी के मलए भी इस्तेमाल कर सकते हो। मनभदर इस पर करता है मक तुम सारी चीज़ को मकस तरह हैंडल करते हो। तुम कहो, तो लंच से पहले मैं भी हेड से थोड़ी बात कर लूँगा। वे सुनने के मूड में इसमलए होंगे मक आज तक यहाँ मकसी ने अपनी तरफ से ऐसा नहीं मकया। तुम पहले आर्मी हो मजसने... ”

“ओफ! ” ममसेज़ पाकदर की ऊाँची आवाज़ ने उसे बीच में रोक मर्या। वह गर्दन पर काफी ज़ोर ्रेकर लगभग मेरे कान में बात कर रहा था। अब अपने को अलगाने के मलए वह थोड़ा पीछे हि गया। ममसेज़ पाकदर की ‘ओफ’ से कमरे के और लोग भी चौंक गये थे। हि वकफे के बार् सबके होंठों पर मुिराहि आ गयी। डायना और बॉनी हाल तो मुाँह पर हाथ रखे हाँस भी ्रीं। ममसेज़ पाकदर मबना अपनी ‘ओफ’ के प्रभाव को जाने अब भी अपनी जगह व्यस्त थी। हाथ की कापी पर वह गुस्से में पूरे-पूरे सफे के िास खींच रही थी। “हॉरीबल! हॉरीबल!” साथ वह कहती जा रही थी, “ऐसे-ऐसे स्पेमलंग हैं मक पढक़र आर्मी के होश-हवास गुम हो जाएाँ।” मफर आाँखें उठाकर आसपास के लोगों को ्रेखते हुए उसने कहा , “मैं कई बार सोचती हाँ मक यह सब पढ-पढक़र मैं अब तक पागल क्यों नहीं हो गयी ? मुझे पागल ज़रूर हो जाना चामहए था। ओफ!”

सारे कमरे में कोई मकसी से बात नहीं कर रहा था। अकेला पाकदर ही था जो कोहली से चल रही अपनी बात आगे जारी रखने की कोमशश में था। “वह तब ऊपर से घूमकर सामने चला आया है? सामने से उसने जो उसे पिखनी ्री, तो बस!”

पर कोहली का ध्यान भी ममसेज़ पाकदर की तरफ ही था—और इस बात की तरफ मक पूरे कमरे की खामोशी में उसकी—‘हाँ-हााँ’ सबको सुनाई ्रे् रही है। पाकदर भी यह ्रेख रहा था, मफर भी वह बोलने से रुका नहीं , “एक और कुश्ती मैंने ्रेखी थी जब मैं बेगमाबार् में था। उस कुश्ती की खामसयत यह थी मक... ”

ममसेज़ पाकदर कामपयााँ परे हिाकर कुसी से उठ खड़ी हुई थी। हमेशा थके रहनेवाले अपने भारी शरीर को मकसी तरह धकेलती हुई वह चाय की मेज़ की तरफ जा रही थी। यहााँ यह ्रेखकर मक चाय्रानी में चाय नहीं है , वह ऐसे हो गयी जैसे उसे बेकार ही उतनी ्रूर तक आने ्रेकर सब लोगों ने उसके साथ ज़्यार्ती की हो। मफर एक पैर बाकर अपनी मघसिती चाल से वह पैंिरी के र्वाज़े तक जा पहुाँची। वहााँ से उसने आवाज़ ्री , “शेरमसंह! मुझे चाय की एक प्याली बनाकर ला ्रो , प्लीज़! घंिी का वि हो गया है, ज़रा जल्दी से। चीनी मत डालना? तुम्हें पता ही है मैं चीनी नहीं लेती। ” मफर पैंिरी से अपनी कामपयों के ढेर के पास वापस आकर वह मनढाल-सी बैठ गयी—जैसे मक एक ख़ामख़ाह के सफर पर मनकलने के बार् आधे रास्ते से उसे अपने डेरे पर लौिना पड़ा हो। “सब काम जान लेने वाले होते हैं। ” वह हााँफती हुई बोली, “पर यह काम तो सबसे ज़्या्रा जानलेवा है। पता नहीं इस सबका अन्त मकस मर्न होगा? मेरे शरीर में प्रार् रहते तो शायर् होगा नहीं।”

उसने एक नई कॉपी जाँचने के मलए सामने रख ली, तो बुधवानी वहााँ से चलने की तैयारी में अपने कालर को मसलता हुआ पहले से भी आमहस्ता स्वर में मुझसे बोला, “यार् रखना। छठे पीररयड में, हेड के कमरे में। अब तक मसवा फ्तर के लोगों के मकसी को पता नहीं है। फ्तर के लोगों से भी ऐसे ही बात हो गयी थी...यूाँ उन्हें भी हेड ने मना कर मर्या है। एक बार हेड से तुम्हारी बात हो जाए, तो मफर जैसे हो ◌ेर्ख लेना...ओ.के.?” और चलते हुए मेरा हाथ काफी घमनष्ठता से र्बाकर वह एक बार मफर मुिरा मर्या।

शेरमसंह ने जैसे ममसेज़ पाकदर की असुमवधा बढाने के मलए ठीक उस वि उसे चाय की प्याली लाकर ◌ी्र जब ि◌ी ब्रेक समाप्त होने की घंि◌ी बज रही थी। तब तक आधे लोग कामन रूम से जा चुके थे। बाकी अपने-अपने गाउन साँभालकर जा रहे थे। ममसेज़ पाकदर प्याली हाथ में लेते ही कुढ गयी। “◌ेर्खो, कैसी प्याली लाकर ◌ी्र है इसने मुझे! ” वह जाते लोगों को सुनाकर बोली, “ऊपर से नीचे तक गीली! बताओ, कौन इन्सान ऐसी प्याली में चाय पी सकता है ?” पर प्याली उसने लौिाई नहीं। एक नज़र अपने पमत पर डालकर जल्दी-जल्दी चुव्कियााँ भरने लगी। मफर चाय की गमी अन्दर पहुाँचने से पल-भर आाँखें मूाँ◌ेर् रही। वह जब भी ऐसा करती थी , तो उसका थलथल गोल चेहरा ऐसे लगता था जैसे चमड़े के मघसे हुए थैले पर ◌ो्र बन्द व्हक्लपें लगी हों। अगली चुिी भरने के मलए उसने आाँखें खोलीं , तो पाकदर को र्रवाज़े की तरफ बढते ◌ेर्खकर उसकी बड़बड़ाहि मफर शुरू हो गयी, “कौन समझाए इन्हें मक प्याली में चाय डालने से पहले एक बार उसे अच्छी तरह पोंछ लेना चामहए? पााँच-पााँच साल हो जाते हैं इन्हें यहााँ काम करते, मफर भी ज़रा-सी बात इनकी समझ में नहीं आती। मैं तो कहती हाँ, इन्हें कुछ भी मसखाने का कुछ मतलब ही नहीं है। ये लोग कभी सीख ही नहीं सकते। यहााँ के लडक़ों को कभी स्पेमलंग नहीं आ सकते और यहााँ के नौकरों को... ”

“तुम्हारी क्लास नहीं है ? घंि◌ी बज चुकी है।” पाकदर ने उसके पास रुककर कुछ तुशद आवाज़ में कहा। ममसेज़ पाकदर की ◌ो्रनों व्हक्लपें कस गयीं। पर इससे पहले मक वह जवाब में कुछ कहे, पाकदर मेरे पास आ गया। “की गल्ल ए जी ?” वह महं◌ुर्स्तानी मास्टरों से ममत्रता बढाने के अपने खास लहज़े में बोला, “ए की पुआड़ा पा मर्त्ता जे अज्ज?” फौज में कई साल रहने के कारर् पाकदर महन्दी और पंजाबी ◌ो्रनों गुज़ारे लायक बोल लेता था। इस वजह से वह महं◌ुर्स्तानी मास्टरों में काफी लोकमप्रय था, हालााँमक इसी वजह से लोग उससे कतराते थे क्योंमक ि◌ूल में कौन क्या कहता-करता है , इसकी ज़्या◌ा्रतर ररपोिें पाकदर ही हेडमास्टर के पास पहुाँचाता था।

“तुम्हें फ्तर में काम नहीं है ? तुम्हारे मलए घंि◌ी नहीं बजी?” ममसेज़

पाकदर ने प्याली रखते हुए उसे जवाब ◌र्् मर्या। पाकदर इस तरह हाँसकर जैसे मक वह इस चिो की आशा ही कर रहा था , बाहर को चलता हुआ मुझसे बोला, “तुमसे मुझे कुछ बात करनी है। लंच ब्रेक से पहले या बार्् में जब भी वि ममला, ◌र्ेखेंगे।” मफर जल्दी-जल्दी से ममसेज़ पाकदर से कहकर , “तुम्हारी क्लास रो रही है उधर,” वह जूता चरमराता बराम◌र्् में पहुाँच गया।

पाकदर ने अव्न्तम बात उसे नहीं कहने ◌र्ी, इसमलए ममसेज़ पाकदर हताश भाव से उसे पीछे से ◌र्ेखती रही। तब तक कामन रूम में उसके और मेरे मसवा और कोई नहीं रह गया था।

“◌र्ेखो, यह आर्मी है।” उसने आाँखें झपकाते हुए मुझसे कहा—जैसे मुझसे मकसी चोर की शनाख्त करा रही हो।

मैं मसर महलाकर मुिरा मर्या।

“मैं मकतना कुछ बर◌र्ाश्त करती हाँ यहााँ।” वह मनढाल हाथों से अपनी कामपयााँ समेिती बोली, “पर अब मुझसे बर◌र्ाश्त नहीं होता। मैं अब जल्द-अज-जल्द यहााँ से वापस चली जाना चाहती हाँ।”

“वापस? तुम्हारा मतलब है मक...?”

“बैक होम। मेरा असली घर लन्दन में है। तुम्हें पता नहीं ?”

वह मकतनी ही बार यह बात कहती थी। पर हर बार हर एक उससे यही कहता था, “अच्छा? मुझे पता नहीं था।”

“मेरी ◌र्ा◌र्ी वहााँ पर है। यहााँ तो मेरी मसफद एक ही पुश्त बीती है। मेरी मााँ एक मसमवल सवेंि से शा◌र्ी करके यहााँ चली आयी थी।” वह मसमवल सवेंि क्या और कौन था, इस पर ममसेज़ पाकदर कभी रोशनी नहीं डालती थी। “मेरी ◌र्ा◌र्ी मुझे मकतनी बार मलख चुकी है मक वह मुझे वीज़ा भेज ◌र्ेगी, मैं जब चाहाँ वहााँ चली जाऊाँ। मैं तो इसी साल चली जाना चाहती थी , पर...।” और मकसी तरह कामपयों के साथ अपने को साँभाले वह उठ खड़ी हुई। “पर यह आर्मी ऐसा है मक मेरी बात ही नहीं सुनता। इसे जाने क्यों यहीं पड़े रहना पसन्द है! इसकी वजह से मैं भी यहााँ पड़ी हाँ...अपनी लडक़ी को हालााँमक मैंने मपछले साल भेज मर्या है। वहााँ रहकर उसका कुछ बन भी जाएगा, यहााँ पर उसका क्या बनना था? मेरी तरह मज़न्दगी-भर मकसी ि◌ूल में कामपयााँ जााँचती रहती और शा◌र्ी भी मकसी ढंग के आर्मी के साथ न कर पाती।...मैं इस आर्मी से कई बार पूछती हाँ मक यहााँ हम लोगों का अब क्या भमवष्य है ? यहााँ आये मर्न मजस

तरह की बातें सुनने को ममलती रहती हैं, उससे तुम्हें लगता है मक यह ि्ूल साल-ोर्ो साल से ज़्याोर्ा चल जाएगा? मुझे तो ज़रा नहीं लगता।”

“बातें तो सब तरह की लोग करते रहते हैं , उससे क्या होता है?” मैंने कहा, “सत्तर साल पुराना ि्ूल है।”

“मफर भी... ,” वह पैर घसीीती मेरे पास आ गयी, “तुम शायर्् बेहतर जानते हो, क्योंमक तुम...अच्छा बताओ, वह बात ठीक है जो चाली ने िी ब्रेक से पहले मुझे बतायी है ?”

“कौन-सी बात ?”

ममसेज़ पाकदर पल भर सन्देह की नज़र से मुझे ोर्ेखती रही। मफर अपने मन से बोझ उतार फेंकने की तरह बोली , “तुमने ि्ूल से त्यागपत्र ोर्े मर्या है ?”

मैंने आाँखें महलाकर एक मैगज़ीन उठा ली।

“मफर भी तुम कहते हो मक यहााँ कुछ होनेवाला नहीं है ?”

“क्यों? एक आर्मी के त्यागपत्र ोर्े ोर्ेने से...?”

“इतने मासूम मत बनो। कम से कम मुझे तो तुम बता ही सकते हो। तुम्हें पता है , मैं यहााँ मकसी चीज़ के लेने-ोर्ेने में नहीं हाँ। ”

“मेरे पास बताने को कुछ हो तब न! ”

“तुमने इसमलए त्यागपत्र नहीं मर्या मक... ?”

“मकसमलए?”

“इसमलए मक... ?” ममसेज़ पाकदर ऐसे स्वर में बोली जैसे मक त्यागपत्र ोर्ेकर मैंने खास उसी के साथ कुछ बुराई की हो। “अच्छा, रहने ोर्ो। नहीं तो चाली बार्् में मेरी जान खाएगा।”

“मेरा ख्याल है अपने त्यागपत्र की असली वजह का मसफद मुझे पता नहीं है।”

“तुम्हें मकस चीज़ का पता नहीं है ?” ममसेज़ पाकदर अभी बात करने के मलए रुकना चाहती थी, पर अपनी क्लास की वजह से उसे जाने की उतावली भी हो रही थी , “मेरा ख्याल है यहााँ सबसे होमशयार आर्मी एक

तुम्हीं हो।”

“सचमुच?”

“नहीं हो क्या ?”

“कह नहीं सकता। मेरा तो ख्याल था मक...।”

“मैं चाली से मकतनी बार कह चुकी हाँ मक तुम बाहर से मजतने चुप रहते हो , अन्दर से उतने ही...उतने ही तेज़ आर्मी हो।” ‘तेज़ आर्मी’ की जगह वह कुछ और कहना चाहती थी, पर आव्खरी क्षर् कुछ सोचकर उसने शब्द बर्ल मर्या था।

“मुझे आशा है मक यह बात मेरी प्रशंसा में कही जा रही है! ” मैंने मफर मुिरा मर्या। ममसेज़ पाकदर आश्वस्त हो गयीं मक जो नश्तर उसने बचा मलया था, उसका अन्दाज़ा मुझे नहीं हुआ।

“और नहीं तो क्या?” वह आँखों में बीतते समय का र्बाव मलये बाहर को चल ्री, “तुम्हारी इस वि क्लास नहीं है ?”

मैंने मसर महला मर्या, “सोमवार को मेरे ्रो पीररयड खाली होते हैं—चौथा और छठा। मसफद सोमवार को ही।”

“तभी तुम इतने आराम से खड़े बात कर रहे हो।” वह पहले से ज़्या्रा हड़बड़ा गयी, “खुशमकस्मत आर्मी हो तुम जो तुम्हें मकसी एक मर्न तो ्रो पीररयड खाली ममल जाते हैं। मेरे मकसी भी मर्न ्रो पीररयड खाली नहीं होते। मेरा ख्याल है , यहाँ सबसे खराब िाइम िेबल मेरा है। मैं मकसी से कुछ कहती नहीं , इसमलए जैसा चाहते हैं रख ्रेते हैं। मैं भी कहती हाँ चलो, मुझे कौन मज़न्दगी-भर यहाँ पड़ी रहना है।”

पर चौखि लाँघने के बार् वह मफर एक बार अन्दर लौि आयी, “तुम मकसी मर्न हमारे यहाँ चाय पीने क्यों नहीं आते?” उसने कहा।

“तुमने आज तक कभी बुलाया ही नहीं।”

“आज तक की बात छोड़ो। तुम आज या कल मकसी वि आ सकते हो...मतलब शाम को मकसी वि।”

“हाँ-हाँ...क्यों नहीं ? मुझे बहुत खुशी होगी?”

“तो मैं चाली से कहाँगी, तुमसे तय कर ले। मैं अपने हाथ की बनी पाई तुम्हें

व्हखलाऊँगी—अगर पाई तुम्हें पसन्द हो तो।"

"पसन्द क्यों नहीं होगी? खासतौर से तुम्हारे हाथ की बनी पाई...।"

"मैं चाली से कहूँगी तुमसे तय कर ले। कल का या परसों का। कुछ ेर्र बैठकर बातें करेंगे।"

ममसेज़ पाकदर के जाने के बार् मैं अकेले कामन रूम में इस तरह खड़ा रहा जैसे मक एक भीड़ से मनकलकर वहााँ आया होऊाँ। यहााँ-वहााँ मतपाइयों पर पड़ी जूठी प्यामलयााँ, सोफे के कवर पर ममहलाओं के बैठने की सलवें। अन्दर की उेर्ास ठंडक उस एकान्त में मुझे और गहरी महसूस होने लगी। मैंने मन ही मन मर्न मगने। छुमियााँ होने में पूरे चार हफ्ते थे। मेरा नोमिस पीररयड छुमियों में ही पूरा हो जाना था, इसमलए लौकर एक मर्न के मलए भी वहााँ आने की ज़रूरत नहीं थी। मैं कुछ ेर्र इस नज़र से कमरे को ेर्खता रहा जैसे मक मैं अभी से वहााँ से जा चुका हाँ। वह कमरा अगले साल के मकसी उतने ही ठंडे मर्न में उसी तरह उेर्ास पड़ा है , लोग वहााँ से चाय पीकर अपनी-अपनी क्लासों में गये हैं और मकसी को यह यार् भी नहीं है मक मपछले साल सक्सेना नाम का कोई आर्मी यहााँ काम करता था, या मक आज के मर्न उसके त्यागपत्र को लेकर लोगों ने यहााँ थोड़ी हलचल महसूस की थी। नई िमद से स्टाफ में कुछ नए लोग आ गये हैं जो नए मसरे से अपने को यहााँ के वातावरर् में ढकने की कोमशश में हैं। मकसी मसलमसले में जब उनमें से मकसी के कान में सक्सेना का नाम पड़ता है , तो वह यूाँ ही चलते ढंग से पूछ लेता है , "सक्सेना? वह कौन था?"

मफर मैं सोचने लगा मक अगले साल इन मर्नों में कहााँ रहाँगा, क्या कर रहा हाँगा। साल के बारह महीनों में से कुछ महीने तो यहााँ से ममली तनख्वाह से मनकल जाएाँगे—उसके बार् के महीने? तब यह सोचकर मन को थोड़ा आश्वासन ममला मक अभी मेरा त्यागपत्र मंजूर नहीं हुआ, अभी उस बारे में मुझसे बात की जानी है—मैं चाहाँ, तो त्यागपत्र वापस भी ले सकता हाँ और अगले साल आज के मर्न अपने को यहीं , इसी तरह, खड़ा पा सकता हाँ।

"मैंने त्यागपत्र क्यों मर्या है ?" यह सवाल मेरे अन्दर से भी कोई बुधवानी या पाकदर मुझसे पूछ रहा था, लेमकन उसे भी जवाब ेर्ना मैं उसी तरह िाल रहा था। 'मुझे इस बारे में सोचना नहीं चामहए,' मैंने अपने से कहा। मुझे डर लग रहा था मक ममस्टर व्हिसलर के पास जाने तक मेरा मनिय कहीं ढीला न जाए।

"क्या सोच रहे हो ?" मुझे पता नहीं चला था मक मगरधारीलाल कब मपछले र्रवाज़े से बे पैरों अन्दर चला आया था। चेचक के र्ागों से लेर् अपने सााँवले चेहरे पर सहानुभूमत का भाव मलये वह उस कुसी के पास आ

गया था मजससे ममसेज़ पाकदर उठकर गयी थी।

“सोचना क्या है ?” मैंने थोड़ा चौंककर कहा, “ऐसे ही खाली वि मबता रहा हाँ।”

“आज बुधवानी ने बचा मर्या।” वह बोला, “नहीं , हेड ने तो काम कर ही मर्या था।” वह सतकद आँखों से आसपास ◌े्खता मेरे नज़◌ी्क आ गया।

“क्या मतलब?”

“उसने तो त्यागपत्र का कागज़ पढते ही सीधे मुझे बुला मलया था। मुझसे बोला मक मैं तुम्हारे पूरे महसाब का वाउचर बना ◌ूाँ—आज शाम को ही आपसे चले जाने को कह मर्या जाएगा। मैंने बाहर आकर बुधवानी को बताया, तो इसने अन्दर जाकर उसे जाने क्या समझा-बुझा मर्या। वाउचर रोके रहने के मलए अभी मुझसे बुधवानी ने ही कहा है , हेडमास्टर ने खुर् नहीं, बुधवानी ने बताया है मक लंच के बार् तुम हेडमास्टर से ममल रहे हो। मैंने सोचा मक मुझे इस बारे में तुम्हें बता तो ◌े्ना ही चामहए। एक घर में रहते हैं , इसमलए इतना तो फज़द मेरा बनता ही है।”

“बता ◌े्ने के मलए शुमिया। ” मैंने कहा, “हेडमास्टर से ममलने की बात मेरी तरफ से नहीं है। मुझसे बुधवानी ने कहा है मक हेड मुझसे बात करना चाहते हैं। ”

“बुधवानी अच्छा आर्मी है। ” मगरधारीलाल थोड़ा और सतकद हो गया, “मैं पहले उसे मजतना अच्छा समझता था, उससे भी अच्छा है।”

“लेमकन मुझे हेड से कुछ खास बात नहीं करनी है...।”

“बात तुम्हें ज़रूर करनी चामहए, क्योंमक हेडमास्टर का ख्याल है मक...।”

मैं आगे बात सुनने की प्रतीक्षा में उसे ◌े्खता रहा। मगरधारीलाल की सतकदता में अब एक डर भी आ समाया—मक मेरा महत चाहने में कहीं वह अपने महत की क्षमत तो नहीं कर रहा। पर मकसी तरह अपने डर पर काबू पाकर उसने इतने धीमे स्वर में मक हम लोगों से एक गज़ ◌ूर भी सुनाई न ◌े् , कहा, “उसका ख्याल है मक इसके पीछे चेरी की कुछ सामज़श है। चेरी अभी कल-परसों ही डी.पी.आई. से ममलकर आया है। ◌ो्-चार मर्नों में मकसी मर्न डी.पी.आई. के यहााँ आने की भी बात है।”

चेरी पर हेडमास्टर ने कुछ अमभयोग लगा रखे हैं , यह बात कामन रूम में ही मकसी से सुनी थी। यह भी सुना था मक चेरी ने उन अमभयोगों के उत्तर में

हेडमास्टर तथा डी.पी.आई. को एक लम्बा खरड़ा मलखकर मर्या है। मेरे त्यागपत्र का उसके साथ सम्बन्ध जोड़ा जा रहा है , इससे मुझे थोड़ा गुस्सा हो आया, “मुझे इस चीज़ से कोई मतलब नहीं मक हेडमास्टर मेरे त्यागपत्र को लेकर क्या सोचता है। ” मैंने कहा, “मेरे त्यागपत्र के कारर् मबिुल व्यक्तिगत हैं।”

“यही मैंने भी ममस्टर व्हिसलर से कहा था मक कोई ऐसी-वैसी बात होती, तो घर में साथ रहते कभी तो मज़ि आता। उसने मुझसे पूछा था मक त्यागपत्र ेर्ने से पहले तुमने मकसी को कुछ बताया तो नहीं। मैंने कहा मक कल शाम को तो हमारी मुलाकात नहीं हुई, पर परसों और परले रोज़ हमारी घर पर बात हुई है—उसमें मज़ि तक नहीं आया ऐसा मकसी चीज़ का। ”

“कल रात तक मैंने खुर् नहीं सोचा था मक मैं त्यागपत्र ेर् ेर्ूँगा।”

“तो मफर एकाएक कैसे...?”

“बस तय कर ही मलया कल रात। मेरा मन नहीं लगता था यहााँ। ”

‘था’ में जो अतीत की ध्वमन थी, उसने मफर मुझे अन्दर कहीं पर खरोंच मर्या।

“अकेले में मन लग सकना मुव्हिल तो है ही। मैंने पहले भी कहा था ेर्ो-एक बार मक शोभा बहन को वहााँ से बुला लो। मकतने मर्न रहेंगी वे अपने मपता के यहााँ ?”

यह शोभा जाते हुए उन लोगों से कह गयी थी मक वह जालन्धर जा रही है , अपने मपता के पास। उसके जाने के बार् से मैं भी उस झूठ को मनभा रहा था।

“अकेलेपन का मन न लगने से कोई ताल्लुक नहीं था।” मैंने कहा।

“जो भी बात हो, ममस्टर व्हिसलर को यह नहीं लगना चामहए मक...।”

“ममस्टर व्हिसलर को क्या लगता है , इसकी मैं मचन्ता नहीं करना चाहता।”

मगरधारीलाल का चेहरा मुरझा गया। वह मुझसे इतने रूखे स्वर की आशा नहीं करता था। वह पल-भर मसकुड़ा-सा मुझे ेर्खता रहा, “ेर्ख लो। अब यह तुम पर है।”

“अब ही क्यों, पहले भी मुझी पर था।” मुझे खुर् लग रहा था मक मैं बेचारे

मगरधारीलाल से इस तरह क्यों बात कर रहा हाँ ? उससे मुझे मकस चीज़ की मचढ थी?

“खैर, मेरा फज़द था मक मैं इस बारे में तुमको आगाह कर ़्रूँ। हेडमास्टर की त्योरी सुबह से चढी हुई है। वह ग्यारह बजे की चाय पीने घर पर नहीं गया। ममसेज़ व्हिसलर ने इसे बुला भेजा, क्योंमक उन्हें इससे कुछ बात करनी थी। पर इसने कहला मर्या मक इस वि फुरसत नहीं है —शाम को ही घर आएगा।”

“आगाह कर ़्रेने के मलए शुमिया!” मैंने बात समाप्त करने के मलए कहा और पमत्रका में आँखें गड़ा लीं।

मगरधारीलाल मफर भी रुका रहा, “कोई गलत बात कही गयी हो, तो माफ कर ़्रेना।” वह मुझे ठीक से न समझ पाने के असमंजस में बोला, “मेरा मतलब मसफद इतना ही था मक...”

“मुझे पता है तुम्हारा मतलब मेरा भला चाहना ही है।” मैंने उसका कन्धा थपथपा मर्या, “मैं बार् ़्रोपहर हेडमास्टर से बात कर लूँ, तो मफर...”

“जो भी बात हो बताना। शाम को घर पर ममलेंगे। ” कहकर वह बेबस सद्भावना के साथ मुिराया और बें पैरों वहाँ से चला गया।

मैं मैगज़ीन हाथ में मलये व्हखडक़ी के पास आ गया। बाहर घास पर हिंी-हिंी सफेर् चकमत्तयाँ पड़ गयी थीं। बरफ मगरने लगी थी। ‘इस तरह यहाँ खड़ा होकर क्या मफर भी मैं बरफ मगरती ़्रेखूँगा?’ मैंने सोचा और व्हखडक़ी की मसल पर बैठ गया।

2-सहयोगी

रात को व्हस्टवडद चाल्ररिन की किोज के बाहरी कमरे में हम तीन आर्मी बैठे थे...चाल्ररिन, लैरी जो और मैं। व्हखड़मकयाँ-र्वाज़े सब बन्द करके बुखारी में आग जला ़्री गयी थी मजससे कमरा काफी गरम था। मफर भी मैं चाह रहा था मक बाहर की हवा के मलए कहीं कोई र्रार छोड़ ़्री गयी होती, क्योंमक चेरी ने मसगार फूँक-फूँककर इतना धुआँ कमरे में भर मर्या था मक अपने समेत सब कुछ उस कसैली गन्ध में घुिा-घुिा लग रहा था।

“ेर्खो, वह कुमतया अब तक नहीं आयी।” चेरी ने राख का मिोा-सा लोंेर्ा ऐश-िरे में झाड़ते हुए कहा और अपनी ेर्ोहरी ठोड़ी छाती पर झुकाए मफर से कश खींचने लगा। लैरी आाँखें मूाँर्कर बााँहें मसर पर रखे गम्भीर भाव से कुछ सोच रहा था। उसने उसी मुद्रा में अपने होंठ मवतृष्णा से महला मर्ये। मैं प्लेि से सींक-कबाब का एक िुकड़ा उठाकर धीरे-धीरे चबाने लगा।

शाम को लैरी ने मुझसे अपने यहााँ आने को कहा था, तो मुझे इस पूरे आयोजन का पता नहीं था। िूल से चलते समय उसने कुछ उसी तरह मुझे रात को अपने यहााँ पीने आने की ेर्ावत ेर्ी थी जैसे पहले मर्या करता था...हर महीने की पहली के आसपास। इस बार इतना अन्तर ज़रूर था मक पहली तारीख बहुत पीछे छूि चुकी थी। मैंने सोचा था मक इस बार भी वह हमेशा की तरह मद्रास के मर्नों के अपने प्रेम-सम्बन्धों की चचाद करेगा, पर उसके यहााँ पहुाँचने पर पता चला मक कायदिम चेरी के क्वािदर में है। “मैंने िूल में तुमसे मज़ि करना उमचत नहीं समझा।” उसने कहा, “मकसी के कान में बात पड़ जाती, तो तुम्हारे मलए खामखाह की परेशानी हो जाती। चेरी चाहता है मक तुम्हारे त्यागपत्र को लेकर जो नयी व्स्थथमत पैेर्ा हो गयी है , उस पर हम लोग आपस में बात कर लें। वह खुर् तुमसे कहना चाहता था, पर मैंने ही उसे मना मकया था मक वह बात न करे, मैं तुम्हें अपने यहााँ बुलाकर साथ लेता आऊाँगा। तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं ?”

मुझे एतराज़ था, पर उस वि उस एतराज़ की बात करना बेमानी था। मैं चुपचाप उसके साथ चेरी के क्वािदर में चला आया था। वह क्वािदर एक पहाड़ी की ऊाँचाई पर मबिुल अलग-थलग बना था, इसमलए चेरी उसे क्वािदर न कहकर अपना कॉिेज कहा करता था। उस क्वािदर की तरफ जाते व्यव्ियों को नीचे िूल की सडक़ से ेर्खा जा सकता था, इसमलए अाँधेरा होने के बावजूर् मेरी आाँखें बार-बार उस तरफ मुड़ जाती थीं। बरफानी हवा और पगडंडी की बरफ-ममली ममिी से ज़्याेर्ा मैं उस तरफ़ की आहिों के प्रमत सचेत था। मुझे लग रहा था मक ेर्ोपहर को िोनी व्हिसलर की मजस बात से मुझे गुस्सा आया था, उसे कुछ ही घंिे बार् चेरी के क्वािदर में जाकर मैं एक तरह से सच सामबत कर रहा हाँ। आसपास की झामडय़ों और ढलान पर उगे पेड़ों के बीच से कुछ साये जैसे मुझे उस पहाड़ी पर ऊपर जाते ेर्ख रहे थे और मैं कोि का कालर ऊाँचा मकये अपने को उन द्वारा पहचाने जाने से बचा लेना चाहता था। लैरी मुझसे आगे-आगे चल रहा था , इसमलए भी मैं अपने को उस रास्ते पर काफी अनढका-सा महसूस कर रहा था। पर लैरी को इसका कुछ एहसास नहीं था। वह इतना ही जानता था मक मैंने चुपचाप मुिराकर उसका प्रस्ताव स्वीकार कर मलया था।

चेरी के क्वािदर में पहुाँचने पर पता चला मक लारा वहााँ नहीं है। “उसकी मााँ की तबीयत ठीक नहीं थी, वह उसे ेर्खने के मलए गयी है।” चेरी ने

कमरे में ाद्खिल होते ही बताया, “उसने कहा था मक मैं उसकी ओर से तुमसे क्षमा माँग लूँ।” मगर यह बात सच नहीं थी। वहाँ आने के थोड़ी ही ेर् बार् मुझ पर स्पष्ट हो गया मक चेरी ने जान-बूझकर उसे वहाँ से भेज मर्या है। िूल में यह बात प्राय: सुनी जाती थी मक शाद्ी के बार् भी चेरी मकंडरगाडदन की ममसेज़ ाारूवाला से अपना सम्बन्ध बनाए है और मक अब भी लारा घर से जाती है चेरी ममसेज़ ाारूवाला को अपने यहाँ बुला लेता है। उस मर्न भी ममसेज़ ाारूवाला वहाँ मनमद्दित थी , हालाँमक हम लोगों को पहुँचे डेढ घंिा हो गया था और वह अब तक आयी नहीं थी।

बातचीत की शुरुआत लैरी ने की थी। कहा था मक अब मौका आ गया है जब हम लोगों को ममलकर हेडमास्टर के व्खलाफ अपना मोचाद बना लेना चामहए। जब वह पहला पेग पी रहा था, तो उसका ख्याल था मक मैंने त्यागपत्र ेर्कर बहुत साहस का काम मकया है। पर तीसरे पेग के बार् वह मेरा कन्धा महलाता हुआ कहने लगा था मक मैं बहुत डरपोक आर्मी हाँ...अगर मुझमें साहस होता, तो मैं चेरी की तरह डिकर उस आर्मी से लोहा लेता। “त्यागपत्र ेर्ने का क्या है? एक चपरासी भी त्यागपत्र ेर् सकता है। गुरार्ा चामहए लडऩे के मलए। मुझे अफसोस है मक तुम्हारे पास वह गुरार्ा नहीं है।”

लैरी की बातों से मुझे पता चल गया था मक जेम्स ने मेरे त्यागपत्र की बात पूरे िूल में फैला ेर्ी है —यहाँ तक मक शाम की चाय के समय यह बात लडक़ों की ज़बान पर भी थी। लैरी ने कुरेर्-कुरेर्कर मुझसे पूछने की कोमशश की मक मेरे मनर्दय का वास्तमवक कारर् क्या है और मक हेडमास्टर ने इस चीज़ को लेकर मुझसे क्या बात की है। मैं उस कमरे में आने के बार् से ही मन में इतना कुढ गया था मक उसके हर सवाल को मैंने एक मुिराहि के साथ िाल मर्या। संक्षेप में इतना बता ेर्ने के बार् मक मुझे अब इस नौकरी में मर्लचस्पी नहीं रही, उसकी गेंर् को हर बार वापस उसी की तरफ उछाल मर्या। “तुम बताओ, तुम क्या सोचते हो इस बारे में?” लैरी आव्खर थककर और शायर् अपनी ही रि से ऊबकर कुछ ेर्र के मलए खामोश हो गया।

चेरी शुरू से ही खामोश था। मेरा ध्यान बार-बार उसके भारी पेि पर कसे जैकेि की तरफ चला जाता था मजसके बिन बुरी तरह व्खंचे हुए थे। तब तक उसके व्यद्दित्व की जो छाप मेरे मन पर थी, उस समय वह उससे काफी मभन्न लग रहा था। यह वह मुँहफि और बेंग आर्मी नहीं था जो मकचन, पैंिरी और डाइमनंग हाल के इलाके में ूसरे हेडमास्टर की तरह कहता घूमता था, “मुझसे क्या बात करेगा कोई? मुझसे इनमें से मकसी का कुछ मछपा है ?” और मजसके कमरे में हर समय िेलीफोन पर मांस-मच्छी वालों से की जानेवाली इस तरह की बातचीत सुनाई ेर्ती थी, “एक पूरा

बकरा खराब है...यह क्या भेजा है तुमने? ऐसा माँस तो कुत्तों के खाने लायक भी नहीं है , हरामखोर, तुमने समझ क्या रखा है? यह तन्र्ूर है या ढाबा? पता है यहाँ एक-एक लडक़े से महीने का ेर्ो-ेर्ो सौ रुपया मलया जाता है ? उसके बर्ले में मैं उन्हें यह बकरा खाने को र्ूँ? तुम र्ूसरा बकरा जल्दी से भेजो अपने आर्मी के हाथ। वह भी ठीक न हुआ, तो तुम्हारे आर्मी को ही किाकर चढा र्ूँगा आज। और कल मुझे तीन सूअर चामहए। तुम्हारी तरह पले हुए। आ गया समझ में? आ गया मक नहीं ?" इसके अलावा वह राह चलते मकसी के भी कन्धे पर हाथ मारकर कह सकता था , "क्यों पट्ठे, बताओ क्या खाओगे आज शाम को?" और अपेक्षा रखता था मक उसके बनवाए पानी की शक्ल के स्टू से लेकर डंठलों समेत उबली गोभी तक हर चीज़ की उसके सामने प्रशंसा की जाए। प्रशंसा सुनकर उसका चेहरा एक उर्ार मुिराहि से व्खल जाता था। "गोभी कल शाम मैंने तुम्हारे मलए स्पेशल बनवाई थी। मुझे पता है तुम्हें गोभी बहुत पसन्द है।" लोग उससे ज़्यार्ा बात करने से अक्सर बचते थे , पर खास मुव्िल उस समय पड़ती थी जब हेडमास्टर से डााँि खाकर वह अपना गुबार मनकालने के मलए कामन रूम में चला आता था। "पता है आज सूअर के उसने मुझसे क्या कहा है? कहता है , खाना मर्न-ब-मर्न बर्ज़ायका होता जा रहा है ? कोई पूछे इस बन्दर की औलार् से मक खाना यहाँ हेडमास्टर बनने से पहले इसने कभी खाया भी था? वहाँ मद्रास में ममलता क्या था इसे? एसम् और तिम्? डंठल चूसते यहाँ आकर हमड्डयाँ चूसने को ममल गयीं , तो बड़ा जानकार हो गया यह खाने का! जानता नहीं मक हम तो पैर्ा ही मुगे के शोरबे में हुए हैं। बीस साल का त$जुरबा है मेरा इस काम का। मजन मर्नों कलकत्ता के ग्रैंड होिल में मुझे सात सौ तनख्वाह ममलती थी, उन मर्नों इसे तीन सौ भी नहीं ज्ुिते होंगे मास्टरी के। पहला हेडमास्टर चाहे पार्री था, पर उसे तमीज़ थी खाने-पीने की। उसके ज़माने में कभी कोई पािी होती थी यहाँ बगैर ब्रांडी-व्हिस्की के ? पर यह नीरे की औलार्, न खुर् पीता है न र्ूसरों को पीने र्ेता है। बस पािी के बार् भेज र्ेता है अपने बैरे को मक मजतना सामान बचा हो, उठाकर ले आये। सुबह बुला लेता है महसाब चेक करने। मैं कहता हाँ कर ले महसाब चेक, मैं एक-एक पैसे का खचाद मलखकर रखता हाँ अपने पास। तुझे मजस-मजस चीज़ का मबल चामहए, उसका मबल ले ले। कुछ और चामहए तो वह भी ले ले। मुझे क्या पता नहीं मक यह सारी सामज़श मकस चीज़ की है ? यह उसे लगाना चाहता है व्स्टवडद अपनी मर्ाम जाफरी को (ममसेज़ ज्ाफ्रे का चेरीकरर्) मजससे लडक़ों के माँ-बाप का खून चूस-चूसकर ये अपने ग्लैंड्स में भर ले। मैं कहता हाँ मैंने न कर मर्या पंक्चर तुम्हारा एक-एक ग्लैंड तो कहना। मर्खाते मफरोगे एक-र्ूसरे को मक र्ेखो चेरी ने क्या कर मर्या है। इन्हें पता नहीं मक चेरी की पहुँच इनके भी माई-बापों तक है। मैंने एक बार वहाँ जाकर कर र्ी न ररपोिद तो हमड्डयों की गाँठें ढीली हो जाएँगी।"

ज़्या◌्रातर बातें वह काली चमड़ी के ररश्ते से महन्र्◌ुस्तानी मास्टरों के सामने और महन्दी में ही कहता था। एक बार कोहली ने उसे इस तरह खुलेआम बकझक करने से ◌िोक मर्या था, तो पन्द्रह मर्न उसके यहााँ खाना जाता रहा था जो बैरे-चपरामसयों का महस्सा ◌्रे्कर बच जाया करता था। यह बात भी चेरी ने मकसी से मछपा नहीं रखी थी मक वह कोहली को र्ब्र्ूपन की सज़ा ◌्रे् रहा है। “मैं कहता हाँ क्या करेगा वह यह अच्छा खाना खाकर? गुर◌्रे् में जो सत ईसबगोल भरा है , उससे सब मनकल जाता है बाहर। इसमलए कुछ मर्न ऐसा खाना खा ले मजससे इसका सत ईसबगोल थोड़ा कम हो जाए।”

पर उस समय र्व्हिी का आधा मगलास हाथ में मलये अपनी कुसी पर फैला वह एक मार खाये सााँड़ की तरह सााँस ले रहा था। मुझे लग रहा था मक उसने एक बार कुछ लम्बी सााँस खींच ली, तो जैकि का एकाध बिन ज़रूर ि◌ि◌ू जाएगा।

“तो?” लैरी मसर से हाथ हिाकर सीधा हो गया।

“तो क्या ?” मैंने पूछा।

“तुम इस हक में मबिुल नहीं हो मक कल हम तीनों —और अगर ममसेज़ ◌्रारूवाला भी चलने को तैयार हो, तो चारों जाकर डी.पी.आई. से ममल लें? तुम्हें नौकरी छोडऩी ही है, तो इससे तुम्हारा कुछ मबगड़ नहीं जाएगा? मगर ◌्रूसरों का, जो यहााँ रहना चाहते हैं इससे थोड़ा भला हो सकता है। मेरी समझ में नहीं आता मक तुम्हारे मन में डर मकस चीज़ का है। ”

“मेरे मन में डर मकसी चीज़ का नहीं है।” मैंने कहा, “मगर मेरे छोडऩे का कारर् क्योंमक मबिुल व्यव्हिगत है , इसमलए...”

लैरी मवतृष्णा के साथ हाँस मर्या , “मैं समझ गया तुम्हारी बात।”

“मैं नहीं जानता मक तुम क्या समझ गये हो, लेमकन...।”

“मैं मबिुल समझ गया हाँ। मेरा ख्याल है चेरी भी ज़रूर समझ गया होगा। क्यों चेरी , तुम समझ नहीं गये इसकी बात?”

चेरी के गले से जो आवाज़ मनकली , वह ऐसी थी जैसे एक गाली में से व्यंजन मनकालकर केवल स्वर रहने मर्ये गये हों। “मैं पहले ही समझ रहा था।” उसने कहा, “मैंने तुमसे कहा नहीं था मक मामला कुछ ◌्रूसरा ही हो सकता है?”

“इसे पता नहीं है मक उस आर्मी की ममयार् यहााँ खत्म हो चुकी है। ” लैरी अपने मगलास में और व्हिस्की डालने लगा। मफर मेरी तरफ मुडक़र कुछ ऊाँचे स्वर में बोला, “तुम सुन रहे हो न मेरी बात? उस आर्मी की ममयार् यहााँ खत्म हो चुकी है। इसमलए उसकी जी-हुज़ूरी करने से तुम्हें कुछ फायर्ा नहीं होने का।”

मैं अपना मगलास रखकर उठ खड़ा हुआ, “मैं जा रहा हााँ।” मैंने कहा, “मुझे नहीं पता था मक तुम लोगों ने इस सबके मलए मुझे यहााँ बुलाया है।”

लैरी भी साथ ही उठ खड़ा हुआ, “र्ेखो सक्सेना,” वह मेरी बााँह थामकर बोला, “तुम्हें यह बताकर जाना होगा मक तुम हमारे र्ोस्त हो या र्ुश्मन।”

“मैं नहीं जानता।” मैंने बााँह छुड़ाने की कोमशश की। लेमकन उसने बााँह नहीं छोड़ी, “मैं तो समझता था मक...”

“तुम हमारे र्ोस्त हो।” लैरी के हाथ की जकड़ और मज़बूत हो गयी, “र्ोस्त होने के नाते तुम्हारा फज़द है मक तुम हमारा साथ र्ो। तुम हमारा साथ र्ेने से इनकार नहीं कर सकते।”

“र्ेखो, लैरी...”

“तुम बैठकर बात करो। मैं इस तरह तुम्हें यहााँ से नहीं जाने र्े सकता।” उसने मुझे ज़बरर्स्ती मफर कुसी पर मबठा मर्या , “तुम यह तो मानते हो न मक िोनी व्हिसलर को मजतना मैं जानता हााँ, उतना यहााँ तुम लोगों में से कोई नहीं जानता?”

“यह र्ावा वह पहली बार नहीं कर रहा था। कुछ साल पहले वह और िोनी व्हिसलर मद्रास में एक िूल में साथ पढाते थे। उसी आधार पर िोनी उसे यहााँ लाया भी था। पर उसके आने के एक-डेढ महीने के अन्दर ही यह बात र्ोनों पर स्पष्ट हो गयी थी मक मजस रूप में वे पहले एक-र्ूसरे को जानते थे , वह अब र्ोनों में से मकसी का नहीं रहा। मनराशा के कारर् ही लैरी की उन सब लोगों से घमनष्ठता हो गयी थी जो िोनी के मवश्वासपात्र नहीं थे और उनमें भी सबसे ज़्यार्ा चेरी से।

लैरी इसी तरह का सवाल पूछकर जब कुछ क्षर् उत्तर सुनने की प्रतीक्षा में रुका रहता था , तो उसका चेहरा , उभरी हुई आाँखों समेत, प्लास्टर आफ पेररस के एक बुत जैसा लगने लगता था। मफर अपने आप जैसे लोगों की आाँखों से ही उत्तर पाकर , वह प्लास्टर मपघल जाता था, “तो मैं तुम्हें बतला रहा हााँ मक उसके यहााँ रहने का समय अब चुक गया है। मजस तरह यहााँ आकर एकर्म यह इस रुतबे पर पहुाँच गया है , उसी तरह एकर्म अब

इससे नीचे मगरनेवाला है। मैं यह बात पूरे मवश्वास के साथ कह रहा हाँ। तुम्हें मुझ पर ज़रा भी भरोसा है , तो तुम्हें भी इस बात पर पूरा मवश्वास हो जाना चामहए। तुम ◌ेर्ख लेना...इसमें ज़्या◌ा्र वक़्त नहीं लगेगा। मद्रास में तो हम इसे बहुत अक्लमन्द आर्मी भी नहीं समझते थे। सचमुच बहुत मामूली मर्माग का आर्मी माना जाता था इसे। यह तो यहीं आकर इसने अपने मलए इतना ऊपर तक रास्ता बना मलया है। वहाँ होता तो आज भी यह तीसरे और चौथे फामद की क्लासें ले रहा होता। ”

चेरी ठोड़ी ऊँची करके लगातार मसगार के कश खींच रहा था। कुछ ◌ेर्र खाँसने और मुँह में आया बलगम मनगल जाने के बार् वह बोला, “यह तो यहाँ हर आर्मी जानता है मक अगले साल तक यह यहाँ हेडमास्टर नहीं रहेगा। सवाल मसफद इतना है मक इसे हिाने में कामयाब कौन होता है।”

“अगर हम लोग समय से कायदवाही नहीं करते, तो यह मनमित है मक वह स्त्री जो चीज़ चाहती है, वह कर ले जाएगी।” लैरी ने उसकी बात पूरी कर ◌ी्र।

वह मकस स्त्री की बात कर रहा है , यह मुझे पूछने की ज़रूरत नहीं थी। ◌ि◌ूल में जब भी कोई बातचीत में ‘उस स्त्री’ का मज़्ि करता था, तो उसका मतलब ममसेज़ ज्◌ाफ्रे से होता था। ज़्या◌ा्रतर लोगों की आपसी बातचीत का मवषय भी वही रहती थी। इस दृमष्ट से ◌ि◌ूल में सबसे महत्त्वपूर्द व्यक्ि वही थी। रहस्यमय भी, क्योंमक उसके अतीत को लेकर कई तरह की बातें लोगों से सुनने को ममल जाती थीं। एक बात जो सबसे ज़्या◌ा्र प्रचमलत थी, वह यह थी मक मॉली ◌िाउन उसके पमत की सन्तान नहीं है। “मॉली आधी महन्र्◌ुस्तानी है,” कोहली कहा करता था, “जबमक इसका पमत इसकी तरह खामलस अ◌ाँग्रेज़ था। बीस साल यह एक राजकुमारी की गवनेस रही है। उसी ज़माने में सुना है मक...।” लोगों को ममसेज़ ज्◌ाफ्रे का बीस साल पहले का इमतहास कहाँ से मालूम हुआ था, पता नहीं। पर बातें काफी मवस्तार के साथ कही जाती थीं। “यह मजस महाराजा के यहाँ रहती थी, सुना है उसी ने इसके पमत को ज़हर ◌ेर्कर मरवा मर्या था। पामिदयों में ◌ेर्खते हो यह मकतनी कीमती पोशाकें पहनकर आती है ? वे पोशाकें तुम समझते हो इसने अपनी तनखाह से बनवाई हैं ?” इसके अलावा भी कई तरह का ब्यौरा उसके बारे में मर्या जाता था, “पता है वहाँ से इसे मनकाला क्यों गया था? यह मशकार पर जाया करती थी महाराजा के एक ◌ो्रस्त के साथ। एक बार ऐसा हुआ मक... ”

“तुम्हें पता है वह स्त्री क्या खेल खेल रही है यहाँ?” चेरी बोला।

मैंने कन्धे मर्ला मर्ये। मतलब था मक न मैं जानता हाँ , न मेरी जानने में

मर्लचस्पी है।

“वह अपनी जगह इस कोमशश में लगी है मक इसे उखाडक़र इसकी जगह एल्बिद को हेडमास्टर लगवा ◌े्र। ”

“और ◌िनी इतना बेवकूफ आर्मी है मक उसकी इस चाल को समझ ही नहीं रहा। ” लैरी अपना चेहरा मेरे इतने करीब ले आया मक उसकी साँस से बचने के मलए मुझे अपना मसर काफी पीछे हिा लेना पड़ा। मेरी खामोशी उन लोगों को एक तरह का बचाव लग रही थी मजसे वे मकसी तरह तोड़ ◌े्रना चाहते थे।

“वह तो समझता है मक वह स्त्री उसकी खुमफया है जो यहाँ-वहाँ की सब खबरें उस तक पहुँचाती रहती है।”

“एल्बिद और मॉली को भी इस वजह से वह अपने आर्मी समझता है।”

“पर यह स्त्री शतरंज की मबसात पर बड़ी सावधानी से एक-एक चाल चल रही है। ”

“◌े्रखा नहीं मक गोरी चमड़ी वाले के बीच वह अ◌ँग्रेज़ बनकर बात करती है और काली चमड़ी वालों के बीच महन्र्◌ुस्तानी बनकर?”

“यहाँ तक मक बैरों से भी इस तरह बात करती है जैसे मक वे भी इसके बहुत अपने हों —‘मकसने तुमको बुलाया ईर्? मैंने बुलाया? मकसने बोला’—मछनाल कहीं की!”

“तुम बताओ मक जब एल्बिद और मॉली एक बार चले गये थे लन्दन, तो इसने खास कोमशश करके उन्हें यहाँ क्यों बुलाया था?”

“मपछले हेडमास्टर को पता था मक वह मकतनी बर्कार औरत है। तभी न उसने कपड़ों की धुलाई का काम इससे लेकर इसे मकंडरगाडदन की इंचाजद बना मर्या था ?”

“मकंडरगाडदन में यह उस तरह कमीशन नहीं ले सकती न, जैसे धोमबयों से मलया करती थी!”

“◌िूल की आधी चार्रें और प◌े्र उन मर्नों हर साल मसकुड़ जाते थे या गुम हो जाते थे।”

“अगर इसे कमीशन ममल सकता , मकंडरगाडदन के आधे लडक़े भी हर साल गुम हो जाया करते।”

“इसीमलए ि्ल के प◌ऱ्ों को छू-छूकर अब नाक-भौं चढाती रहती है — कैसी धुलाई होने लगी है आजकल यहााँ?”

“बड़ी बनती है सफाईपसन्द! ◌ुमनया-भर की गन्दगी मज़न्दगी भर पि में भरती रही है! ”

“उसे धोने के मलए ही तो पीती रहती है इतनी व्हस्परिर! ”

“और चेरी की जगह पर उसकी आाँख मकसमलए है ? इसमलए न मक…?”

यहााँ पर चेरी ने उसे िोक मर्या, “उसे ममल जाए न इस महकमे का चाजद, तो ◌ऱ्ेख लेना हर महीने का खचद मकतना बढ जाता है। ”

“मेरा मतलब यही था।” लैरी ने जल्दी से अपनी गलती को सुधारा, “उसे हर चीज़ में कमीशन लेने की लत पड़ी है , इसीमलए मैं यह कह रहा हाँ।”

“एल्बिद यहााँ हेडमास्टर हो जाए, इसकी भी कोमशश वह मकसमलए कर रही है? इसमलए नहीं मक अपने ◌ऱ्ामार् से उसे लगाव है ; वह ऐसा हेडमास्टर चाहती है यहााँ मजसके नीचे अपनी मनमानी करने में उसे मकसी तरह की रोक-िोक न रहे।”

“तुम्हारा ख्याल है एल्बिद इसे समझता नहीं है ?”

“एल्बिद अच्छी तरह समझता है। मेरा ख्याल है मजतनी नफ़रत एल्बिद को इससे है , उतनी और मकसी को हो ही नहीं सकती।”

“◌ऱ्ेखा नहीं इसकी पीठ पीछे वह कैसे नाक महलाता रहता है , जैसे मक उसे इससे बर्बू आ रही हो।”

“खैर वह चीज़ तो वह पव्ब्लक ररलेशन्ज के मलए करता है…”

“और मजस तरह वह सबके सामने मॉली से पूछता रहता है , ‘ियर इज योर मबग मर्र?”

“एल्बिद मॉली से भी उतनी ही नफरत करता है मजतनी…”

“इसमें तो कोई शक ही नहीं है। पर उसे जब इस तरह अपना काम बनता नज़र आता है , तो वह भी सोचता है ठीक है… ”

अचानक ◌ऱ्ोनों आर्मी चुप हो गये। बाहर मकसी के पैरों की आहि सुनाई ◌ऱ्े

रही थी। “मेरा ख्याल है ममसेज़ ◌र्ारूवाला है। ” कुछ ◌र्ेर उधर कान लगाये रहने के बार् लैरी ने कहा और अपनी िई पर पड़े िमिर की चिनी के मनशान को उँगली से साफ करने लगा।

पर वह आहि बराम◌र्े तक नहीं आयी। बराम◌र्े के परे से ही कच्ची बरफ पर पड़ते पैरों की कचर-कचर ◌र्ूसरी तरफ चली गयी।

“कोई और था शायर्! ” लैरी ने एक आशंमकत नज़र चेरी पर डाल ली।

पर चेरी उस आहि से आशंमकत नहीं हुआ था, “होगा कोई।” उसने कहा, “उधर मसंह की कोठी है। वहााँ आधी रात तक लोगों का आना-जाना चलता रहता है। ”

“तुम्हें मवश्वास है न मक...?”

चेरी ने आाँखें महलायीं , “इस तरह इस किोज तक आने का मकसी का हौसला नहीं पड़ सकता।”

लैरी मफर भी आश्वस्त नहीं हुआ। कुछ ◌र्ेर अपने मगलास को हाथ में घुमाने के बार् वह व्यस्त भाव से उठ खड़ा हुआ, “मैं अभी गुसलखाने से होकर आता हाँ।”

पर बाहर जाने के मलए र्वाज़ा उसने काफी आमहस्ता से और सावधानी के साथ खोला। ठंडी हवा की एक लहर कमरे के धुएाँ को चीर गयी।

“बातें बहुत बड़ी-बड़ी करता है , पर है बहुत कमज़ोर मर्ल का आर्मी।” र्वाज़ा मफर से बन्द हो जाने पर चेरी अपनी कुसी थोड़ा आगे को सरकाकर बोला , “तुमसे कहता है मक तुम्हारे अन्दर हौसला नहीं है, पर अपने को ◌र्ेखो...”

मैंने जवाब न ◌र्ेकर घड़ी में वि ◌र्ेख मलया।

“तुम अब तक उस बात का बुरा माने बैठे हो?”

मैंने मसर महलाया, पर कहा मफर भी कुछ नहीं।

“मफर तुम्हारा चेहरा ऐसे क्यों हो रहा है ?”

मैंने ज़बरर्स्ती मुिरा मर्या। “मुझे नींर् लग रही है।” मैंने कहा, “सोचता हाँ मक अब घर जाकर खाना-वाना खा मलया जाए और... ”

“तुम्हें इस आर्मी की बातों का बुरा नहीं मानना चामहए। ” वह बोला, “तुम्हें पता ही है यह मकतना बेवकूफ आर्मी है। मैंने तुमसे कोई ऐसी-वैसी बात कही हो , तो तुम बताओ...”

“ेर्खो, चेरी...”

“यह मतलबी आर्मी है। अपने मतलब से मेरे पीछे लगा रहता है। तुम्हारी इसके साथ ोर्स्ती ज़रूर है , पर तुम इसे ठीक से जानते नहीं हो। ”

“मैं कभी ोर्ावा नहीं करता मक मैं... ”

“हम लोग कभी अलग से बैठेंगे, तो मैं तुम्हें इसके बारे में बताऊाँगा। एक-एक बर्िी मााँस और एक-एक गुत्थी नमक के मलए यह आर्मी कैसे मेरी ममन्नत करता है , तुम नहीं जानते।”

“मैंने कहा है न मक मुझे इस बात का मबिुल ोर्ावा नहीं है मक... ”

“तुम्हारे साथ इसके सम्बन्ध बनाकर रखने का भी एक राज़ है। तुम्हारी मनयुक्ति डी.पी.आई. के ज़ररए हुई थी, इसमलए यह समझता रहा है मक तुम्हें खुश रखकर यह अपने को डी.पी.आई. की नज़रों में ला सकता है? मेरे साथ इसके ोर्स्ती रखने की वजह भी मााँस-मच्छी के अलावा यही है मक मैं डी.पी.आई. के पास आता-जाता रहता हाँ। िोनी से जो इसकी अनबन हुई है , उसकी असली वजह तुम जानते हो?”

मैंने बात में मर्लचस्पी न रखने के ढंग से मसर महला मर्या।

“इसका ख्याल था मक यहााँ आकर िोनी का सबसे नज़ोर्ीकी आर्मी यही होगा। इसकी नज़र सीमनयर मास्टर की जगह पर थी, क्योंमक इसने सुन रखा था मक मजमी ब्राइि कुछ मर्नों में यहााँ से जानेवाला है ? पर जब यहााँ आकर इसने ोर्ेखा मक िोनी का अन्दरूनी सकदल मबिुल ोर्ूसरा है और मक ममसेज़ ज्ाफ्रे और एल्बिद िउन के सामने इसकी ोर्ाल नहीं गल सकती, तो यह अपनी ोर्ूसरी जोड़-तोड़ में लग गया।”

“हो सकता है।” मैंने मफर भी अपने को तिथथ रखते हुए कहा, “यह उसका अपना तरीका है जीने का।”

“तुम बात समझ नहीं रहे।” वह बोला, “मैं तुम्हें इसमलए बता रहा हाँ मक वह तुमसे अलग से बात करने लगे, तो तुम ज़रा होमशयार रहो। आज हम लोग यहााँ ममलकर बात करें, यह सुझाव भी उसी का था। र्असल यह अपनी जगह डरा हुआ है मक छुमियों के शुरू में िोनी इसे नोमिस न ोर्े

ेर्। तुम्हें पता ही है, िेनी का यह तरीका है। उसे मजस आर्मी को मनकालना होता है , उसे तीन महीने की तनख्वाह और नोमिस एक ही मर्न हाथ में पकड़ा ेर्ता है। मैंने भी इसीमलए इसके सामने आज ज़्याेर्ा बात नहीं की। इसका मतलब यह नहीं मक मैं इससे या मकसी से डरता हाँ। चेरी को और चाहे कुछ भी कह ले, डरपोक कभी कोई नहीं कह सकता। मुझे जो भी कुछ कहना-करना होता है , मैं धड़ल्ले के साथ कहता-करता हाँ। इसीमलए िेनी और मकसी से भी उस तरह खम नहीं खाता मजस तरह मुझसे खाता है , बल्कि पूरे िूल में वह अगर मकसी से डरता है, तो मुझसे। मैं अगर आज डी.पी.आई. से अपनी मशकायत वापस ले लूँ तो उससे जो चाहाँ अपने मलए करा लूँ। मगर मैं एक बुमनयाेर्ी चीज़ के मलए लड़ रहा हाँ—हेडमास्टर और उसके मपिुओं को िूल में खाने-पीने की खास ररयायतें ममली रहें, इस चीज़ के व्खलाफ—इसमलए अपना नफा-नुकसान ताक पर रखकर मैं यह चीज़ सामबत कर ेर्ना चाहता हाँ मक ेर्ुमनया में उसूल नाम की भी कोई चीज़ है। मजस तरह तुम्हारी लड़ाई उसूल की है मक तुम्हें सीमनयर ग्रेड ममलना ही चामहए मजसके मक तुम हकेर्ार हो, उसी तरह मेरी भी लड़ाई उसूल की है मक बावचीखाने के काम-काज को लेकर मुझ पर मकसी तरह का र्बाव नहीं डाला जाना चामहए। जब इस काम की उनमें से मकसी को समझ ही नहीं है , तो मजसे समझ है , उसे अपने ढंग से काम करने ेर्ना चामहए। ठीक है मक नहीं ? पर मुझे इस आर्मी पर इतना भी एतबार नहीं है मक कल को हेडमास्टर इसे फुसलाकर अपनी तरफ करना चाहे तो यह जाकर यहााँ पर हुई सारी बातें उसके सामने उगल नहीं ेर्गा। यह आज बात मेरी तरफ से कर रहा है , पर तुम समझते हो इसे सचमुच इस चीज़ का गम है मक कहीं ममसेज़ जेफ्रे मेरी वाली जगह न ले ले? इसे गम है तो इस चीज़ का मक...”

र्रवाज़ा खुलने की आवाज़ से उसकी बात रुक गयी और उसने अपनी कुसी मफर पीछे सरका ली। लैरी अन्दर आया, तो उसका रूमाल उसके हाथ में था। पीछे र्रवाज़ा बन्द करने और कुसी की तरफ बढने के उसके ढंग से स्पष्ट था मक वह गुसलखाने में कै करके आया है। अपनी कुसी पर आकर वह कुछ पल आाँखें मूाँेर् रहा।

“तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ?” चेरी ने उससे पूछा।

लैरी ने हाथ से बाहर की तरफ इशारा कर मर्या। “यह उस वजह से हुआ है।”

“उस वजह से यानी...?”

“हवा की वजह से। ठंडी हवा में जाते ही मेरा मसर चकरा गया था।”

“तुम्हें कोई चीज़ चामहए इसके मलए। ”

“नहीं। मैं अभी ठीक हो जाऊँगा। काफी ठीक हो गया हाँ अब तक। ”

“मेरा ख्याल है तुम्हें अपने क्विादर में जाकर लि रहना चामहए।” मैंने इतनी ◌रे्र से पहली बार उससे बात की।

“चाहो तो यहीं लि जाओ कुछ ◌रे्र के मलए।” चेरी ने कहा।

“नहीं , मैं ठीक हो जाऊँगा ऐसे ही।” लैरी हठ के साथ बोला, “मैं सीधा खुले में चला गया था। पगडंडी की तरफ। इसी से हवा खा गया हाँ। ”

“वहााँ क्या ◌रे्खने गये थे मक कौन गया है मनकलकर?” चेरी की आाँखें मुझसे ममल गयीं। मैंने अपनी आाँखें हिा लीं।

“मैंने कहा था, ◌रे्ख लूँ वह आ भी रही है या नहीं ...◌र्ारूवाला। पर नीचे सडक़ तक वह मुझे कहीं नहीं मर्खी। मेरा ख्याल है वह डर के मारे नहीं आयी कुमतया।”

चेरी का चेहरा कस गया। वह ममसेज़ ◌र्ारूवाला के मलए मजस शब्द का प्रयोग स्वयं करता था, उसे लैरी के मुाँह से सुनना उसे गवारा नहीं हुआ। “हो सकता है उसे मेरी मचि न ममली हो,” उसने कहा, “मैं ऊपर जाते हुए एक बैरे के पास मचि छोड़ आया था मक उसके क्विादर में ◌रे् आये।”

लैरी ने ठीक से आाँखें खोल लीं , “तुम्हें उसका जवाब नहीं ममला था मक वह आ रही है?”

चेरी ने हि से मसर महला मर्या और नया मसगार मुाँह में लेकर तीमलयााँ मघसने लगा।

“पर तुमने तो कहा था मक वह मनमित रूप से आ रही है।”

“मैंने सोचा था मक उसे मचि ममल जाएगी, तो वह मनमित रूप से आ जाएगी।”

“तुमने यह नहीं कहा था। तुमने कहा था मक... ”

“मेरा ख्याल था वह आ जाएगी। नहीं आयी , तो मैं उसके मलए मज़म्मे◌र्ार नहीं हाँ।”

लैरी की आाँखों में लाल डोरे उभर आये थे। उसका चेहरा भी पहले से मवकृत हो गया था, “और तुम कहते हो मक तुम्हारे कहने से वह कुछ भी कर सकती है।”

चेरी जवाब में कुछ कहने को हुआ, पर मेरी तरफ ◌ेर्खकर अपने को रोक गया। “इस वि हम इस पर बात नहीं कर रहे।” उसने आमहस्ता से कहा, “मक मेरे कहने से वह क्या कर सकती है और क्या नहीं।”

लैरी मनचला होंठ बाहर मनकालकर ऊपरी होंठ को उस पर र्बाए बारी-बारी से हम ◌ोर्नों को ◌ेर्खता रहा। “लगता है तुम लोग इस बीच मकसी नतीजे पर पहुाँच गये हो।” उसने कहा।

“तुम्हारे पीछे हम लोगों में बात तक नहीं हुई, मकसी नतीजे पर क्या पहुाँचना था!” चेरी ने अपने स्वर से मुझे भी साथ समेि मलया।

“खूब! ” लैरी मसर महलाने लगा, “बाहर से लग तो ऐसे रहा था जैसे अन्दर तुम्हारा भाषर् चल रहा हो।”

“मैं इससे इसकी पत्नी के मवषय में पूछ रहा था। वह बहुत भली स्त्री है। मुझे बहुत अच्छी लगती है। ”

“तो कुछ भी तय नहीं मकया तुम लोगों ने?” लैरी अब मेरी तरफ घूम गया। मेरा ध्यान उसके हाथ की नसों की तरफ चला गया जो रूमाल को भींचे रहने से बाहर को उभर आयी थीं। “या मुझे अब इस बातचीत से बाहर रखने का फैसला मकया गया है इस बीच?”

“तुम्हें आज थोड़ी-सी पीकर ही नशा हो गया है। ” चेरी बोला, “इसमलए बेहतर यही है मक...”

लैरी ने अपने ◌ोर्नों हाथ हम लोगों की तरफ फैला मर्ये, “तुम लोग समझते हो मक मैं परवाह करता हाँ? मैं तुम ◌ोर्नों को यह बता ◌ेर्ना चाहता हाँ मक मैं मबिुल परवाह नहीं करता। मकसी भी चीज़ की परवाह नहीं करता। जो आर्मी ◌िनी व्हिसलर जैसे आर्मी को सुखद आाँख से ◌ेर्ख सकता है , वह मकसी की क्या परवाह कर सकता है? तो ठीक है। मैं खुर् अपने को इस बातचीत से बाहर रखना चाहता हाँ। मुझे इसमें कोई मर्लचस्पी नहीं है। सच पूछो तो मुझे मकसी भी चीज़ में कोई मर्लचस्पी नहीं है। मुझे यहााँ की हर चीज़ से उबकाई आती है —लोगों से, बातों से, हर चीज़ से।”

“इसकी तबीयत ठीक नहीं है। ” लैरी ने मेरी तरफ ◌ेर्खकर कहा, “मेरा ख्याल है इसके बार् जो भी बात करनी हो, वह मफर मकसी वि की जाए। आज के मलए हम लोग...”

“मफर मकसी वि क्यों की जाए?” लैरी अपना रूमाल वाला हाथ कुसी की बाांह पर पिकने लगा, “जो बात इस वि नहीं की जा सकती, वह मफर

मकसी वि भी नहीं की जा सकती। और मैं इस बात में आता कहााँ हााँ? बात तुम ◌र्ोनों की है। तुम ◌र्ोनों की नौकरी का सवाल है। मुझे क्या पड़ी है मक मैं बीच में र्खल ◌र्ूाँ?”

“लैरी! ” चेरी ने अपने ऊाँचे स्वर से उसे र्बाने की कोमशश की।

“मुझसे इस तरह बात मत करो। ” लैरी सरककर अपनी कुसी के मसरे पर आ गया, “मैं मकसी के मुाँह से इस तरह अपना नाम सुनने का आ◌र्ी नहीं हााँ। ”

“◌र्ेखो लैरी...। ” मैंने एक मध्यथथ की तरह कहना शुरू मकया।

“मुझसे इस तरह बात मत करो। ” उसने मुझे भी कि मर्या, “मैं जानता हााँ मक तुम लोग मकस वजह से मुझसे बात करने से कतरा रहे हो। मैं बच्चा नहीं हााँ। मैंने मज़न्दगी ◌र्ेखी है। मैं आर्मी को सूाँघकर बता सकता हााँ मक उसके मन के अन्दर क्या बात है। तुम लोग समझते हो मक मैं समझता नहीं हााँ। मैं सब समझता हााँ।”

“इसे घर जाकर लेि रहना चामहए।” चेरी बोला।

“मुझे कुछ काम भी है। ” मैंने कहा, “इसमलए मैं समझता हााँ मक...”

“तुम लोग समझते हो मक मुझे ही कुछ काम नहीं है ?” लैरी और भी चमक उठा, “यहााँ इतनी ज़रा-सी शराब पीने आने के मलए मेरे पास फालतू वि रखा है। मैं आया था तुम ◌र्ोनों की खामतर , वरना मुझे क्या पड़ी थी यहााँ आने की? शराब मैंने मज़न्दगी में बहुत पी है। औरतें भी बहुत ◌र्ेखी हैं। अगर मकसी का यह ख्याल था मक...”

चेरी ने ताव में उसकी बााँह झकझोर ◌र्ी, “तुम्हें होश है मक तुम क्या बात कर रहे हो?”

लैरी ने झिके से बााँह छुड़ा ली और पल भर हााँफता हुआ उसे ◌र्ेखता रहा। मफर ऐसे जैसे मक उसकी बात के उत्तर पर ही सब कुछ मनभदर करता हो —बोला, “तुम समझते हो मक मुझे होश नहीं है?”

“हााँ, मैं समझता हााँ मक तुम्हें होश नहीं है।” चेरी उसकी आाँखों में आाँखें गड़ाये रहा।

“सचमुच समझते हो मक मुझे होश नहीं है ?”

“हााँ, सचमुच समझता हााँ मक तुम्हें होश नहीं है।”

“और तुम्हें होश है ?”

“हााँ, मुझे होश है।”

“सचमुच होश है ?”

“यह तुम्हें भी ◌ऱ्ीख रहा है मक सचमुच होश है।”

“और अगर मुझे कुछ और ही ◌ऱ्ीख रहा हो, तो?”

“और क्या ◌ऱ्ीख रहा है ?”

“तुम जानना चाहोगे?”

“क्यों नहीं जानना चाहाँगा?”

मैंने अपने को तैयार कर मलया था मक जहााँ से ये सवाल-जवाब रुकेंगे वहााँ एक का हाथ ◌ऱ्ूसरे के गले की तरफ बढ जाएगा। वे अपनी-अपनी कुमसदयों पर कुछ उसी तरह आगे को बढ भी आये थे। मैं उनके बीच मबिुल फालतू पड़ गया था। अगर मैं कुछ कहता , तो वह उनके कानों को छूता भी नहीं। आगे आने वाले ‘कुछ’ की प्रतीक्षा में मैंने अपने को अपनी कुसी पर ढीला छोड़ मर्या। वे ◌ऱ्ोनों भी जैसे उसी ‘कुछ’ की प्रतीक्षा में कुछ पल एक-◌ऱ्ूसरे को ◌ऱ्ेखते रुके रहे। मफर लैरी ने मसर पीछे मिकाते हुए मवतृष्णा के साथ हाँस मर्या, “मैं तुम्हें बताकर अपने को छोिा नहीं करना चाहता। ”

“हााँ, वैसे तो तुम काफी बड़े हो।” कहकर चेरी ने कुछ ◌ऱ्ेर और प्रतीक्षा की। मफर वह भी अपनी जगह ठीक से हो गया।

उसके बाऱ् खामोशी का एक लम्बा अन्तराल रहा। हम तीनों मबना एक-◌ऱ्ूसरे की तरफ ◌ऱ्ेखे अपनी-अपनी अव्थथरता को र्बाये प◌ऱ्ों, मगलासों और ◌ऱ्ीवारों तथा ◌ऱ्ीवारों के कोनों में उभर आयी सीलन को ◌ऱ्ेखते रहे। मुझे खुऱ् अपने अन्दर ममतली-सी उठती महसूस हो रही थी। लग रहा था जैसे कोई हाथ मेरे अन्दर उतर गया हो और वहााँ धडक़ते लों◌ऱ्े को धीरे-धीरे अपने में भींचता जा रहा हो। मैंने काफी ◌ऱ्ेर से मसगरि नहीं मपया था। पीने को मन नहीं था, बल्कि अपनी सााँस से िकराता चेरी के मसगार का धुआाँ भी मुझे बर◌ऱ्ाश्त नहीं हो रहा था। उस गन्ध के अलावा एक और गन्ध जो मेरी उबकाई को बढा रही थी , वह थी लैरी की अलकोहल-ममली सााँसों की। मसर पीछे डाल लेने के बाऱ् उसने अपनी बााँहों और िााँगों को बेतरह फैल जाने मर्या था और उसके फैलने का ढंग कुछ ऐसा था मक उसका मसर मेरी तरफ को काफी झूल आया था। चेरी लगातार लम्बे-लम्बे कशों का

धुआँ बाहर उँडेलता हुआ इस तरह इधर-उधर आँखें घुमा रहा था जैसे मक हम लोगों का वहाँ होना उसके ठीक से मकसी चीज़ को ़्रेख सकने में बाधा हो।

मैं सोच रहा था मक वहाँ से चलने का प्रस्ताव लैरी के मुाँह से मनकले, तो ज़्या़्रा अच्छा होगा। अपनी उबकाई पर काबू पाये मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा। पर उसके चेहरे और आाँखों के व्थथर होते भाव से जब यह लगने लगा मक वह वहीं पड़ा-पड़ा सो न जाए, तो मैंने अपनी तरफ से खामोशी को तोडऩे का मनिय कर मलया, “मैं अब चल रहा हाँ।” मैंने कुसी से उठते हुए लैरी की बााँह को छूकर कहा, “तुम्हारा इरा़्रा अगर कुछ ़्रेर और यहीं बैठने का है , तो...”

लैरी ने एक झिके के साथ अपने को साँभाल मलया। आसपास इस तरह ़्रेखा जैसे मक जहााँ होने की आशा थी, उसकी जगह अपने को मकसी और जगह पर ़्रेख रहा हो। मफर चेरी के चेहरे पर नज़र डालकर उसने जैसे मपछली व्थथमत से इस व्थथमत का सम्बन्ध जोड़ा और ठक् से फशद पर जूतों की आवाज़ करता उठ खड़ा हुआ, “मैं भी चलूाँगा। ” उसने कहा, “मैं तो कब का चला गया होता। अगर तुम्हें इस तरह जमकर बैठे न ़्रेखता। मैं न तो अपनी वजह से आया था यहााँ, और न ही...न ही...।” आगे बात पूरी न कर सकने से उसने होंठ चबा मलया।

चेरी हम लोगों के उठने की प्रतीक्षा में था। “अच्छा” उसने अपनी कुसी छोड़ते हुए मुझसे कहा, “मफर मकसी मर्न बैठेंगे तो बात करेंगे। ” साथ आाँखों से उसने मुझे समझाने की चेष्टा की मक हम ़्रोनों के बीच कोई गलतफहमी नहीं है , मैं उस मलहाज़ से मन में मकसी तरह की बात लेकर न जाऊाँ। लैरी ने भी उसका आाँखों का वह भाव ़्रेखा और मफर एक बार मवतृष्णा से हाँस मर्या, “आओ चलें।” उसने कहा और र्वाज़े की तरफ बढ गया।

बाहर मनकलने पर हवा इतनी तीखी लगेगी, इसका अन्दाज़ा कमरे में बैठे हुए मुझे नहीं था। पगडंडी पर आकर लैरी ने मेरे कन्धे का सहारा ले मलया। मुझे बुरा नहीं लगा क्योंमक खुर् मुझे भी उस समय उस तरह के सहारे की ज़रूरत महसूस हो रही थी। एक-एक कर्म चलते हुए लग रहा था जैसे इस बीच बरफ की मफसलन पहले से काफी बढ गयी हो। यहााँ तक मक ़्रो-एक जगह बरफ से बचकर चलने की कोमशश में मैं पगडंडी से हिकर झामडय़ों के अन्दर चला गया। एक जगह तो लैरी मुझे वि से साँभाल न लेता, तो मैं ढलान से सीधा नीचे को लुढक़ जाता।

“बहुत गन्दी शराब थी।” कुछ ़्रूर उतरने के बार् सामने आये बरफ के एक

लों◌ेर्् को पैर से हिाते हुए उसने कहा, “अच्छी शराब पीकर मेरी तबीयत कभी खराब नहीं होती।”

“अच्छा है हम आज की शाम के बारे में बात न करें।” मैंने कहा। मुझे कोमशश करनी पड़ रही थी मक नीचे सडक़ पर पहुाँचकर उससे अलग होने तक अपनी तबीयत ज़्या◌र्ा खराब न होने ◌र्ूाँ।

“तुम ठीक कहते हो। ” वह बोला, “मुझे नहीं पता था यह शाम इतनी गन्दी बीतेगी।”

“मैं तो यहााँ आने के मलए तैयार होकर आया भी नहीं था। मेरा तो ख्याल था मक... ”

“हम लोग अगली बार अकेले बैठेंगे। जैसे हमेशा बैठते हैं पहली से पहले ही मकसी मर्न।”

“हााँ, पहली के बार्् तो छुमियााँ हो जाएाँगी।”

“मैं कह रहा हाँ न उससे पहले ही मकसी मर्न। इसीमलए तो कह रहा हाँ। लेमकन एक चीज़ का तुम्हें ध्यान रखना चामहए। ” इस बार वह ठोकर खा गया और मैंने उसे साँभाल मलया।

“मकस चीज़ का ?”

“इस आर्मी की बातों में आकर कोई गलत कर्म न उठा लेना।”

मैंने उसे जवाब नहीं मर्या। ◌ेर्खने की कोमशश की मक पगडंडी के अभी मकतने मोड़ बाकी हैं।

“तुम इसे नहीं जानते।” वह बोला, “मैं जानता हाँ। आज बल्कि पहले से ज़्या◌र्ा जान गया हाँ। तुमने ◌ेर्खा है न मक इसकी ‘वह’ भी आज नहीं आयी। वह भी इसे जानती है।”

“हााँऽऽ! ” मैंने कहा और अपनी छाती को हाथ से र्बा मलया। कुल ◌र्ो-तीन ममनि और अपने पर काबू रखने की ज़रूरत थी।

“तुम समझते हो मक इसकी मचि उसे ममली नहीं होगी? मैं यह बात मान ही नहीं सकता। मचि ज़रूर ममली होगी, पर वह जान-बूझकर नहीं आयी। जानती है मक इसके साथ ममलने-जुलने में नौकरी का खतरा है। वह अपनी नौकरी खतरे में क्यों डाले ?”

एक ही मोड़ और था मजसके बार् चौड़ी सडक़ थी। “मफर कभी बैठेंगे, तो बात करेंगे।” मैंने कहा, और इस तरह तेज़ चलने लगा जैसे मक पगडंडी की ढलान ने ही इसके मलए मजबूर कर मर्या हो। उसे भी ज़बरर्स्ती मघसिकर मेरे साथ तेज़ चलना पड़ा।

“एक मैं ही हाँ ,” वह कहता रहा, “जो इन चीज़ों की परवाह नहीं करता। कल को ◌र्ेख लेना यह भी जाकर हेडमास्टर के तलवे चाि आएगा। मगर मैं इन चीज़ों से बहत ऊपर हाँ। मैं अपनी म$जी से ऐसी पचास नौकररयााँ छोड़ सकता हाँ। पर कोई मेरे साथ चालाकी बरतकर मुझे मकसी जाल में फाँसा ◌र्े , ऐसा मैं नहीं होने ◌र्े सकता। तुमको भी मैं इसीमलए होमशयार मकए ◌र्े रहा हाँ। यह मेरी गलती थी जो मैं आज तुम्हें इसके यहााँ ले गया। मैं अपनी गलती साफ मान रहा हाँ। पर इसके बार् अगर कुछ होता है , तो वह मेरी गलती नहीं होगी। यह भी मैं तुमसे साफ कहे ◌र्े रहा हाँ। तुम अपनी म $जी से छोडक़र जाना चाहो, यह तुम्हारे ऊपर है। पर अगर तुम अपनी नौकरी बनाए रखना चाहते हो , तो इस आर्मी से अपने को बचाकर रखना। यह तुम्हें कई तरह का लोभ ◌र्े सकता है—तुम्हारे यहााँ यह चीज़, वह चीज़ मभजवाने का, इसका, उसका। अपनी ‘उस’ के साथ तुम्हारी ◌र्ोस्ती कराने का। अगर तुम इसकी बातों में आ गये, तो ◌र्ेख लेना क्या होता है। जो हाल इसका होगा, वही तुम्हारा भी होगा। मफर मुझसे मत कहना मक... ”

पााँव सडक़ पर पहुाँच जाने से उसकी बात रुक गयी। उसने इस तरह आसपास ◌र्ेख मलया जैसे मक मजस पर◌र्े की ओि में वह बात कर रहा था, वह एकाएक सामने से हि गया हो। “बहुत जल्दी पहुाँच गये नीचे।” उसने कहा, “तो ठीक है। मफर मकसी मर्न बैठेंगे, तो बात करेंगे।”

मैंने मकसी तरह उसका हाथ अपने हाथ में मलया और आमहस्ता से महला मर्या। उसका हाथ पहले ◌र्ो-एक क्षर् तो ढीला रहा , मफर मेरे हाथ पर कस गया। “यार् रखना, मैं तुम्हारा ◌र्ोस्त हाँ,” कहकर वह मुिराया। “वह आर्मी ◌र्ोस्त नहीं है। ” मैंने भी मुिराकर इसकी स्वीकृमत ◌र्ी। मफर हम हाथ महलाकर अपने-अपने क्वािर की तरफ चल मर्ये।

मेरे मलए अपनी उबकाई रोकना असम्भव हो रहा था। मफर भी मजतना रास्ता रोशनी थी , उतना रास्ता मैंने सााँस रोके हुए पार कर मलया। पर उस खम्भे के पास आते ही मजससे आगे घर तक अ◌ाँधेरा ही अ◌ाँधेरा था, मैं खड्ड की तरफ झुक गया और अपनी छाती के कसाव को मैंने ढीला हो जाने मर्या।

3-र्वाज़े

रात से पहले की खामोशी शाम गहराने के बार् की। झिपुि में रचा-बसा एक डर—न जाने मकस चीज़ का। काफी ेर्र व्हखडकी के पास खड़ा रहने के बार् मैं कमरे में हि आया। बाहर सब कुछ अाँधेरे से पहले के सुरमईपन में डूब गया था। जो धुाँधला आभास बाकी था , उसे मबिुल ममिते ेर्खने का मन नहीं हुआ। वह मेरी आव्हखरी रात थी वहााँ। एक सुबह और ेर्ोपहर और बीतनी थी, और मुझे उस घर को खाली करके चले जाना था।

अपना सामान मैंने आधा छााँि मलया था, काफी ेर्र पहले। जो कुछ छााँिने को बाकी था, उस पर लाचारी की नज़र डालकर हर बार उसे और बार् के मलए िाल मर्या था। मकतना कुछ था जो शोभा के आने से पहले का छााँिना रहता था—मजसे अपने काँवारेपन के मर्नों से कभी बार् के मलए िालता रहा था। वे ढेरों पत्र मजन्हें कभी छााँिकर फाइलों में लगाने की बात सोचता था। तसवीरें मजनका कभी कोई एलबम नहीं बना सका था। मकतनी ही चीज़ें थीं जो 'घर की सम्पमत्त थीं'—अथादत् उस घर की मजससे मेरा सम्बन्ध वहााँ पैर्ा होने के नाते था। मााँ और मपता के गुज़रने के बार् वह सब कुछ मौसी के यहााँ धरोहर के रूप में रखा रहा था। वे उस बार आयी थीं , तो एक-एक चीज़ मगनकर सब कुछ मुझे सौंप गयी थीं। एक बड़ा िंक मजसमें पुराने ज़माने के बरतनों से लेकर आधे कढे मेज़पोशों तक र्मसयों तरह का सामान भरा था। मौसी जब सब चीज़ें मुझे मगना रही थीं , तो मैं उन्हें मगनने की जगह उनके वापस िंक में बन्द होने की राह ेर्ख रहा था। वे बार-बार कहती थीं मक वे ेर्ोनों लड़मकयों को साथ लेकर मेरे पास पहाड़ की सैर के मलए नहीं आयीं , मेरी अमानत सुरमक्षत रूप से मेरे पास पहुाँचाने के मलए ही आयी हैं। मुझे कुछ हर् तक इस पर मवश्वास भी था क्योंमक अपना पुराना मकान बेच ेर्ने के बार् उनके पास फालतू चीज़ें रखने के मलए जगह नहीं रही थी। बेचारी राजो मौसी! वह सामान मजसकी कीमत कुल ममलाकर ेर्ो सौ रुपया भी नहीं थी, वह चौर्ह साल मेरे पैर जमने के इन्तज़ार में भरत की तरह अपनी रखवाली में रखे रही थीं। उसके बार् तीन आर्ममयों के आने-जाने का डेढ सौ रुपया भाड़ा भरके उसे मेरे पास पहुाँचाने आयी थीं। मुझे उनमें से मकसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है , मेरे यह मलखने का उन पर कुछ असर नहीं हुआ था। वे सब चीज़ें उनकी बहन मजस तरह सौंप गयी थी, उसी तरह, ज्ों का त्यों, उन्हें मेरे सुपुर्द कर ेर्ना उनका नैमतक कतदव्य था। अपने मलए वह उनमें से एक कपड़े का िुकड़ा भी नहीं रख सकती थीं। बार् में एक बार

और शोभा ने उस िरंक को खोलकर उसमें झााँका-भर था। शोभा ने तो पुराने सामान की गन्ध से ही नाक-भौं मसकोड़ ली थीं। मैं कोमशश करके आाँखों में थोड़ी भावना ले आया था जो ज़्या ्रा शोभा को मचढाने के मलए ही थी। उसके बार् मफर कभी उसे खोलने की नौबत नहीं आयी थी। वह िरंक अछूत की तरह गुसलखाने में एक तरफ पड़ा मैले कपड़े जमा करने की मेज का काम ्रेता रहा था। सुबह उसे खोलकर मैंने उसका सब सामान बाहर फैला मर्या था। एक चाय-सेि को छोडक़र और कुछ भी नहीं था मजसे काम में लाया जा सकता —पर वह जापानी चाय-सेि भी, मजसकी ्रूध्रानी का हत्था िूि गया था मेरे मलए एक समस्या बन रहा था। उस सेि के अलावा शोभा के मर्नों भी बहुत-सी प्लेिें-प्यामलयााँ थीं मजन पर इस बीच धूल की परतें जम गयी थीं। छह नये मगलास जो शोभा मकन्हीं खास-खास अवसरों पर इस्तेमाल करने के मलए लायी थी , मबना एक बार भी इस्तेमाल हुए फूस की कतरनों समेत एक गत्ते के मडब्बे में बन्द थे। शोभा मजस मर्न ज़रा खुश होती थी , या ज़्या्रा परेशान होती थी, उस मर्न कुछ न कुछ नया खरीर् लाती थी। इसी तरह का उसका खरी्रा एक आबनूस का िेबल-लैम्प था मजसमें एक बार भी बल्ब नहीं लगा था। एक पूरा सेि डाइमनंग िेबल पर मबछाने की चिाइयों का था मजनके मलए डाइमनंग िेबल खरीर्ने की योजना बनने के ्रूसरे ही मर्न रद्द हो गयी थी क्योंमक बीच की रात को मुझे ‘चपर्-चपर्’ की आवाज़ के साथ खाना खाते ्रेखकर उसे उस मवचार से ही मवतृष्णा हो गयी थी। कुछ चीज़ें थीं जो शोभा के जाने के बार् मैं अकेले जी सकने के गुमान में खरीर् लाया था। मबजली की केतली , इस्तरी, स्टोव, िोस्टर और फ्राइंग पैन। उनमें से स्टोव को छोडक़र और मकसी चीज़ का प्लग लगाने तक का मुझे उत्साह नहीं हुआ था।

जो आधा काम तब तक मकया था वह था कपड़े-मकताबें छााँि लेने का। बहुत-से कपड़े ऐसे थे जो या तो छोिे हो गये थे या कहीं न कहीं से फि रहे थे। उन्हें अलग करके काम लायक कपड़ों को एक बक्से में बन्द कर मलया था। जूता एक भी काम का नहीं था। पर मजस एक के तस्मे ठीक थे, उसे पहनकर बाकी को गुसलखाने के पीछे की गैलरी में डाल आया था मजससे जमा्रार को उन्हें ले जाने के मलए मुझसे पूछना न पड़े। मकताबों में से जो फि गयी थीं , उन्हें छोडक़र बाकी को एक बंडल में बााँध मलया था, हालााँमक जो छोड़ ्री थीं, उनमें से भी कुछेक अब तक पढी नहीं जा सकी थीं।

खि् खिर खिर खि् ...शायर् अपने कमरे में िहल रही थी। जान-बूझकर पााँव घसीती हुई। या शायर् सचमुच उससे ठीक से चला नहीं जा रहा था। मुझे लग रहा था जैसे वह आवाज़ ज़्या्रा मुझे सुनाने के मलए ही हो। थोड़ी ्रेर पहले जो उधर से उसकी ‘उाँह-उाँह, ओह-ओह’ सुनाई ्रे रही थी, उसका

भी मुझे कुछ वैसा ही मतलब लग रहा था। अपने आसपास के सामान को लेकर मैं मजस हताश व्हथथमत में था, उसमें कोई मुझे ◌रे्खे नहीं, इसमलए मैंने अपनी चिखनी अन्दर से लगा रखी थी। मफर भी चीज़ों के उठाने , रखने, घसीने-पिकने की आवाज़ें, इधर से उधर जा रही थीं। जब भी मेरे कमरे में कुछ ज़्या◌र् ऊँची आवाज़ होती, उधर की ‘उँह-उँह, ओह-ओह’ पहले से बढ जाती। पहले कुछ ◌रे्र जैसे वह आवाज़ कम्बल से ढाँकी रही थी, मफर कम्बल से बाहर आ गयी थी। जब मैं व्हखडक़ी के पास चला गया, तो वह आवाज़ मव्हिम पड़ते-पड़ते मबुिल रुक गयी। कुछ ◌रे्र बार् बें-बें रोने की आवाज़ आने लगी मजससे मुझे लगा जैसे स्याही में डूबता बाहर का पूरा दृश्यपि ही हि-हि कराह रहा हो। मेरे व्हखडक़ी से हिने तक उस आवाज़ की जगह इस ‘खि् खिर् खिर् खि्’ ने ले ली थी।

शायर् अपने कमरे में अकेली थी। उसके अकेली होने पर इस तरह की आवाज़ें उस कमरे से बहुत कम सुनाई ◌रे्ती थीं। पर ◌रो्पहर को उसमें और कोहली में जो झगड़ा हुआ था, यह उसकी मशकायत थी, मजसे कोहली के वापस घर आने तक चलते रहना था। बात मामूली-सी थी। पर शायर् उतनी मामूली नहीं भी थी। कोहली की ि◌ूल में पूरे मर्न की ड्यिूी थी —आव्हखरी ड्यिूी—मजसके कारर् रात के साढे आठ, नौ तक उसके घर लौिने की सम्भावना नहीं थी। पर एक बजे लडक़ों को ◌रो्पहर का खाना व्हखलाकर वह न जाने मकस वजह से थोड़ी ◌रे्र के मलए घर चला आया था। मैंने अपने कपड़ों को कीलों से उतारना शुरू ही मकया था जब उधर ताबड़तोड़ शार◌र् की मपिाई होने लगी थी। मपिाई उसकी कोहली पहले भी करता था, पर वि ◌रे्खकर। रात को सबके सो जाने के बार्। मेरी तरफ़ से भी मनमिन्त होकर मक या तो मैं घर पर नहीं हाँ , या उस वक़्त तक मेरे जगे होने की सम्भावना नहीं है। हाथ भी इतने ज़ोर से नहीं लगाता था मक वह चीखकर अड़ोस-पड़ोस को जगा ◌रे्। मफर भी मगरधारीलाल की बीवी को इसका पता चल ही जाता था और वह हैरानी से मुझसे पूछती थी, “आप साथ के कमरे में सोते हैं , आपको पता नहीं चलता?” मुझे अगर पता चलता भी था, तो मैं यह जानकारी अपने तक पहुँचाने का श्रेय उसी को ◌रे् ◌रे्ता था। इससे अपनी नज़र में उसका महत्त्व काफी बढ जाता था मजससे वह मेरी ज़्या◌र् कद्र करती थी। पर कोहली से हममें से कोई भी इस मवषय में बात नहीं करता था। हमें पता था मक शार◌र् के आने के बार् से उसकी मज़न्दगी का महसाब कई तरह से गड़बड़ाया रहता है। और तो और बेचारे की उम्र तक का महसाब और कुछ ठीक नहीं रहा था। मैमिरकुलेशन समिदमफकि के महसाब से उसकी उम्र तैंतालीस साल की थी, पर अब वह शार◌र् की उम्र उन्नीस साल बताकर उसका और अपना फ़क़द चौर्ह साल का बताता था। बीच के र्स साल क्या हुए , यह पूछकर उसका मन खराब करना ठीक नहीं लगता था। यूँ शार◌र् की शक्ल भी ऐसी ही थी मक उसकी उम्र का सही अन्दाज़ा नहीं होता था। वह उन्नीस की भी हो सकती

थी और उनतीस की भी। बहरहाल, उन्नीस और तैंतालीस के बीच कहीं र्स साल का घपला था। इसके अलावा भी कई तरह का घपला था। कोहली के पुराने सूि नये मसरे से किने और रंगने के बार् बहुत जल्दी यहााँ-वहााँ से मचन्दी होने लगे थे। मफर भी शुरू के मर्नों में कोहली ने शारिा को बहुत साँभाला था। खाना बनाने के मलए घर में नौकर रख मलया था और शारिा को नयी साड़ी पहनाकर रोज़ शाम को साथ घुमाने ले जाता था हालााँमक शारिा सडक़ पर उससे हिकर चलना ही पसन्द करती थी। रात को भी कोहली िेर-िेर तक उसकी वजह से जगा रहता था क्योंमक शारिा को बत्ती बुझी रहने पर अाँधेरे से डर लगता था और जली रहने पर नींर् नहीं आती थी। वह रात को मकतनी-मकतनी बार उठकर गुसलखाने में जाती थी मजसके मलए हर बार कोहली को खुर् उठकर बत्ती जलानी पड़ती थी। अाँधेरे में शारिा पलाँग से नीचे पााँव तक नहीं रख पाती थी। उसे लगता था मक कमरे में कोई चल-मफर रहा है जो उसके पलाँग से उतरते ही उसे र्बोच लेगा। बत्ती जल जाने पर वह आर्मी न जाने कहााँ जा मछपता था। पर अाँधेरे में न मसफ़द शारिा को उसके पैरों की आवाज़ सुनाई िेती थी, वह उसे चलते-मफरते िेख भी सकती थी। कोहली के यह समझाने का कुछ असर नहीं होता था मक कमरे की चिखनी अन्दर से बन्द है , इसमलए कोई बाहर से वहााँ नहीं आ सकता। शारिा मफर भी कहती रहती थी, "मैंने उसे अभी अपनी आाँखों से िेखा है। गले में लाल रंग की कमीज़ थी और नीचे काले रंग की पैंि। बत्ती जलने से पहले वह वहााँ र्रवाज़े के पास खड़ा था।" धीरे-धीरे कोहली ने बहस करना छोड़ मर्या था। रात को अधजगा रहने से उन मर्नों उसे क्लास में नींर् आने लगती थी। लोग मज़ाक करते थे, "क्या बात है कोहली? नयी शािी की है, इसका यह मतलब तो नहीं मक रात-रात भर सोओ नहीं। अगर इतना ही प्यार है तो महीने-िो महीने की छुिी लेकर उसे कहीं बाहर ले जाओ। इस पर कोहली के चेहरे के िो रंग हो जाते थे। ऊपर से वह हाँसने की कोमशश करता था, पर साथ उसके आाँखें नीचे को झुकी जाती थीं। वह बहुत गम्भीर होकर अलग-अलग से हर एक से कहता था, "मुझे आजकल इन्सोमिया की मशकायत है। एलोपैमथक की र्वाई मुझे रास नहीं आती। छुमियों में नीचे जाकर होममयोपैमथक इलाज करूाँगा।" पर इस बात को लेकर िूसरी तरह से मिप्पिी होने लगी थी। वह जब भी मकसी को अकेला खामोश और उिास नज़र आता , तो हि-से आाँख र्बाकर उससे पूछ मलया जाता, "तुम्हारा होम्योपैमथक इलाज कब से शुरू हो रहा है, कोहली?" आव्खर हारकर उसने यह कहना भी छोड़ मर्या था। जब उसकी ज़्यािा व्खंचाई की जाने लगती, तो आाँखें छत की तरफ उठाए वह चुपचाप खााँसकर रह जाता था।

कुछ महीने इस तरह मनकाल लेने के बार् अपने इस िूसरे मववामहत जीवन के िूसरे िौर में कोहली के पुरुषत्व ने मवद्रोह करना शुरू कर मर्या था। उसने ताक़ीर् कर िी थी मक रात-भर कमरे की बत्ती बुझाई नहीं

जाएगी। शारिा के साथ घूमने जाना बन्द कर मर्या था। नौकर को मनकाल मर्या था। और गाली-गलौज से शुरुआत करके थप्पड़ के इस्तेमाल तक उतर आया था। इनमें से मजस चीज़ ने शारिा को सबसे ज़्यािा तकलीफ पहुाँचाई थी, वह था नौकर का मनकाल मर्या जाना। इससे उसका एकमात्र सुख—िोपहर को मबस्तर में लेिे हुए भूपतमसंह को आवाज़ िेकर खाना नहीं माँगवा लेना—उससे मछन गया था। जब कोहली ने उससे शािी की, तो अपनी आमर्नी का महसाब, मकान, खाना, ट्यूशनें और यूमनवमसर्दी के पचे, सब मगनकर बताया था। अपनी बैंक की पास-बुक भी मर्खाई थी मजसमें र्स हज़ार रुपये जमा था। पर उससे खिपि बढने के बाि वह मचल्लाकर कहने लगा था, "िो सौ रुपये तनखाह में मैं नौकर नहीं रख सकता। आसपास और मकसके यहाँा है नौकर? इतनी तनखाह में र्िीि का ही गुज़ारा नहीं होता, नौकर कौन रख सकता है?" इधर इसमें एक और वाक्य जुडने लगा था, "पता नहीं यह नौकरी भी रहती है या नहीं ! "

भूपतमसंह आर्मी भी कुछ अजीब तरह का था। शरीर िुबला-पतला पर चेहरा काफी चौड़ा। आाँखें खामोश शत्रुता के भाव से हर एक को िेखती हुई। सुबह से लेकर रात तक काम करता हुआ भी काफी सुस्त। काम से फुरसत ममलते ही ज़ीने में मबछकर पड़ जाने वाला। न डााँि-डपि का कोई असर , न प्रशंसा का। कड़ी से कड़ी सरिी में भी गला छाती तक खुला। वह जब तक कोहली के पास था , मैंने कभी उसे बात करते नहीं सुना। न घर में, न घर से बाहर। नौकरी छूिने के बाि भी वह वहीं आसपास माँडराता नज़र आता था। या तो उसे िूसरी नौकरी ममली नहीं थी, या उसने की ही नहीं थी। कोहली को वह सडक़ पर कहीं खड़ा ममल जाता, तो कोहली की भौंहें तन जातीं। भूपतमसंह कोहली को िेखकर भी न िेखता। आसपास की झामडय़ों-िहमनयों में आाँखें उलझाए रहता। कोहली ऐसे जबड़े सख्त मकए उसके पास से गुज़रता था, जैसे बस चले तो उठाकर खड्ड में फेंक िे। पर भूपतमसंह शायि गला उघाड़े ही इसमलए रहता था मक िूसरे को उसकी सख्त हड्डी का अन्दाज़ा हो जाए। कोहली उसे िेखकर मबना मुाँह खोले बड़बड़ाता पास से मनकल जाता था।

उस मर्न िोपहर की लड़ाई भूपतमसंह की वजह से ही हुई थी। कोहली को घर आने पर वह अपने कमरे में बैठा मर्खाई िे गया था। गनीमत थी मक शारिा उस वि गुसलखाने में थी और कोहली को एकाध सवाल पूछने के बाि चुपचाप उसे बाहर कर िेने का मौका ममल गया था। भूपतमसंह मफर से अपने को उस नौकरी पर बहाल कराने आया था तामक छुमियों में उनके साथ नीचे जा सके—उसने कहा भी मक र्स रुपये कम तनखाह पर बीबीजी ने उसे रखने की हामी भर िी है —पर कोहली ने सीधे उसे ज़ीने का रास्ता मर्खा मर्या। भूपमसंह के जाने के बाि शारिा बहुत िेर तक गुसलखाने से नहीं मनकली। अब मनकली, तो कोहली उस पर गरजने के मलए तैयार बैठा

था। ‘यह आर्मी क्या कर रहा था यहाँ?’ से शुरू करके पन्द्रह-बीस ममनि में ही उसने वह तमाशा खड़ा कर मर्या मक नीचे से रत्ना को बीच-बचाव के मलए आना पड़ा। कोहली को ड्यिूी के मलए वापस िल जाना न होता, तो शायर् बखेड़ा ज़्याा्र्ा ्रेर चलता। रत्ना ने मकसी तरह उसे ज़ीने से नीचे तक पहुँचा मर्या जहाँ से मगरधारीलाल उसे सँभालकर साथ ले गया।

खि् खिर् खिर् खि्...उधर से शार्ा् फशद को कि रही थी, इधर से मैं—पलाँगों को एक तरफ घसीकर सब चीज़ों को कमरे के बीचोंबीच लाकर पिकता हुआ। ्रोनों तरफ़ के र्वाज़े बन्द रहने पर भी जैसे हम लोगों में एक तरह की बातचीत चल रही थी। वह अपनी ‘खिर्-खिर्’ से मेरा ध्यान अपनी तरफ मर्लाना चाहती थी, और मैं अपनी धम-धपक से उस पर प्रकि करना चाहता था मक मेरी अपनी ही उलझन इतनी है मक मेरे पास और मकसी के मलए समय नहीं है। सब चीज़ों को एक जगह जमा कर लेने का खब्त मुझे क्यों सवार हुआ था, कह नहीं सकता। उससे चीज़ें व्यवव्थथथत होने की जगह और भी उलझती जा रही थीं। जगह इतनी नहीं थी मक उन्हें अलग-अलग महस्सों में बााँिकर रखा जा सकता। जहाँ पहले वे र्स अलग-अलग समस्याओं की शक्ल में थीं , वहाँ अब एक ही बड़ी-सी समस्या का रूप धारर् कर रही थीं। मफर भी ज्ों-ज्ों अम्बार बड़ा हो रहा था, मुझे लग रहा था जैसे कोई चीज़ मेरे मलए आसान होती जा रही हो। मुझे अगर उन सब चीज़ों से अपने को मुि करना था , तो अब एक ही झिके में कर सकता था। बराम्रे् से कमरे और कमरे से गुसलखाने में जाते हुए र्स बार सोचने की ज़रूरत नहीं थी मक मकस चीज़ का क्या करना चामहए।

अलमोमनयम के उन फूल्र्ानों को, जो शोभा ने शा्र्ी से चार-पाँच मर्न पहले मुझे खरीर्कर मर्ये थे और मजनकी बार् में हम ्रोनों में से मकसी को यार् नहीं रही थी, उस ढेर में रखते हुए मैंने साथ के कमरे की चिखनी खुलने और खड़ाऊँ की खिर्-खिर् के अपने र्वाज़े तक आने की आवाज़ सुनी। कुछ पल ्रोनों तरफ प्रतीक्षा की खामोशी रही। मफर शार्ा् ने हि से र्वाज़ा खिखिा मर्या। मैंने मुँह और आँखें मसकोडक़र अपनी झुँझलाहि को थोड़ा कम मकया और र्वाज़ा खोल मर्या। शार्ा् बहुत मबखरे ढंग से बाहर खड़ी थी। साड़ी पेंिीकोि से तीन-तीन इंच ऊँची। मसर के बाल जैसे धुनकी से धुने गये। िाउज़, ब्रेमसयर और शरीर—तीनों का कसाव अलग-अलग। आँखें आिोश से भरकर अपने हाल पर रहम खाती हुई, “कमहए।” मैंने बहुत मशष्टता के साथ कहा। ऐसे जैसे ्रोपहर की घिना का मुझे मबिुल पता ही न हो।

“क्या बजा है अब?” उसने पल-भर सीधे मुझे ्रेखते रहने के बार् एक नज़र अन्दर के सामान पर डाल ली।

“सात बीस। नहीं , उन्नीस” मैंने घड़ी ‍ेर्खते हुए इस तरह कहा जैसे एकाध ममनि के फ़क़द पर मकसी चीज़ का बनना-मबगडऩा मनभदर हो।

“इनकी ड्यिूी मकतने बजे तक रहेगी?”

“आठ बजे तक। लेमकन लौिने में साढे आठ, नौ बज सकते हैं।” वह पल-भर रुकी रही। शायर् कुछ और कहना या पूछना चाहती थी। पर मेरे ठंडे लहज़े को ‍ेर्खकर वह बात ज़बान पर नहीं ला पायी। आमहस्ता से आँखें झपकाकर अपने कमरे की तरफ़ मुड़ गयी। मैंने इस बार र्रवाज़ा मभड़ाकर चिखनी नहीं लगायी। अपने सामान के पास आकर इस तरह खड़ा हो गया जैसे वह सब भी शार‍र् के अस्तव्यस्त व्यव्क्तत्व जैसा ही कुछ हो, मजससे मशष्टतापूवदक ‍र्ो शब्द कहकर अपने को उससे अलग मकया जा सकता हो।

आध-पौन घंि‍ा और उसी तरह बीत गया। उन सब चीज़ों से अलग हिकर उनके बारे में सोचते हुए। क्या यह उमचत था मक उन्हें वहीं बैरों-चपरामसयों में बाँि‍ मर्या जाए? या मक बड़े बक्से में मजतना सामान आ सके उसे पासदल से शोभा के पास भेज ‍र्ेना ज़्या‍र्ा ठीक था ? इतना मनमित था मक अपने मलए मुझे उससे ज़्या‍र्ा सामान नहीं रखना था मजतना जहाँ कहीं भी साथ ले जाया जा सके। अपने आगे के कायदिम के बारे में बहुत तरह से सोचकर भी मैं इससे ज़्या‍र्ा कुछ तय नहीं कर पाया था मक जब तक ि‍ूल से ममले पैसे साथ ‍र्ेंगे, तब तक मुझे मकसी एक जगह नहीं रहना है —उस शुरुआत से पहले एक बार शोभा से ममल लेना चामहए या नहीं , इसका कुछ मनिय नहीं कर पाया था। एक बात मन में आती थी मक सामान शोभा के सुपुर्द करने के बहाने एक बार वहाँ जाया जा सकता है। इससे उसे इस बात की मशकायत नहीं रहेगी मक मैंने अपने मनर्दय के सम्बन्ध में उससे एक बार बात भी नहीं की! पर वहाँ जाने में सबसे बड़ी बाधा थी उस घर के लोग , मजनके सामने चेहरा बनाए रखने के मलए मकसी ‍र्ूसरी तरह की शुरुआत में उलझ जाना पड़ सकता था। ‘मुझे मजन चीज़ों से अपने को मुि करना है, वे बार्‌ में मकसके पास रहती हैं , या उनका क्या होता है, इसकी मचन्ता मैं क्यों कर रहा हाँ ?’ मैंने अपने से कहा और कुछ क्ष‍र्ों के मलए जैसे सचमुच उस सबसे उबर मलया। परन्तु कमरा पार करते हुए मफर अपने को उन सब चीज़ों से मघरे हुए पाया—मफर से उसी मचन्ता से परेशान मक आव्खर उस सबके बारे में अव्न्तम मनर्दय क्या रहा —उसे शोभा के पास भेज ‍र्ेने का, साथ ले जाने का, लोगों में बाँि‍ ‍र्ेने का, या उसी तरह वहीं पड़ा छोड़ जाने का?

अ‍ँधेरा हो जाने से बाहर का दृश्यपि मबिुल बुझ गया था। ‍र्ोनों सोफ़ा-चेयर मजन पर शोभा और मैं आमने-सामने बैठा करते थे, खाली पड़े एक-

ूसरे को तक रहे थे। मेज़ मैंने साफ कर ्री थी। मसवाय स्याही के कुछ मनशानों के मेरे वहााँ बीते मर्नों का कुछ भी आभास उससे नहीं ममलता था। वह उस समय उतनी ही खस्ता और नंगी थी मजतनी उस मर्न मजस मर्न पहली बार वहााँ आने पर मॉली ि़ाउन ने कमरे का सामान मुझे मर्खाया था। मैं यह भी नहीं कह सकता था मक वे मनशान मेरे ही मर्नों के थे। उनमें से कुछेक पहले के भी हो सकते थे। “हम इसे पेंि करा ्रेंगे।” पहले मर्न मॉली ि़ाउन ने कहा था। पर तब से अब तक उसके पेंि होने की नौबत नहीं आयी थी। ‘मेरे बार् में आनेवाले आर्मी से भी शायर् वह यही कहेगी’ मैंने सोचा, ‘और वह भी कुछ साल मेरी तरह एक आशा और भरोसे में कािा ्रेगा।’

करने को बहुत कुछ था, मफर भी मुझे कुछ भी करने को नहीं सूझ रहा था। खाने का मडब्बा ि़ूल से आ गया था। पर ज़्या्रा से ज़्या्रा ्रेर मन को उससे परे रखकर मैं उसके प्रमत अपनी उपेक्षा प्रकि कर लेना चाहता था। ‘आज आव्खरी बार होगा जब मैं यह सड़ा हुआ खाना खाऊाँगा ,’ इस मर्लासे से मैंने स्टोव पर उसे गरम करने का इरा्रा भी छोड़ मर्या था। ‘जाते हुए इसकी असमलयत को यार् रखने के मलए इसे ठंडा ही खाना चामहए,’ यह जैसे मैंने अपने से नहीं , खाने के उस मडब्बे से कहा था जो क्षमा-याचना की व्थथमत में एक तरफ पड़ा अपनी और ि़ूल की तरफ से मेरे सामने लव्ज्जत हो रहा था।

खि्-खि्-खि्...र्वाज़े पर मफर से र्स्तक सुनकर मैंने मकवाड़ खोल मर्ये। इस बार भी शार्रा ही थी “अभी नौ नहीं बजे?” उसने मुझे ्रेखकर कुछ सकपकाहि के साथ पूछ मलया।

“नहीं। अभी आठ र्स हुए हैं। ”

“कुल आठ र्स?” उसे जैसे मेरी घड़ी पर मवश्वास नहीं आया।

“मेरी घड़ी में एकाध ममनि से ज़्या्रा का फ़क़र् नहीं हो सकता।”

वह इस बार आाँखें झपकाकर लौिी नहीं ; उसी तरह खड़ी रही।

“आज ड्यूिी का आव्खरी मर्न है , इसमलए हो सकता है कोहली को लौिने में थोड़ा और समय लग जाए।” कुछ पल प्रतीक्षा करने के बार् मैंने मफर कहा।

उसके चेहरे पर मनराशा का भाव नहीं आया। उसने जैसे आाँखों से कहना चाहा मक यह बात वह पहले से जानती है।

“आप घर मबिुल खाली करके जा रहे हैं ?” थोड़े और वक्फे के बार् वह बात को ◌ूसरे मवषय पर ले आयी।

मैंने आाँखें झपकाकर मसर महला मर्या।

“सारा सामान साथ ले जाएाँगे?”

“कुछ ले जाऊाँगा, कुछ यहीं छोड़ जाऊाँगा।”

“यहााँ क्यों छोड़ जाएाँगे?”

मुझे कुछ अपिा लगा। इतनी बात उसने मुझसे कभी नहीं की थी। “बहुत-सी चीज़ें हैं मजनकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी।” मैंने बात छोिी करने के मलए कहा।

“मैं तो सोच रही हाँ मक अपना सारा सामान ले जाऊाँगी।” कहते हुए जैसे मेरे सामान पर ठीक से नज़र डालने के मलए वह र्हलीज़ लााँघ आयी।

मैंने जान-बूझकर उसकी बात का वह मतलब नहीं मलया। कहा , “कोहली ने तो ऐसा कुछ नहीं बताया।”

“उन्हें भी अभी पता नहीं है।” वह कमरे में इस तरह नज़र ◌ौड़ाती बोली, जैसे यहााँ की हर चीज़ की अपने घर की चीज़ों से तुलना कर रही हो। “मैं अब आने पर उन्हें बताऊाँगी। मैं इस आर्मी के साथ और नहीं रह सकती।”

उसकी आाँखें मुझसे ममल गयीं। मेरी प्रमतमिया जानने के मलए , या वैसे ही। कुछ और ही तरह की थीं उसकी आाँखें। जैसे शीशे की बनी। अपनी चमक के बावजूर् मनजीव। मैं अपने सामान की तरफ ◌ेखता हुआ चेहरे पर व्यस्त भाव ले आया। उस भाव का अथद यह भी था मक मुझे इससे कुछ भी फ़क़द नहीं पड़ता मक तुम उस आर्मी के साथ मज़न्दगी भर रहती हो या आज ही उसे छोडक़र चली जाती हो। मेरे मलए इससे, बव्हि तुम्हारे समूचे अव्हस्तत्व से ज़्या◌ा महत्त्वपूदद यह चीज़ है मक मुझे सोने से पहले क्या-क्या करना और क्या-क्या समेिना है ? इसमलए तुम्हारा इस वक़्त यहााँ होना मेरे मलए एक खामखाह की उलझन है , मजसे िालने के मलए मुझे जल्दी से सोचना है मक मुझे क्या ऐसा सोचना चामहए मजससे तुम मबना ज़्या◌ा सवाल मकये अपने कमरे में वामपस चली जाओ। पर सामान से मुझे पहले ही इतनी मघन हो रही थी मक ज़्या◌ा ◌ेर मैं उन चीज़ों पर आाँखें नहीं मिकाए रह सका। मेरी आाँखें मफर उसकी तरफ़ मुड़ीं तो वह उसी तरह मुझे ◌ेख रही थी। चेहरे पर वही ढीला भाव जो उसके लेस◌ार पीिकोि और उखड़ी हुकों वाले िाउज़ में था। नाम के मलए उसने कन्धे पर शाल ले रखा था। पर वह इस तरह अलग से झूल रहा था जैसे कन्धा एक

खूँिी हो जो उसे लिका रखने के काम आती हो। िउज़ यूँ तो सफेर् था, पर गले से लेकर नीचे तक खुलनेवाले पूरे महस्से पर मैल की लकीर थी—वैसी ही लकीर अन्दर से मर्खाई र्ेते ब्रेमसयर के मसरों पर भी थी। लगता था मक वह स्त्री न तो हफ्ता-हफ्ता भर नहाती है और न ही अन्दर से कपड़े बर्लती है। ब्रेमसयर में कसे, मफर भी ठीक से न कस पाये, मांस-मपंडों की खुिी भी इस चीज़ की साक्षी थी। 'कोहली ने मर्न में इसे बुरी तरह पीिा मर्या था, उसके बार् तो कम से कम एक बार इसे नहा ही लेना चामहए था,' मैंने सोचा, 'पर उसके मलए शायर् हर चीज़ नहाने से बचने का बहाना बन जाती थी।'

"आप जाकर बहनजी से ममलें , तो उन्हें भी बता र्ीमजएगा।" वह मुझसे उत्तर न पाकर बोली, "उनसे तो मैं पहले भी कहा करती थी, मेरा इस आर्मी के साथ गुज़ारा नहीं है। मेरे माँ-बाप ने पता नहीं क्या र्ेखकर मुझे इसके साथ ब्याह मर्या। यह भी कोई आर्मी है मजसके साथ एक लडक़ी मज़न्दगी किा सके! मेरी अभी उम्र ही क्या है! जब शार्ी हुई , तब मैं पूरे उन्नीस की भी नहीं थी। मेरे माँ-बाप ने इतने मर्न र्ौड़-धूप करके मेरे मलए ढूँढा भी तो यह आर्मी! मुझे उन पर तरस आता है मक अब नये मसरे से उन्हें मेरे मलए सब कुछ करना पड़ेगा। बेचारों ने पहले ही गरीबी में मुश्किल से ब्याह का खचद उठाया था। अब र्ूसरी बार पता नहीं कहाँ से जुगाड़ करेंगे। पर मैंने सोच मलया है , मुझे चाहे सारी उम्र कुँवारी रहना पड़े, मैं इस आर्मी के साथ और एक मर्न भी नहीं रहूँगी। इसीमलए अपना सारा सामान मैं साथ ले जा रही हूँ। मबिुल नया सामान है सारा। यहाँ इसके पास मैं मकसमलए छोड़ जाऊँ? मुझे तो मफर भी कोई न कोई ममल ही जाएगा, इसे कोई मेहरी-चमारी भी नहीं ममलने की घर बसाने को। घर उसका बस सकता है जो और कुछ न हो, आर्मी तो हो। यह तो आर्मी ही नहीं है। इसका घर क्या बसेगा?"

वह बात करती हुई अपने गले की हड्डी को सहला रही थी। उसके नाखून बड़े-बड़े थे—बगैर मकसी कोमशश या तराश के बढे हुए। उँगमलयाँ पूरे शरीर की तरह गठी हुई और बेतरतीब। मुझे कोहली पर गुस्सा आ रहा था। उसे उस औरत से शार्ी करना क्यों इतना ज़रूरी लगा था? और लगा ही था, तो क्या आज के मर्न ही उसे उसकी मपिाई करनी थी मजससे मेरे जाने से पहले मेरे कमरे में आकर वह मुझे अपने बेढंगेपन से र्ो-चार होने का नायाब मौका बख्श र्े ?

"मेरा ख्याल है आपको अभी कुछ र्ेर आराम करना चामहए।" मैंने कहा, "और जो भी फैसला करना हो, ठीक से सोच-समझकर करना चामहए तामक..."

“मैंने सब सोच-समझ मलया है जी,” अब उसकी उँगमलयाँ उसी महस्से को खुजलाने लगीं। “इतने मर्न इसके साथ रह लेने के बार् भी अभी सोचना-समझना बाकी है ? आप अगर र्ेखें न कैसे इसने मेरी हड्डी-पसली एक की है आज, तो आप ज़बान पर भी न लाएँ यह बात।”

“खैर, आप ज़्यार्ा जानती हैं आपके मलए क्या ठीक है...” मुझे डर लगा मक कहीं वह सचमुच ही मुझे अपनी हड्डी-पसली न मर्खाने लगे। “...मैं तो आपसे इसमलए कह रहा था मक...”

“मुझे पता है आप मकसमलए कह रहे हैं।” उसके स्वर में और आत्मीयता भर आयी, “आप मेरा भला चाहते हैं और भला चाहने वाला हर आर्मी यही कहेगा मक अगर मकसी तरह मनभ सकती हो, तो एक औरत को मनभा लेनी चामहए। मैं खुर् शोभा बहनजी से यही कहा करती थी। मैं कहती थी मक भाई साहब में और मकतनी बुराइयाँ हों , कम से कम वे अपनी औरत पर हाथ तो नहीं उठाते। एक औरत और सब कुछ सह सकती है जी, पर मार खाना कभी बरर्ाश्त नहीं कर सकती। आजकल कोई ज़माना है मार खाने का? हम आजकल की औरतें हैं, उस ज़माने की नहीं जब मरर् लोग चार्र डालकर उन्हें पीि मलया करते थे। उस ज़माने में तो मकसी औरत की र्ूसरी शार्ी हो ही नहीं सकती थी। पर आजकल तो औरत भी चाहे, तो र्ूसरी शार्ी कर सकती है। सरकार ने इसके मलए कानून ऐसे ही नहीं बनाया। शोभा बहनजी की मैं इस बात के मलए तारीफ करती थी। उन्होंने मबिुल नये ज़माने की बनकर मर्खा मर्या था। मैं इस आर्मी से इतनी बार कह चुकी हाँ मक शोभा बहनजी को र्ेखो और आज के ज़माने को समझो। यह पहले वाला ज़माना नहीं है।”

मैं नहीं सोच पा रहा था मक मघसी चप्पल, फिे पैरों और स्याह िखनों वाली उस आजकल के ज़माने की औरत को उसके पमत के लौिने से पहले उसके कमरे में वापस भेजने के मलए मुझे क्या करना चामहए। मैं इतना रूखा भी नहीं होना चाहता था मक उसका गुबार कोहली की जगह मेरे ऊपर मनकलने लगे। वह मजस तरह खड़ी थी, उससे लगता था मक तुरन्त वापस र्हलीज लाँघने का उसका कोई इरार्ा नहीं है। वह बात कोहली के और अपने सम्बन्ध को लेकर कर रही थी, पर नज़र उसकी मेरे साथ-साथ कमरे के फशद पर मबखरी एक-एक चीज़ का जायज़ा ले रही थी। वह शायर् मन में उन चीज़ों की कीमतों का अन्दाज़ा लगा रही थी और सोच रही थी मक अगर सचमुच मैं कुछ चीज़ें वहाँ छोड़ जाना चाहता हाँ , तो वे चीज़ें कौन-सी हो सकती हैं। मजन चीज़ों से उसकी आँखें बार-बार िकराती थीं , वे थीं िोस्टर, केतली, इव्हस्तरी और उसी तरह का र्ूसरा सामान जो उसकी र्ूसरी शार्ी के र्हेज में काम आ सकता था। चीज़ों से हिकर उसकी आँखें मेरे चेहरे पर आ मिकती थीं तो कुछ वैसी ही रुमच उसकी मुझे अपने में

नज़र आने लगती थी।

“साढे आठ हो गये हैं। ” मैंने जैसे उसे समय की चेतावनी ◌ेर्ते हुए कहा, “कोहली अब आता ही होगा। मुझे भी जल्दी से यह काम पूरा करके कुछ ◌ेर्र के मलए बाहर जाना है। कई लोग हैं मजनसे ममलना है।” यूँ ममलना मुझे मकसी से नहीं था। बाहर जाने का भी मेरा कोई इरा◌र्ा नहीं था।

“आप बताइए, क्या-क्या काम है।” वह बोली, “मैं आपकी कुछ मर्र् करा ◌ेर्ती हाँ। शोभा बहन जो यहााँ होतीं, तो आपको अपने हाथों से कुछ भी न करना पड़ता। हम ◌र्ोनों ममलकर सब कर ◌ेर्तीं।”

“नहीं , मर्र् से होने का काम नहीं है।” मेरी अव्हथथरता बढऩे लगी। सबसे बड़ा काम तो कागज़ों को छााँिने का है। वह मसफद मैं ही कर सकता हााँ।”

“काम तो यहााँ मकतना ही नज़र आ रहा है। ” वह सामान के मगर्द घूमती बोली, “मकतनी ही चीज़ें शोभा बहनजी ने उधर गुसलखाने में भर रखी थीं। पता नहीं उनका आपको पता भी है या नहीं। ” और वह इतमीनान से चलती गुसलखाने में पहुाँच गयी। मैंने मन में पहले से ज़्या◌र्ा कुढक़र एक मसगरि सुलगा मलया।

“यहााँ मकतना कुछ मबखरा पड़ा है। ” गुसलखाने से उसकी आवाज़ आयी, “यह सन्दल सोप की मिमकया आप ऐसे ही फेंक जाएाँगे?”

उसका ढंग आवाज़ ◌ेर्कर उधर बुलाने का था। मुझे कोफ्त हुई मक क्यों नहीं मैंने सन्दल सोप की मिमकया भी उधर से इधर ला रखी। कुछ ◌ेर्र इन्तज़ार करने के बार्र् वह मफर वहीं से बोली, “यह आईना भी पड़ा है एक। यह आपका है या ि◌ूल का है ?”

“कुछ सामान उधर पड़ा है , मुझे मालूम है।” मैंने धुएाँ में अपनी झुाँझलाहि मनकालते हुए कहा, “उसे मुझे अभी बार्र् में ◌ेर्खना है।”

मैं ◌र्ो-एक कर्म गुसलखाने की तरफ बढ गया, पर र्रवाज़े से आगे नहीं गया। वह सन्दल सोप की मिमकया हाथ में मलये आईने में अपने को ◌ेर्ख रही थी। सन्तुष्ट होकर मक आईने में उसका रूप वैसा ही नज़र आता है जैसा मक आना चामहए, उसने एक उड़ती नज़र मुझ पर डाली—एक पुरुष की साहसहीनता का उपहास उड़ाती स्त्री की नज़र। मफर बाहर को आती बोली, “मकतनी कीमती-कीमती चीज़ें फेंक रखी हैं आपने इधर-उधर। घर की चीज़ों की कद्र र्रअसल औरतों को ही होती है। मर◌र्ों को तो मकसी चीज़ की कद्र होती ही नहीं।” और वह ◌र्ोनों चीज़ें मेरी तरफ बढाती मुिरा ◌र्ी। “इन्हें कहााँ रख ◌र्ूाँ?”

“यहीं कहीं रख ◌ी्मजए।” मैंने कहा, “या अगर उधर काम में आ सकती हों, तो...”

“ना बाबा! ” वह जैसे अपराध से बचने के मलए मसर महलाती बोली, “मैं मकसी की कोई चीज़ नहीं लेती। शोभा बहनजी को पता चले , तो मन में क्या सोचेंगी?”

“उन्हें पता चले, तभी न वे सोचेंगी?”

वह मफर मुिरा ◌ी्। “आप क्या उन्हें बताएँगे नहीं? वे पूछेंगी नहीं आपसे मक फलााँ चीज़ कहााँ गयी, या आपने मकसे ◌े् ◌ी्?”

वह जाने ◌ा्ाँतों पर ममस्सी मलती थी या क्या —उसके ◌ा्ाँतों की र्रिें काली हो रही थीं। ◌ा्ाँतों के अन्दर से ज़बान की नोक मुिराने पर बाहर झााँक जाती थी।

“काम में आ सकती हों , तो सचमुच रख लीमजए।” मैंने कहा, “यहााँ बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं जो...”

“ना बाबा! ” वह मफर उसी तरह बोली, “शोभा बहनजी से तो मैं मााँगकर ले भी सकती थी। पर उनके पीछे से उनकी कोई चीज़ मुझे नहीं लेनी है। कल को आप लोग कभी घूमने के मलए ही यहााँ आयें और शोभा बहनजी ◌े्खें मक उनकी कोई चीज़ मेरे पास पड़ी है , तो वे मन में न जाने इसका क्या मतलब मनकालेंगी?” और अपनी मुिराहि को होंठों में ही र्बाए उसने कहा, “अच्छा, आप लोग कभी ममलने के मलए तो आया करेंगे न?”

पर इससे पहले मक मैं जवाब ◌े्ता, ज़ीने पर कोहली के पैरों की आवाज़ सुनाई ◌े् गयी। वह इससे थोड़ा सकपका गयी—साथ उसे ध्यान हो आया मक कुछ ◌े्र पहले वह हमेशा के मलए उस घर से जाने की बात कर रही थी। “शोभा बहनजी से मेरी नमस्ते कह ◌ी्मजएगा।” वह जल्दी से ◌ो्नों चीज़ें रखकर बाहर मनकलती बोली, “पता नहीं मफर कभी उनसे मुलाकात होगी या नहीं। मैं पता नहीं इसके बा् कहााँ रहाँ, आप लोग कहााँ रहें...मेरी नमस्ते ज़रूर कह ◌ी्मजएगा।”

कोहली ऊपर पहुाँच गया था। वह उसके सामने से मनकलकर अपने कमरे में पहुाँच गयी। कोहली ने एक हारी-सी नज़र मुझ पर डालकर उसे अन्दर जाते ◌े्खा और गन्दले पानी में चुपचाप गोता लगा जाने की तरह उसके पीछे जाकर अन्दर से चिखनी लगा ली।

मैंने भी वही मकया—उसी तरह अपने कमरे की चिखनी लगा ली। सोचा,

'अच्छा है कोहली ने मुझसे बात नहीं की, नहीं तो मैं खामखाह उसके सामने कुछ अव्यवव्हथथत महसूस करता और वह भी शायर् कुछ ज़्या ार् ही शक अपने मन में लेकर जाता। कुछ ेर्र मैंने सुनने की कोमशश की मक शायर् उधर मफर से उनका लड़ाई-झगड़ा शुरू हो। पर वहााँ ऐसी खामोशी छाई थी जैसे उन ेर्ोनों ने अन्दर जाते ही अपनी-अपनी जगह सााँस रोककर बैठे रहने का समझौता कर मलया हो। अगर मैंने अपनी आाँखों से उन्हें अन्दर जाते न ेर्खा होता, तो मुझे लगता मक उस पोशदन में उस समय कोई है ही नहीं। इससे अपने फशद पर चलते हुए मुझे अपने पैरों की आवाज़ कुछ ज़्या ार् ही ऊाँची—बव्हि कुछ हर् तक डरावनी महसूस होने लगी। मैं कोमशश करके हलके पैरों चलता बराम ेर् में आ गया।

मेरा मसगरि मबना मपये झड़-झडक़र उाँगमलयााँ जलाने को आ रहा था। उसे फशद पर मगराकर मैंने पैर से मसल मर्या। मन को मफर एक बार तैयार करना चाहा मक मबखरे सामान का कुछ कर सकूाँ। पर हाथों में उसके मलए उत्साह नहीं ला सका। वह सब सामने होते हुए भी जैसे मेरे मलए एक ऐसा अतीत था मजसे समेिने का तर ूर् मुझसे नहीं बन पड़ रहा था। मन कह रहा था मक यमर् मकसी तरह उस सबको समेि भी मलया जाए तो क्या उसे साथ ढोने का उत्साह मैं अपने में ला पाऊाँगा?

'मसफद एक रात बीच में है ,' मैंने सोचा। 'तभी तक इन सब चीज़ों से मकसी न मकसी रूप में जुड़े होने की मजबूरी है। कल एक बार यहााँ से मनकल जाने के बार् इनके सम्बन्ध में सोचने की मजबूरी भी नहीं रहेगी। मुझे तब तक कुछ करना है , तो यही मक बीच का समय मकसी तरह मनकाल ेर्ना है।'

मैंने बराम ेर् में आकर कुमसदयों को एक तरफ घसीि मर्या तामक वहााँ पलाँग मबछाने की जगह हो जाए। कमरे में पलाँग मबछाने के मलए उन सब चीज़ों को नये मसरे से इधर-उधर हिाना पड़ता। पलाँग की मैली नेवाड़ पर पड़े ेर्ाग बराम ेर् की मसमिी हुई रोशनी में ज़्या ार् भोंडे और मघनौने लगे। मैिरेस, चार्र, तमकया और रजाई पलाँग पर पिककर मैंने उन ेर्ागों को ढाँक मर्या। मिमफन-कैररयर खोलकर जल्दी-जल्दी ठंडा खाना मनगल मलया—जैसे मक वह एक जेल के अन्दर अपनी सज़ा के आव्हखरी मर्न का खाना हो। उसके बार् मबस्तर को ठीक मकया और ज़बरर्स्ती नींर् लाने के मलए बमत्तयााँ गुल करके लेि गया।

पर नींर् नहीं आयी। इस करवि, उस करवि, सीधे, उलिे, मकसी भी तरह नहीं। लग रहा था जैसे वह अतीत मजसे पीछे कमरे में छोडक़र मैंने बीच का र्रवाज़ा बन्द कर मलया है , वह मेरी ही तरह उस तरफ करविें बर्ल रहा हो। बार-बार मुझे एहसास करा रहा हो मक मेरी कोमशश के बावजूर् वह मुझसे

कि नहीं है। वह वहाँ है —उतना-उतना ही सजीव, मनमित और प्रताडऩामय। मजस कमरे में उसे बन्द कर मर्या गया है, वह कमरा मेरे अन्दर आ समाया है और मकवाड़ मभड़ा लेने या चिखनी लगा लेने से मैं अपने को उससे मि‍ु नहीं कर सकता।

न जाने मकतना समय नींर् लाने की कोमशश में मनकल गया। नींर् की मिमकया पास में नहीं थी, नहीं तो उन्हीं के सहारे सो जाने की कोमशश करता। बहुत पहले एक बार एक शीशी लाकर रखी थी। कनदल बत्रा के मना करने के बावजूर्। उसमें से एक मिमकया एक बार खाई भी थी पर बार् में वह शीशी घर में मर्खाई ही नहीं ◌र्ी। शायर् शोभा ने उठाकर कहीं रख ◌र्ी थी, या फेंक ◌र्ी थी। यह शायर् उसने इसमलए मकया हो मक शीशी के बाहर मोि लाल अक्षरों में छपा था —ज़हर। शोभा ऐसी चीज़ों से बहुत डरती थी, मजनमें जान ले लेने की क्षमता हो—मबच्छू-साँप से लेकर गैस के स्टोव तक। इसीमलए वह कोयले जला-जलाकर हाथ काले करती रहती थी। उस समय भी जैसे वह उन्हीं काले हाथों से मेरे अन्दर के कमरे में रखी एक-एक चीज़ को उठाकर ◌र्ेख रही थी। मैं व्खडक़ी के शीशे पर आँखें गड़ाये अपना ध्यान झरने की आवाज़ पर केव्न्द्रत करने की कोमशश कर रहा था। पर उस आवाज़ से ज़्या◌र्ा ध्यान खींच रही थी वह खामोशी जो र्रवाज़े की र्ररों से सिी पीछे कमरे की मुर◌र्ा हलचल का आभास ◌र्े रही थी। ज़रा ◌र्ेर आँख मूँर्ते ही लगने लगता था मक शोभा ने वह आईना अपने हाथ में उठा मलया है मजसमें थोड़ी ◌र्ेर पहले शार◌र्ा अपना चेहरा ◌र्ेख रही थी। उसे रखकर वह पलाँग की नेवाड़ कसने लगी है। डाइमनंग िेबल की चाइयों को खोलकर ◌र्ेखने लगी है। मसफद िाउज़-र्पीकिो में बड़े-बड़े कोयलों को तोडक़र उनके िुकड़े करने लगी है। तब मैं आँखें खोलकर मफर सामने के अ◌ाँधेरे को ◌र्ेखता। लगता मक झरने की आवाज़ के साथ-साथ पानी के रास्ते में खड्ड में उतरा जा रहा हाँ। मेरे पीछे-पीछे बॉनी अपने किो में मसमिी चल रही है। वह पीछे से आवाज़ ◌र्ेकर मुझे रोकना चाहती है। कहना चाहती है मक ज़रा-सा पाँव मफसल जाने से मैं खड्ड में मगरकर चूर-चूर हो सकता हाँ। पर मुझे लौिकर उसी रास्ते चढाई चढऩे के मवचार से ही र्हशत होती है। मैं मवश्वास मकए रहना चाहता हाँ मक खड्ड का वह रास्ता ही आगे चलकर सीधी सडक़ में बर्ल जाएगा। मफर सहसा मैं चौंक जाता। कमरे में कोई खिका न होने पर भी लगता जैसे वहाँ खिका हुआ हो। आभास होने लगता मक गुसलखाने के पीछे की सीढी से शार◌र्ा कमरे में चली आयी है। कोहली को बाहर रखकर उसने अन्दर की चिखनी लगा ली है और कमरे की एक-एक चीज़ को उठाकर ◌र्ेख रही है। परख रही है मक वह उसके मकसी काम आ सकती है या नहीं। चीज़ों को रखते-उठाते हुए उसकी आँखें मकसी और चीज़ को भी खोज रही हैं और उसी खोज में उसने अपनी आँखें र्रवाज़े की र्रार से सिा ली हैं। मैं तब तीन-चार तरह से करवि बर्लकर उस सबको मर्माग से झिकने की कोमशश करता।

अपने मसर को हि-हि तमकये पर पिकता मक क्या मकसी भी तरह मुझे नींर् नहीं आ सकती?

ोर्-तीन-चार हि-हि सफेर् चकत्ते व्हखडक़ी के शीशे पर आ जमने से लगा मक बाहर मफर बरफ मगरने लगी है। शाम तक बरफ के आसार नहीं थे, इसमलए थोड़ा अिायद भी हुआ। कोमशश करके ोर्खने से हवा में उड़ते हि-हि फाहों की झलक भी मर्ख गयी। 'चलो, जाने से पहले एक बरफ और ोर्ख ली,' इस ख्याल में मैंने अपने मन को रुझा लेना चाहा। बरफ बहुत हिी थी। मफर भी अाँधेरा उन छिो-छिो रेशों की उड़ान से भरा-भरा लग रहा था। सडक़ की खामोशी िि गयी थी। उस पर कोई एक या ोर् व्यव्हि जल्दी-जल्दी चलकर जा रहे थे—शायर् बरफ से बचकर जल्दी से घर पहुाँचने के मलए। 'शायर् चेरी और लारा होंगे,' मैंने सोचा, 'आज भी खाने के बार् रोज़ की तरह सैर करने मनकले होंगे।' पर तभी लगा मक आवाज़ उनके क्विादर की तरफ़ न जाकर मबिुल ोूसरी तरफ़ जा रही है। मैंने ध्यान हिा मलया।

व्हखड़मकयों पर बरफ के अलावा सीलन भी फैल गयी थी—मेरे आसपास की हवा भी सीलन से भारी होने लगी थी। ोर्-एक बार सीलन की खुशबू अपने अन्दर खींचने के बार् मैंने मफर अपने को तमकये पर ढीला छोड़ मर्या। अाँधेरे और खामोशी में मछपी वही हलचल मफर से शुरू हो गयी। शोभा—मबस्तर में करवि बर्लती, कॉमलक से कराहती और कनदल बत्रा की र्वाई लेने से इनकार करती। शारोर्—िाउज़ की हुकें खोलकर अपने हाथों से आज़माती मक उसका शरीर अब तक मकतना युवा है। कोहली —अधनींोर्ी आाँखों से िैकबोडद पर बड़ी-बड़ी रकमों का जोड़ करता। कॉमन रूम से गुज़रते पैर—बरफ के गीलेपन की छाप छोड़ते। िोनी व्हिसलर—किो की जेबों में हाथ डाले ग्रेस के शब्द कहता। चेरी और लैरी—कामन रूप में अलग-अलग व्हखड़मकयों के पास खड़े। ममसेज़ ज्ाफ्रे— आधा मेकअप मकए अपनी आई-ब्रो पैंमसल ढूाँढती। मजनी ब्राइि—नोमिस बोडद पर नोमिस मपन करता। रोज़ ब्राइि—माथे पर त्यौरी डाले मंच से ग्रीन रूप में आती। पार्ी बेन्सन—छड़ी हाथ में मलए अकेला सडक़ पर घूमता। ममसेज़ ोर्ारूवाला —कई तरह की कास्मेमिक्स की शीमशयााँ मलये माल से उतरकर आती। माली िाउन— भरी हुई खाने की मेज़ पर बैठकर चावल का एक-एक ोर्ाना चुगती। बॉनी हाल—बरफ के गोले बना-बनाकर घिाी में उछालती। जैने व्हिसलर...

मैं मबस्तर में बैठ गया। लगा मक लेिे रहने से इस मनरन्तर चलते पररदृश्य से नहीं बचा जा सकता। नीचे फशद पर पााँव रखने से फशद काफी ठंडा लगा। साथ ऐसा आभास हुआ जैसे र्रवाज़े के उस तरफ कमरे में कोई कराह रहा हो। आवाज़ इतनी सजीव थी मक उसे अपने मर्मागी मफतूर का महस्सा

नहीं माना जा सकता था। मैंने कुछ ◌ेर् रुककर िोह ली। मन में हि-सा डर भी आ समाया। आवाज़ बीच में कुछ ◌ेर् रुकी रही पर यह मवश्वास होने तक मक वह शायर् भ्रम ही हो , मफर से सुनाई ◌ेने लगी। मैंने र्वाज़ा खोलकर जल्दी से कमरा पार मकया और बत्ती जला ◌ी। बिन की तरफ़ जाते हुए केतली पैर से िकराकर उलि गयी थी। रोशनी होने पर वही सामने महलती नज़र आयी। बाकी चीज़ें उसी जड़ता में यहाँ-वहाँ पड़ी थीं मजसमें बत्ती बुझाने से पहले उन्हें छोड़ा था। पर 'हाय-हाय' की मरी-सी आवाज़ अब सुनाई ◌े रही थी। वह आवाज़ कोहली की थी—साथ के पोशदन में।

मैं कुछ ◌ेर् जड़-सा खड़ा उस आवाज़ को सुनता रहा। आवाज़ काफी हिी थी। मफर भी बाहर मगरती बरफ के सन्नािे में वह आसपास के पूरे वातावरर् को कुरेर्ती-सी महसूस होती थी। जैसे उसकी चार◌ीवारी में मजतना कुछ था, उस सबके अन्दर से वह आवाज़ मनकल रही हो—मेरे समेत। मेरी िाँगें कुछ-कुछ काँप रही थीं—न जाने सर◌ी से, या बत्ती जलाने से पहले के डर की वजह से खुि गला, पपमडयाए होंठ, जलती आँखें, पर शरीर मफर भी सुन्न। मैंने घड़ी में वक़्त ◌ेखा—कुल सवा र्स। आियद हुआ मक इतना कम वक़्त कैसे हुआ है—घड़ी कहीं रुक तो नहीं गयी? उसे कानों के पास लाकर उसकी आवाज़ सुनी—मिक्-मिक्-मिक्। साथ ही अपने मर्ल की धडक़न भी महसूस की। वे ◌ोनों आवाज़ें जैसे एक ही थीं —एक-◌ूसरी की प्रमतध्वमनयाँ। घड़ी की सूइयाँ जैसे मेरी धडक़नों के महसाब से आगे बढ रही थीं —एक-एक सेकेंड। मिक्-मिक्-मिक्। मैंने घड़ी को कलाई से उतारकर चाबी ◌ी और मफर से लगा मलया। कोहली की आवाज़ अब पहले से और हिी पड़ गयी थी।

मुझे लगने लगा जैसे वह आवाज़ हिी पड़ते-पड़ते धीरे-धीरे मबिुल खामोश हुई जा रही हो—हमेशा के मलए। अपनी मपंडमलयों की ठंडक मुझे घुिनों से होकर जाँघों में फैलती महसूस हुई। लगा जैसे मक मैं अपने और बाहर मकसी चीज़ के मनरन्तर चुकते जाने का साथी हाँ —धीरे-धीरे, मिक्-मिक्-मिक्, एक-एक कराह के साथ वह चीज़ अपने अन्त की ओर बढ रही है। अगर उस प्रमिया को रोकने के मलए कुछ मकया नहीं जाता, तो कुछ ही ◌ेर् में उसे रोक सकने की सम्भावना ही नहीं रह जाएगी। मैंने एक असहाय-सी नज़र कमरे में मबखरी चीज़ों पर डाली। क्या कुछ ऐसा मकया जा सकता था मजससे उस मबखराव को एक व्यवथथा में बर्ला जा सके? या उस अव्यवव्थथत व्थथमत से छुिकारा पाया जा सके। अन्दर कहीं एक आवेश था —उन सब चीज़ों को एक-एक बार ठोकर लगाकर परे हिा ◌ेने का, परन्तु उस आवेश की तह में थी एक मनव्िय उ◌ासीनता मजसके कारर् एक उँगली तक महलाने से मवतृष्णा हो रही थी। 'सुबह के बार् सब ठीक हो जाएगा,' मैंने अपने को आश्वासन ◌ेना चाहा, 'यह मजतनी भी घुिन है , इस घर को छोड़ ◌ेने तक ही है। इसके बार् एक नयी और

अनजानी मज़न्दगी की खोज अपने आप हर चीज़ में एक गमत ले आएगी—एक ऐसी गमत जो इस तरह के अवरोध के मलए अवसर ही नहीं रहने ◌ेर्गी।'

मैंने बत्ती बुझा ◌ेर्ी। कोहली की आवाज़ सचमुच रुक गयी थी। मैंने प्रतीक्षा की मक वह आवाज़ मफर से शुरू हो , तो मैं अपने मबस्तर की तरफ़ लौौँ। पर काफी ◌ेर्र कान लगाये रहने पर भी वह आवाज़ मफर सुनाई नहीं ◌ेर्ी, तो अपना उस तरह अ◌ाँधेरे कमरे में बन्द होना मेरे अन्दर एक वास्तमवक डर का रूप लेने लगा। लगने लगा मक सुबह तक कहीं ऐसा कुछ न हो जाए मजससे र्वाज़े का अन्दर से बन्द होना ◌ेर्ूसरों के मलए उस व्थथमत को सुलझाने, या कम से कम जान सकने में, बाधा बन जाए। मैंने एक बार मफर से बत्ती जलाकर र्वाज़े की चिखनी खोल ◌ेर्ी। मफर ◌ेर्ोबारा बिन बन्द मकया और रास्ते में मबखरी चीज़ों में पाँव बचाता एक चोर की तरह अपने मबस्तर में लौौ आया।

बरफ तब तक पहले से तेज़ हो गयी थी।

सुबह मैं काफी ◌ेर्र से उठा। नींर् ◌ेर्र से नहीं खुली—नींर् तो रात-भर ठीक से आयी ही नहीं थी—अधनीं◌ेर्ी जड़ता के खुमार ने ◌ेर्र तक मबस्तर से मनकलने नहीं मर्या। बरफानी मौसम ने समय का अनुमान भी ठीक से नहीं होने मर्या। व्खडक़ी के काँचों पर फैलती पथरीली सफे◌ेर्ी उठने के क्षर् को ◌ालते जाने में सहायता करती रही। साथ अपने अन्दर का यह मवचार मक उन काँचों को ◌ेर्खते हुए जागने की वह आव्खरी सुबह है।

साथ के पोशदन में काफी पहले से हलचल शुरू हो गयी थी। कुमसदयों के मघसिने की आवाज़ें, शार◌ेर्ा के चलने की खिर्-खिर् और कोहली के नाश्ता करने की त्वाप्-त्वाप्-त्वाप्। शार◌ेर्ा और कोहली की बातचीत के ◌ुकड़े सुनाई ◌ेर् जाते थे, उनसे भी लगता था मक घर के उस पोशदन में मज़न्दगी अपनी पहले की सतह पर लौौ आयी है। ◌ेर्ोनों में से ज़्या◌ेर्ा बात शार◌ेर्ा ही कर रही थी —वहाँ से साथ-साथ चलने की तैयारी के मसलमसले में कोहली 'ठीक है , ठीक है, जैसे ठीक समझती हो, कर लो,' में एक तरह का आत्मसमपदर् भी था और मकसी अवांमछत घिना से अपने को बचा लेने का सन्तोष भी। एक तीसरा व्यव्हि जो उन ◌ेर्ो के साथ सामान बाँधवाने में सहायता कर रहा था, वह था भूपतमसंह। सुबह के साथ शायर् उसे मफर से नौकरी पर बहाल कर मर्या गया था।

उठने के बार् अपनी तैयारी पूरी कर लेने में मुझे ◌ेर्र नहीं लगी। एक बार मनर्दय कर लेने के बार् मक सामान को तीन तरह से अलग करना है , सब कुछ जैसे अपने आप होता गया। एक महस्सा था साथ ले जाने का। ◌ेर्ूसरा

ो बक्सों में बन्द करके मगरधारीलाल के पास छोड़ जाने का। तीसरा वहीं बैरों-चपरामसयों में बाँि े ने का। मकसी भी चीज़ को लेकर मैंने ज़्याा नहीं सोचा। उठाया , ेखा और तय कर मर्या मक उसे मकस महस्से में जाना है। मुझे स्वयं आियद हुआ मक उठने के पैंतालीस ममनि के अन्दर वह सारा काम , जो हफ्तों से मुझे एक मुसीबत नज़र आ रहा था, कैसे पूरा हो गया। अब मसवाय मबस्तरबन्द के कुछ भी बाँधना शेष नहीं था। जो ो-चार ज़रूरत की चीज़ें बाहर थीं , उन्हें चलते वि साथ डाल लेना था, बस।

नाश्ता आया रखा था। उसे भी उसी तरह मनगल मलया जैसे रात का खाना मनगला था। उसके बा जैसे हर चीज़ से फाररग होकर कुछ ेर कुसी पर सुस्ता मलया। सामने िूल की सडक़ से कुछ ररक्शा और सामान-ल े कुली मनकलकर जा रहे थे। जो लोग सुबह की गाड़ी से जाने को थे , उन्होंने शाय रात में ही अपनी तैयारी कर ली थी। बरफ की सफेी को लाँघते पमहयों और पैरों को कुछ ेर ेखते रहने के बा जैसे अपनी तैयारी के आव्हखरी मरहले को पार करने के मलए मैं उठ खड़ा हुआ। जल्दी से शेव करके मसर-मुँह धो मलया और सफर के कपड़े पहनकर चलने से कई घंि े पहले ही अपने को चलने की मन:व्हथथमत में ले आया।

एक खालीपन अब भी था। परन्तु वह खालीपन एक अन्तराल था मजसे कई तरह से भरा जा सकता था—कमरे में िहलकर या बाहर बरफ में घूमकर। वैसे कुछ ेर के मलए एक बार िूल भी जाना था। वहाँ से अपना चैक लेना था। मगरधारीलाल से कहना भी था मक कुछ सामान उसके यहाँ पड़ा रहेगा। हममें से कोई भी जब कभी आकर ले जाएगा। मुझे पता था। मगरधारीलाल इनकार नहीं करेगा। मकसी भी तरह का इनकार उसके स्वभाव में था ही नहीं। उसके मलए अपेमक्षत साहस उसमें नहीं था! वह उन व्यव्हियों में से था मजनकी भलमनसाहत उनमें मकसी तरह का साहस नहीं रहने ेती। अपनी इस साहसहीनता के कारर ही वह िूल में सबका महतमचन्तक बना रहता था। इसीमलए अपने घर की चारीवारी के अन्दर वह सबसे ुखी आर्ममयों में से था। उसकी भलमनसाहत का नाजायज़ फाया सभी लोग उठाते थे। मैं भी पहले कई बार उठा चुका था। इसमलए जाते-जाते एक बार और उठा लेने में मुझे संकोच का अनुभव नहीं हो रहा था। उसका छोिा-सा कमरा जो पहले ही सामान से ला रहता था। ‘हमारे यहाँ सामान बहुत ज़्याा है न?” रत्ना कमरा छोिा होने की बात न कहकर अक्सर इसी चीज़ पर ज़ोर मर्या करती थी। मेरे ो बक्सों से मकतना मघचमपच हो जाएगा, यह सोचकर मुझे उस पर तरस भी आ रहा था। वह बेचारा तो इसी ख्याल से हामी भर ेने को था मक शाय ो-एक महीने के अन्दर वह सामान उसके यहाँ से उठा मलया जाएगा। अगर उसे मेरे मन की वास्तमवक व्हथथमत का पता चल जाता मक सामान को मनपिाने का और कोई तरीका न सूझने से ही मैंने उसे बक्सों में भरकर वहाँ छोड़ जाने

की बात सोची है , और मक मेरे मन में कहीं यह बात भी है मक शायर् उसे कभी वहााँ से उठाने की नौबत ही न आये, तो सम्भव था मक वह एक बार मेरे महत में मुझे सलाह ेर्ता मक मैं उसे बुक कराके साथ ले जाऊाँ। पर वह बात उस पर प्रकि करने का मेरा कतई इराेर्ा नहीं था। उसे बेवकूफ बनाकर सब लोग उससे अपना काम मनकालते रहते थे। यह भाग्य उसने स्वयं अपने मलए चुना था, इसमलए मेरे मन में कोई द्वन्द्व नहीं था। 'ेर्ो-एक साल पड़ा रहेगा सामान उसके यहााँ, तो शायर् वह खुर् ही उसे मफंकवा ेर्े , या अपने इस्तेमाल में ले आये, यह सोचकर मैंने बार् की व्हथथमत का समाधान कर मलया था। वैसे एक डर यह भी था मक वह भी कहीं राजो मौसी की तरह एक मर्न ेर्ोनों बक्से (और अपना पूरा पररवार) मलये मकसी ेर्ूर के शहर में मेरी अमानत लौिाने न आ पहुाँचे। 'यह उलझन उसकी होगी, मेरी नहीं ,' इस मवचार से मैंने भमवष्य की उस सम्भावना को भी मर्माग से स्पंज कर मर्या था।

सामान की समस्या को सुलझा लेने के बार् से अपना आप मुझे काफी हिा महसूस हो रहा था। मेरे पााँव अब एक ऐसी अमनमित व्हथथमत की र्हलीज़ तक पहुाँच गये थे मजससे आगे उस अमनमितता को अपने आप मनमितता और वास्तमवकता में बर्ल जाना था। कुछ ेर्र सीिी बजाता कमरे की एक ेर्ीवार से ेर्ूसरी ेर्ीवार तक चक्कर कािता रहा। कुछ ेर्र व्हखडकी से बाहर झााँकता हुआ उसके चौखिे पर ताल ेर्ता रहा। समय धीरे-धीरे बीत रहा था। लेमकन मुझे उसके जल्दी बीतने की उतावली नहीं थी। मैं पहली बार—जो मक वैसे आव्हखरी बार भी थी—अपने को उन ेर्ीवारों के घेरे में उतना हिा महसूस कर रहा था, जैसे वहााँ रहते पहली बार मैं मैं था—मनोज सक्सेना। (जैसे मक इस नाम का अपना कोई अथद हो) —जो मक मशवचन्द्र नरूला या मकसी और का रूपान्तर मात्र नहीं था। अपने अतीत, वतदमान और भमवष्य तीनों से मैं अपने को एक साथ मुि महसूस कर रहा था। अब फशद की र्री या र्रवाज़ों के परेर्ों पर पड़ी न मकसी और छाप से मुझे वास्ता था, न अपनी छाप से। इतने मर्न वहााँ रह चुकने के बार् मैंने अपने को मफर से कोरा कर मलया था।

कुछ ेर्र बार् कमरा बन्द करके ज़ीने पर आया , तो कोहली से मुलाकात हो गयी। वह नीचे स्टोर से पुरानी रव्हस्सयााँ लेकर आ रहा था। हर साल छुमियों में इस्तेमाल करने के बार् वह उन्हें मफर वहीं बन्द कर ेर्ता था। "बहुत खुश नज़र आ रहे हो! " उसने व्हखमसयानी मुिराहि से अपने चेहरे की नहसत मछपाते कुछ ईष्याद के साथ कहा, "बीवी के पास जा रहे हो, इसमलए?"

मैंने मुाँह से कुछ नहीं कहा। बायीं आाँख र्बाकर उसकी बात का उत्तर ेर्े मर्या और झपिो से नीचे उतर आया। बाहर सब तरफ़ बरफ की सफेर्ी फैली नज़र आ रही थी। रात में बरफ चार-चार इंच से ज़्याेर्ा मगरी लगती

थी। ऊपर सडक़ पर पहुाँचकर पीछे पगडंडी पर अपने पैरों के मनशानों को ेर्खा—सामने उन पमहयों और पैरों के मनशानों को जो सडक़ से गुज़रकर जा चुके थे। बरफ-ढके रास्ते में खुभे-खुभे स्याह मनशान बरफ से ज़्याेरा ठंडे और उेरास लग रहे थे। 'थोड़ी ेर्र में वे सब मनशान मपघल जाएाँगे', यह सोचकर मुझे मसहरन हुई। पर अपनी मन:व्हथथमत बर्लने न ेर्ने के मलए मैं उसी तरह सीिी बजाता कच्ची बरफ को रौंर्ने लगा।

सडक़ के तीसरे मोड़ पर काशनी से भेंि हो गयी। वह वहााँ अकेली खड़ी थी —नीचे घािी की तरफ़ झुककर न जाने क्या ेर्खने की कोमशश करती। मुझे ेर्खकर वह मुिरा ेर्ी थी। जैसे साथ-साथ खड़े होने के बार् से एक अनकहा सम्बन्ध हमारे बीच थथामपत हो गया हो। उसकी आाँखों में भी हर बार एक अमतररि उत्सुकता नज़र आयी थी—और एक प्रतीक्षा जैसे मक उसे मेरे कुछ कहने की आशा हो। इसीमलए पास से गुज़रने के बार् मेरी आाँखें पीछे उसकी तरफ घूम जाती थीं —और तब वह भी कुछ उसी तरह पीछे ेर्खती ममलती थी। मैं उस समय भी हर बार की तरह उसके पास से मनकल जाता, पर उसके एक कर्म अपनी तरफ बढ आने से मेरी चाल धीमी पड़ गयी। "कैसे खड़ी हो यहााँ?" मैंने जैसे बार-बार अपनी ज़बान पर ेर्ोहराया हुआ प्रश्न पूछ मलया।

"ऐसे ही खड़ी थी।" वह बोली, "ेर्ख रही थी मक नीचे कहीं घास हो तो जाकर छील लूाँ।"

उसने मजस तरह कहा, वह एक स्वर अजनबी का होकर भी मबिुल अजनबीपन का नहीं था। उसकी आाँखों में मफर वही चमक भी आ गयी थी जो मुझे अपने को बााँधती-सी लगी। वह सुडौल शरीर की काफी सुन्दर स्त्री थी। ेर्ो साल पहले उसे ेर्खते थे , तो मबिुल लडक़ी-सी लगा करती थी। तब उसके चेहरे पर वे हिी झाइयााँ नहीं थीं जो इधर कुछ महीनों से झलकने लगी थीं।

"अब तो िूल में तीन महीने छुमियााँ रहेंगी।" मैंने कहा, "फकीरा भी इस काम में तुम्हारा हाथ बाँिा मर्या करेगा।"

"वह क्या हाथ बाँिाएगा, जी। घर बैठे हुक्का गुडग़ुड़ाता रहा करेगा।" उसकी आाँखों ने जतला मर्या मक वह जानती है , मैं खामखाह यह बात कह रहा हाँ। "और मफर व्हिसलर साब की कोठी पर उसकी ड्यिूी भी रहेगी। व्हिसलर साब तो छुमियों में यहीं रहेंगे , नहीं?"

"हााँ, यही रहेंगे।" मैंने कहा, "हर साल यहीं रहते हैं।"

"हााँ, पार साल यहीं थे। उससे परले साल भी थे। पर इस साल का पक्का

पता नहीं। कोई कहता है जेनी मेम साब उन्हें नौकरी छुड़वाकर अपने साथ मवलायत ले जा रही है। कोई कहता है चेरी साब और जीफरी मेम साहब ने ममलकर कोई सामज़श की है मजससे उन्हें छोडक़र जाना पड़ रहा है। कोई कुछ कहता है , कोई कुछ। आपको तो पता होगा।”

“मुझे कुछ भी पता नहीं है। ” मैंने कहा, “मेरा ख्याल तो यही है मक मफलहाल वे छोडक़र कहीं नहीं जा रहे। लोग ऐसे ही बातें उड़ाते रहते हैं।”

उसके चेहरे से लगा मक उसे मेरी बात पर मवश्वास नहीं आया। “मवसलर साब बहुत अच्छे आर्मी हैं।” वह भााँपती नज़र से मुझे ◌ेर्खती बोली, “वे चले गये तो ◌ूर्सरा कोई हेडमास्टर पता नहीं कैसा आएगा। मवसलर साब ड्यिूी सख्त लेते हैं , पर मजस आर्मी का काम हो, उसी से। पहला हेडमास्टर काम में ढील बहुत ◌ेर्ता था, पर समझता था मक एक आर्मी को चपरासी लगाया है , तो उसके सारे घर को ही चाकर रख मलया है अपने यहााँ। आज मवशनू को भेज ◌ेर्ना, आज काशनी को भेज ◌ेर्ना। आर्मी भी वह बस ऐसा ही था। उसकी ड्यिूी ◌ोर् सो, ◌ोर् ही, उसके यहााँ आने-जानेवाले मेहमानों की भी ड्यिूी ◌ोर्। मैंने तो परमात्मा का शिु मकया था जब वह गया था यहााँ से।” मफर पलभर मुझ पर आाँखें गड़ाये रहने के बार् उसने कहा, “कुछ लोग तो यह भी कहते हैं जी, मक आप ही ने बड़े अफसरों से कह-कहाकर...।”

मैंने हाँस मर्या, तो वह जैसे ज़रूरत से ज़्या◌ार् बात कर जाने के डर से चुप हो गयी। ध्यान से ◌ेर्खती रही मक उसने कुछ ऐसा तो नहीं कह मर्या मजसका कुछ गलत नतीजा भुगतना पड़े। “तुमसे यह मकसी ने नहीं कहा मक मैंने खुर् ही अपनी छुिी कर ली है यहााँ से ?” मैंने आश्वासन ◌ेर्ते स्वर में कहा।

“हााँ, यह भी सुना है।” वह बोली, “मेरा घरवाला तो यही कहता है मक तनखाह कमती ममलने से आपने नौकरी छोड़ ◌ीर् है। पर ◌ूर्सरे लोग और भी बातें कहते हैं। आप क्या सचमुच छोडक़र जा रहे हैं ?”

“हााँ, यह आज मेरा आव्खरी मर्न है यहााँ।” मुझे लग रहा था मक मेरे अन्दर मफर कोई चीज़ मुरझाई जा रही है। जो हिापन लेकर घर से चला जाऊाँगा यहााँ से।”

“अगले साल लौिकर नहीं आएाँगे ?”

“नहीं।”

उसके होंठ र्ब गये। मकसी तरह की मनराशा से नहीं , सहज स्वीकृमत के

भाव से। उस मुद्रा में उसका धीरे-धीरे साँस लेना मुझे बहुत आकषदक लगा।

“सामान बाँधने के मलए आर्मी की ज़रूरत तो नहीं आपको?” उसने पूछा।

“नहीं। सामान सब बाँध गया है। बस अब उठवाना है और चल ◌ऱ्ेना है।” कहते हुए मैंने सोचा मक जो सामान मैंने बााँ◌िने के मलए अलग कर रखा है , क्यों न वह अकेली उसी को ◌ऱ्ेकर उससे छुिकारा पा जाऊाँ? उससे र्स आर्ममयों के घर पर आने का झंझि भी बचेगा और मकसे क्या मर्या जाए , यह सोचने की उलझन भी नहीं रहेगी। “कुछ चीज़ें जो साथ नहीं ले जा रहा, वे बाहर पड़ी हैं। फकीरा अगर खाली हो तो उससे कहना डेढ-◌ऱ्ो घं◌ि में मकसी वक़्त आकर ले जाए—तीन बजे से पहले। तीन बजे तक मैं मनकल जाऊाँगा।”

उसने मसर महला मर्या। उसी सहजता से। “कह ◌ऱ्ूाँगी उससे, वह नहीं खाली होगा, तो मैं आकर ले जाऊाँगी।”

उसके पास से आगे आकर मैं तब भी अपने को मुडक़र ◌ऱ्ेखने से नहीं रोक सका। पर वह उस समय नहीं ◌ऱ्ेख रही थी। मेरे आगे आने के साथ ही पहले की तरह मफर घिाी में झााँककर ◌ऱ्ेखने में व्यस्त हो गयी थी।

◌िल में मुझे ज़्या◌ऱ्ा समय नहीं लगा। चेक तैयार था। मजन कागज़ों पर हस्ताक्षर करने थे, वे भी तैयार थे। मगरधारीलाल ने समझाने की कोमशश की मक मकस चीज़ के मकतने पैसे किो गये हैं। “जो भी महसाब बना है, ठीक है।” कहकर मैंने चेक जेब में डाल मलया। मैंने बक्स रखने की बात उससे कही तो मगरधारीलाल थोड़ा भावुक हो गया। जैसे मक उसे अपना इतना मनजी मानने के मलए वह मेरे प्रमत आभारी हो। “और भी कोई काम हो तो मुझे जाकर मलख ◌ऱ्ेना। जब भी यहााँ आओ, मेरे पास ही ठहरना।” उसका कहने का ढंग ऐसा था जैसे मुझे अपने यहााँ ठहरने का मनमिऱ् ◌ऱ्ेकर काफी साहस का काम कर रहा हो, “बीच-बीच में मचट्ठी ज़रूर डाल मर्या करना।”

फ्तर से मनकलकर एक बार सोचा मक मजन-मजन लोगों के क्वािदर पास में हैं, उनसे जाकर ममल आऊाँ। पर यह सोचकर ◌िाल मर्या मक औरों से भी उसी तरह की बातें सुनने से बचे रहना ही अच्छा है। लौिते हुए आक्लखरी बार कामन रूम में जाकर अपने खाली मपजन-होल को ◌ऱ्ेख मलया जैसे मक उस सारी इमारत से बस उतना ही महस्सा, नौ गुना नौ इंच का, मेरा अपना था। उसके नीचे मेरे नाम का अधफिा कागज़ मचपका था। वह मजतना उखाड़ सका, उखाड़ मर्या। मजतना नहीं उखड़ा, उतने को नाखून से कुरेऱ् मर्या। लौिते हुए बराम◌ऱ्े में जेम्स मर्खाई ◌ऱ्े गया। ‘तैयारी हो गयी

जाने की?' के मसवा उसने कुछ नहीं पूछा। मजस तरह पाँव पिकता वह पास से मनकल गया उससे लगा जैसे उसे मकसी मछपी हुई चीज़ का सुराग लग गया हो मजसे वह जल्दी से जाकर झपि लेना चाहता हो।

ग्राउंड से गुज़रते हुए मैंने एक नज़र उस पूरे फैलाव पर डाल ली। बरफ, इमारत के पत्थर, चार-चार, आठ-आठ की िोमलयों में ग्राउंड पार करते लडक़े। मगरजाघर, िमनस किोद और हाल की सीमढय़ाँ। पेमवमलयन की खाली बेंचें, लान-मोअर और मघसिकर चलती ममसेज़ पाकदर। मुझे ेर्खकर ममसेज़ पाकदर का रुख ूसरी तरफ़ हो गया। मुझे लगा जैसे वह सारा दृश्यपि बरफ का बना हो मजसे बस अब थोड़ी ही ेर्र में मपघलकर बह जाना हो। उस सब कुछ समेत जो उस समय वहाँ नहीं भी मर्खाई ेर् रहा था। मैं आमहस्ता-आमहस्ता चलता हुआ गि से बाहर आ गया—जैसे उस दृश्यपि के साथ मपघलने से बचा अकेला व्यव्हि।

मफर वही बरफ से ढकी सडक़, वही पैरों और पमहयों के मनशान, वही मैं, पर मन पर एक झीना परर्ा उर्ासी का उतर आया था। मेरा इस बार उस सडक़ से लिौना सचमुच आव्हखरी बार लिौना था। एक-एक कर्म के साथ जैसे पीछे की सडक़ मेरे मलए मरती जा रही थी , और सडक़ के मलए मैं। मुझे एक साथ र्ो तरह का अनुभव हो रहा था—बीत चुकने का और बीतने के थथान से आगे ेर्ख सकने का। अपने को यह मवश्वास मर्लाने के मलए मुझे यह प्रयत्न करना पड़ रहा था मक पहला अनुभव अथथायी है—केवल उन्हीं कुछ क्षर्ों तक सीममत—जबमक ूसरा इसके बार् एक अमनमित समय तक वैसा ही बना रहने को है। लिौकर घर के ज़ीने से चढा, तो खाने का मडब्बा मफर कमरे से बाहर रखा था। इस बार उसे ेर्खकर मन हुआ मक उसे बाहर से ही उठाकर फेंक ूँ। उसे ेर्खना ऐसे ही था जैसे बीते हुए से आगे आकर सहसा मफर अपने को उसके सामने पाना। एक उसाँस के साथ मैंने कमरा खोला। "बस अब र्ो घंिे और इस तरह महसूस हो सकता है," अपने से कहा और गाड़ी के इन्तज़ार में प्लेिफामद की बेंच पर बैठने की तरह अन्दर कुसी में जा धाँसा।

अब मन समय की रफ्तार से उर्ासीन नहीं था। लग रहा था मक उस घर में, या वहाँ से बाहर, कभी समय उतना धीरे-धीरे नहीं बीता। कलाई की घड़ी में सेकेंड की सूई इतनी मररयल चाल से घूमती लग रही थी मक मन होता था मक डायल खोलकर उसे उँगली से घुमाने लगूँ। साथ के पोशदन में कोहली की तैयारी पूरी हो चुकी थी। उसके कुली सामान ढोकर नीचे जा रहे थे। उसे तीन बजे की गाड़ी से जाना था, इसमलए वह काफी हड़बड़ाहि में था। शारर्ा से मफर भी वह बहुत मुलायम ढंग से बात कर रहा था। मजतना गुस्सा था वह सब कुमलयों पर मनकाले ले रहा था। मैंने तीन आर्ममयों के मलए कहा था, तो तुम पाँच आर्मी क्यों आये हो? मैं पैसे तीन

आर्ममयों के ही ूँगा, तुम चाहे और भी ो साथ ले आओ। एक-एक आर्मी एक-एक चीज़ उठा रहा है! तुम लोग समझते हो मक हमारे पास हराम का पैसा है...?

खि्-खि्...थप्-थप्-त्वाप्-त्वाप्...हुई आ:। सामान उतर गया। ताला लग गया। कोहली और शार की आवाज़ भी ज़ीने से उतर गयी। मैंने शिु मकया मक जाते हुए उन लोगों ने मेरा र्वाज़ा खिखिाकर कुछ कहने की ज़रूरत न समझी। ऊपर की पूरी खाली मंमज़ल पर अब मैं मबिुल अकेला था —अपनी खामोशी और अव्हथथरता का अकेला साक्षी।

कमरे में जाने के बार् से उासी का झीना पर धीरे-धीरे गहरा होता गया था। जैसे मेरे अन्दर का कोई अंश ढहकर बैठता जा रहा था मजसे मैं उठाये रखने की कोमशश कर रहा था। "मुझे अब क्यों ऐसा लग रहा है? इसकी तो कोई वजह ही नहीं है ?" बार-बार अपने से यह कहते हुए मुझे झुँझलाहि हो रही थी। "मुझे इस समय सुबह से ज़्याा हि महसूस करना चामहए था। पर मैं तो अपने को सुबह मजतना भी हि महसूस नहीं कर पा रहा! "

एक बार मन में आया मक क्यों न कुछ ेर पहले ही सामान उठवाकर वहाँ से चल ूँ। शाम की बस से जाने का मनिय इसीमलए तो मकया था मक नीचे पहुँचकर बड़ी लाइन का सफर शुरू होने से पहले अपने को ज़्याा सोचने का समय न ूँ। नीचे तक छिोी पहाड़ी गाड़ी में जाने से अपने को इसमलए बचाया था मक आगे कहाँ का मिकि लेना है , इस समस्या का सामना करने से और कुछ समय बचा रहा जा सके। तीन मर्न पहले बुधवानी ने जब सिी के मलए पूछा था , तब उससे कह मर्या था मक मैं एक ोस्त की प्राइवेि गाड़ी में नीचे तक जा रहा हाँ। उसे शायर् लगा था मक पैसे की बचत के मलए ऐसा कर रहा हाँ। पर मन में मेरा कायदिम था मक स्टेशन की मवाइयों से अपने को बचाकर चुपचाप शाम की बस पकड़ ली जाए। नीचे उस समय पहुँचा जाए जब आगे की गाड़ी लगभग चलने को हो। पहला सफर कहाँ तक का होगा, यह मनर्दय उस आव्हखरी क्षर् पर छोड़ मर्या जाए जब मिकिघर की व्हखडक़ी के सामने खड़े होकर मिकि बाबू को पैसे ेने होंगे। पर वही द्वन्द्व मजसके मलए तब अपने को समय नहीं ेना चाहा था, अब चुपचाप कमरे में बैठकर घड़ी को ेखते हुए मन में उभर रहा था —'मुझे यहाँ से आव्हखर जाना कहाँ है ?'

ो बजे तक का समय मकसी तरह मनकाल लेने के बार् उस असमंजस को िेलते हुए वहाँ और बैठे रहना लगभग असम्भव हो गया। 'मुझे यहाँ बन्द होकर बैठने की वजह से ही इतनी अव्हथथरता महसूस हो रही है,' मैंने अपने से कहा, 'एक बार सडक़ पर पहुँच जाने के बार् ऐसा महसूस नहीं होगा।' पर कुमलयों से तीन, पौने तीन बजे आने को कह रखा था। इसमलए तब

तक वहााँ से मनकल चलना सम्भव ही नहीं था। मैं मन में न मसफद उनके आने की प्रतीक्षा कर रहा था, बल्कि साथ ही फकीरे या काशनी के आने की भी, क्योंमक मॉली िाउन से कह रखा था मक साढे तीन बजे क्विादर उसे मबिुल खाली ममलेगा। चाहता था मक उसके आने पर वहााँ के फशद उसे उतने ही साफ ममलें मजतने उस मर्न मजस मर्न पहली बार मुझे वह क्विादर मर्खलाया गया था।

ोर्ो बजे के ज़रा ही ोर्ेर बार् पीछे जमाोर्ार वाली सीढी पर ऊपर आते कर्मों की आहि सुनाई ोर्ी। मैंने जल्दी से जाकर उधर का र्रवाज़ा खोल मर्या। काशनी िीिे हुए मोर्ादना जूते पहने बाहर खड़ी थी। “तुम आयी हो?” मैंने इस तरह उससे पूछा जैसे उसके आने का मवकल्प मेरे मर्माग में रहा ही न हो।

“मेरा आर्मी साब की कोठी पर है।” वह जानी-पहचानी जगह पर आने की तरह अन्दर ोर्ाक्खल होती बोली, “उसे आने में ोर्ेर लग जाती, इसमलए मैं आप ही आ गयी हाँ।”

वह कमरे में आकर एक तरफ़ खड़ी हो गयी। इन चीज़ों की तरफ़ उसने ोर्ेखा भी नहीं जो मैंने छााँिकर अलग कर रखी थीं। खामोश आाँखों से मुझे ोर्ेखती जैसे मकसी चीज़ की प्रतीक्षा करती रही।

“ये सब चीज़ें हैं।” कुछ क्षोर्ों के भोंडे मवराम के बार् मैंने कहा।

उसने उड़ती नज़र से उन सब चीज़ों को ोर्ेख मलया। उसके बार् भी कुछ क्षर् उसी तरह खड़ी रही। मफर कुछ ऐसे भाव से जैसे घर बुलाकर मैंने उसका अनार्र कर मर्या हो, ोर्ो-ोर्ो चीज़ों को उठाकर बाहर ले जाने लगी। मबना मकसी उत्सुकता या आग्रह के। छााँिते समय मुझे प्यामलयााँ , डस्टर और नाड़े उतने बेकार नहीं लगे थे मजतने उस समय लगे। उसका उन्हें उठाना मेरा अहसान लेने की तरह नहीं , मुझ पर अहसान करने की तरह था। मनमवदकार भाव से अन्दर का ढेर बाहर पहुाँचाकर वह मफर मेरे सामने आ खड़ी हुई। “अब जाऊाँ?” उसने कुछ इस तरह पूछा जैसे मक उसे अब भी कहीं लग रहा हो मक मैंने मसफद इतने काम के मलए उसे नहीं बुलाया हो सकता।

कमरे में उसके आने के बार् से ही हरी घास की-सी एक हिी गन्ध भर गयी थी। वह शायर् तब से घास छीलती रहकर आयी थी। मैंने उसके शरीर का आकषदर् पहले भी बहुत बार महसूस मकया था। पर उस समय वह आकषदर् एक चुनौती की तरह सामने था। उसके पूरे हाव-भाव से यह स्पष्ट था मक वह मकसी भी क्षर् मेरे अपनी ओर बढ आने की प्रतीक्षा में है। पर साथ उसमें एक उपेक्षा भी थी—मक कोई भी पुरुष उसके मलए इतना बड़ा

नहीं है मक उसके साथ शारीररक घमनष्ठता को वह बहुत महत्त्व ◌े्।

“और कोई काम तो नहीं है ?” कुछ ◌े्र चुप रहने के बार् उसने मफर पूछ मलया।

“और कोई काम...” मैं कुछ अव्यवव्स्थथथत भाव से अपने आसपास ◌े्खने लगा—मनिय कर सकने से पहले थोड़ा समय लेने के मलए। पूरा घर अकेला था। मैं मर्न-हाड़े वहाँ कुछ भी करता, उसका कोई साक्षी नहीं था। मजस मन:व्स्थथमत में उसके आने से पहले था, उसका कुछ उपचार भी शायर् इससे हो सकता था। वहाँ से चलने से पहले कुछ ऐसा करना मजसे कर सकने से पहले बाधा महसूस होती, उस पूरे वातावरर् के प्रमत अपनी मवतृष्णा प्रकि करने का एक उपाय भी हो सकता था। एक ही झिके में मैं ◌िल से, शोभा से और आसपास की सब चीज़ों से एक तरह का प्रमतशोध ले लेने का एक सुख प्राप्त कर सकता था। ‘क्यों नहीं ?’ मेरा मन अन्दर से मुझे धकेल रहा था। ‘तुम ऐसा क्यों नहीं कर सकते?’ पर मेरी आँखें उसके मैले कपड़ों के भीतर एक और मैलेपन की आशंका से ठहरी हुई थीं।

“अच्छा, तो चल रही हाँ मैं...” वह कुछ अधीरता के साथ बोली। वह मुझे सोचने के मलए उतना समय ◌े्ने के मलए तैयार नहीं थी। यह शायर् उसे अपना अपमान लग रहा था।

मैं मनिय मफर भी नहीं कर पाया। “ठीक है,” मैंने अिकते स्वर में कहा, “फकीरे से कह ◌े्ना, मैं उसे यार् कर रहा था।”

वह मतर्स्क्रित होकर मतर्स्क्रित करते ढंग से मसर महलाकर चुपचाप बाहर को चल ◌ी्। ठप्-ठप्-ठप्-ठप्...उसके फि जूते की आवाज़ गुसलखाने से बाहर पहुाँच गयी।

‘तुम डरपोक हो ,’ मेरा मन अन्दर से मुझे लानत ◌े् रहा था। ‘अगर तुम्हारे मन की बाधाएँ इसी तरह बनी रहेंगी, तो तुम क्या कभी भी अपने को मिु महसूस कर पाओगे?’

मैं भी गुसलखाने से होकर बाहर गैलरी में आ गया। वह पीठ मेरी तरफ मकये चीज़ों को समेि रही थी। मेरे बाहर आ जाने पर भी वह उसी तरह काम में लगी रही, जैसे मक मेरे आने का उसे पता ही न चला है। मुझे लग रहा था मक मनर्दय के मलए अब ज़रा भी समय मेरे पास नहीं है। एक बार वह सीढी से उतर गयी, तो मनर्दय अपने आप ही हो जाएगा —◌ूसरी तरफ से। मैंने जैसे अन्दर से अपने को चाबुक मारना शुरू मकया। ‘क्यों तुम चुपचाप खड़े इस क्षर् को यूँ ही बीत जाने ◌े् रहे हो ? अगर तुम कुछ भी करते हो, या उससे तुम पर कुछ भी असर होता है, तो तुम उसके मलए मकसके प्रमत

उत्तरॎ्रायी हो ? क्यों मबना पररॎ्राम की बात सोचे अपने सामने के क्षर् को स्वीकार करने का साहस तुममें नहीं है ? क्यों तुम अपने अन्दर की सारी रुकाविों को तोडऩे की पूरी तैयारी करके भी अब तक इस तरह उनसे मघरे हुए हो?”

वह सामान अपने पिके में बाँधकर खड़ी हो गयी। चलते हुए एक बार उसने मेरी तरफ ॎ्रेख मलया —ऐसी नज़र से जैसे मजस व्यव्हि को उसने अन्दर छोड़ा था, उसकी जगह मैं कोई और ही अनजबी व्यव्हि होऊँ। वह सीढी पर पााँव रखने जा रही थी , इसमलए अमधक सोचने का समय नहीं था। “सुनो,” मैंने सहसा मनिय करके उसे पीछे से आवाज़ ॎ्रे ॎ्री।

वह रुक गयी। उसकी आाँखों में कुछ वैसी ही चमक भर गयी थी जैसी उस मर्न हाल के अन्दर ॎ्रेखी थी।

“एक ममनि अन्दर आना ज़रा... ” कहकर मैं जल्दी से कमरे में आ गया। वह तुरन्त मेरे पीछे नहीं आयी, जैसे अपनी जगह पर खड़ी कुछ सोचती रही। मफर सामान की गठरी गैलरी में छोडक़र गुसलखाने में आ खड़ी हुई।

“यहााँ आओ, अन्दर!”

वह अन्दर आ गयी। मैंने सहसा उसे अपने साथ सिा लेने की कोमशश की, तो वह इस तरह सि आयी जैसे मक वह रुई और कपड़े की बनी एक पुतली हो —मबना मकसी तरह के मवरोध या प्रयत्न के मैंने छ:-आठ बार उसके होंठों , गालों और गरर्न को चूम मलया। मफर भी उसमें जान नहीं आयी। वह मजस तरह चुपचाप अपने को मेरी बााँहों में छोड़े थी, उससे लग रहा था मक उसके मलए इस सबका कोई मवशेष अथद ही नहीं है—वह उसी मनजीव भाव से उस सारी प्रमिया में से गुज़रकर चुपचाप अपनी गठरी उठा लेगी और ठप्-ठप्—मबना पीछे ॎ्रेखे सीढी से उतर जाएगी।

उसके शरीर की जो गन्ध पास से महसूस हो रही थी, वह उसकी उपव्स्थथमत की गन्ध से काफी अलग थी। मैल और पसीने की यह गन्ध , उसके उस मवशेष भाव के कारर्, मेरा भी उत्साह ठंडा मकये ॎ्रे रही थी। मफर भी उस हर् तक आगे बढ आने के बार् अब अपने को पीछे हिा लेना सम्भव नहीं लग रहा था। उस तरह उसकी आाँखों में परामजत होने की व्स्थथमत में मैं अपने को नहीं ॎ्रेखना चाहता था। मैंने आमहस्ता से उससे फशद पर बैठ जाने को कहा, तो वह चुपचाप बैठ गयी। लेिने को कहा तो उसने लेिकर आाँखें मूाँर् लीं।

इस तरह तो कुछ भी सम्भव नहीं है , मुझे लगा। इसे कम से कम अपनी आाँखें तो खुली रखनी चामहए। “सुनो...” मैंने हिे से उसे महला मर्या।

उसने आँखें खोल लीं। मसवाय हिी बेसब्री के उनमें और कोई भाव नहीं था।

“तुम...ठीक-ठाक तो हो न?” यह सवाल, मजससे तब भी मैं अन्दर-ही-अन्दर लड़ रहा था, सहसा मेरी जबान पर आ गया। उसके मनिष्ट भाव, चेहरे की झाइयों और बाँहों तथा मपंडमलयों की रूखी चमड़ी ने जैसे इसके मलए मौका ◌ेर् मर्या। वह कई क्षर् एकिक मुझे ◌ेर्खती रही। उस नज़र से पहली बार लगा जैसे उसके अन्दर कोई चीज़ जाग गयी हो। उसके होंठ पल-भर मसकुड़े रहने के बार् हिी घृ◌र्ा की मुिराहि से फैल गये। साँस पहले से तेज़ चलने लगी। उसने आमहस्ता से मसर महला मर्या। मफर जैसे और स्पष्ट करने के मलए धीमी आवाज़ में कहा, “नहीं।” मेरी बाँहें जो उसके आधे शरीर को एक गठरी की तरह साथ सिाए थीं , सहसा परे सरक आने को हुईं। पर मैं चेष्टा से उन्हें उसी व्स्थथमत में रखे रहा। कुछ क्षर् हम चुप रहकर जैसे एक-◌ूसरे को तोलते रहे। “तबीयत खराब है तुम्हारी?” मैंने अपने भाव को स्वर से ढकने की चेष्टा की। पर ढीली पड़ती बाँहों ने उसे और भी स्पष्ट कर मर्या।

उसका शरीर कुछ महला—अपने को मुझसे अलगा लेने की चेष्टा में। मेरी बात का उत्तर उसने मसफद पलकें झपकाकर मर्या।

हम ◌र्ोनों जान गये थे मक वह प्रकरर् अब अपनी समाव्प्त पर है। मफर भी अपने को पूरी तरह अलगा लेने से पहले अभी बीच की कुछ मंमजलें तय की जानी थीं।

“कोई खास बात है या...” मेरे हाथ उसके शरीर से हिने को हुए, तो साथ ही उसके भी हाथ उन्हें हिाने के मलए उठ आये। अपने कपड़े ठीक करती वह साँभलकर बैठ गयी। उसके होंठों पर वही मुिराहि मफर उभर आयी थी। मैं अपनी बात का उत्तर पाने के मलए उसे ◌ेर्ख रहा था। पर वह जैसे अपनी मुिराहि से उत्तर ◌ेर् चुकी थी। “खास बात क्या होनी है?” फशद से मछली अपनी कुहनी पर आँखें मिकाए वह बोली, “कुछ मर्न पहले छोिा आपरेशन हुआ था मेरा। अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई।”

“छोिा आपरेशन, यानी...”

वह उसी तरह अपनी कुहनी को ◌ेर्खती रही। “समझते नहीं आप?” और उसकी मुिराहि कुछ अमधक स्पष्ट होकर फैल गयी। मुझे लगा मक मेरी बमनयान के अन्दर कुछ नमी उभर आयी है —बासी पानी की सतह पर हिी काई की तरह। उसकी बात जैसे सीधे खाल के मुसामों में जा धाँसी थी। उसके चेहरे पर उपहास का-सा भाव था। शायर् उसी के कारर् उन कुछ क्ष◌र्ों के मलए वह मुझे खासी बर्सूरत लगी।

“तुमने पहले क्यों नहीं बता मर्या?” मेरे स्वर में तुरशी भर आयी—एक जूमनयर मास्टर और चपरासी की बीवी के भेर् को मफर से थथामपत करती। ओछा पडऩे की खीझ मन में मलये मैं उठकर गला साफ करने व्हखडक़ी के पास चला गया।

“आप पूछते तो बता ्रे्ती।” मेरे लहजे से अप्रभामवत वह अवहेलना के स्वर में बोली, “मैंने तो आप ही की वजह से नहीं बताया। ”

“मेरी वजह से?”

“आप लोगों का कुछ पता थोड़े ही न होता है ? कोई बता ्रे्ने को अच्छा समझते हैं, कोई न बताने को।”

मैं कुछ ्रे्र मबना कुछ कहे व्हखडक़ी पर झुका रहा। ख्याल था मक इसके बार् शायर् वह अपने आप उठकर चली जाएगी। िप्-िप्-िप् बरफ की बूँ्रे् छज्जे से िपक रही थीं। सामने ्रे्व्ार के पत्तों पर जमी बरफ हवा से नीचे मछतरा रही थी। महश्छाप...छत पर फैली बरफ की चार्र का एक बड़ा-सा िुकड़ा ििूकर नीचे आ मगरा। मगरने के साथ वह इस तरह चूरा हुआ मक बरफ की अपनी शकल रह ही नहीं गयी।

“मैं जाऊँ अब?”

मुझे मफर पीछे ्रे्खना पड़ा। वह उसी तरह बैठी थी। आँखों से कुछ ििोलती और प्रतीक्षा करती उसका पूछने का ढंग ऐसा था जैसे कह रही हो मक वह जाने लगे तो मैं मफर से वापस नहीं बुलाऊँगा? मैंने चुपचाप मसर महला मर्या। वह मुँह में हि से कुछ बड़बड़ाती हुई उठ खड़ी हुई।

“क्या कहा है तुमने ?” मैंने उमड़ते गुस्से के साथ पूछ मलया।

“कुछ नहीं ...कहना क्या है अब ?” और वह गुसलखाने की तरफ बढ गयी। मफर ईलीज के उस तरफ़ से बोली, “जाकर बीबीजी से मेरी नमस्ते कह ्रे्ना।” साथ उसने मजस नज़र से मुझे ्रे्खा, उसमें सान पर मघसे चाकू की-सी किा थी। ठप्-ठप्-ठप्...उसके जूते की आवाज़ गैलरी से होकर सीढी पर पहुँच गयी।

मैं और भी कई ममनि व्हखडक़ी के पास बाहर ्रे्खता रहा। छज्जे से िपकती बूँ्रे् —मोम की बूँ्रों की तरह बड़ी-बड़ी। िप्-िप्-िप्। नीचे झामडय़ों में से गुज़रकर जाती वह हवा को थपमकयाँ ्रे्ती ्रे्व्ार की बाँहें। खाली सडक़। रौं्री हुई बरफ। ऊपर माल को जाता लहररया रास्ता। मसर उठाकर ्रे्खने पर माल की मुँडेर। सब कुछ रोज़ की तरह खाली।

मनस्तब्ध।

हाथ फैलाकर छज्जे से िपकती बूँ ◌ र्ें को मैं हथेली पर लेने लगा। तत् तत् तत् ...। मिोर-स्टैंड का वेमिंग रूम। मबस्तरों , बक्सों, गठररयों, व्हस्त्रयों-पुरुषों तथा बच्चों से ल◌र्ा। र्घोंिती बर्बू—फशद, बेंचों, ◌र्ीवारों, पिरोल का धुआँ छोड़ती गामडय़ों , कीचड़ हुए बरफ के लों◌र्ें, गैस के मरीज़ यामत्रयों और रुके हुए पनालों की। भाग-◌र्ौड़—सामान यहाँ से वहाँ रखवाते, धक्कम-धक्के में मिकि खरीर्ते, झगड़ते और गामलयाँ बकते मुसामफरों की; नीचे से आती गामडय़ों के पीछे ◌र्ौड़ते, अपने-अपने िोकन व्हखड़मकयों से अन्दर पहुँचाते और एक-◌र्ूसरे से मारपीि करते कुमलयों की; तथा उस सबके बीच सुबह के अखबार, बासी फल और धूल-खाई ममठाइयाँ बेचते फेरी वालों की। पचीस आर्ममयों के बीच गुत्थमगुत्था होकर मकसी तरह मिकि तो मैं ले आया था, पर सत्रह सो इकावन नम्बर की बस मजससे सफर करना था, अभी नीचे से आयी नहीं थी। मैं हर ◌र्ो-चार ममनि बार् बाहर आकर मघचमपच खड़ी बसों के नम्बर पढता था, नीचे से आ रही हर बस की आगे-पीछे की नम्बर-प्लेिें ◌र्ेखता था और उस व्हखंचते-कसते गुंझल से बचने के मलए वेमिंग हाल की सुरमक्षत चौहद्दी में लौि आता था। वह सारा वातावरर् ही जैसे एक छिपिाहि का था —हर चीज़ के वहाँ से मनकल भागने की झिपिाहि का और न मनकल पाने की मजबूरी का। हर चीज़ हर ◌र्ूसरी चीज़ से उलझकर उसके और अपने रास्ते में रुकावि बनी थी। रास्ते में कुछ जगह लैंड-स्लाइड होने की वजह से उधर की गामडय़ाँ लेि आ रही थीं। इधर की गामडय़ाँ उनके बैररयर पार करने की प्रतीक्षा में रुकी थीं। पूरा मिोरस्टैंड एक ऐसे इंजन की तरह घरघरा रहा था मजसका एक्सीलरेिर जाम हो गया हो।

एक बुड्ढा आर्मी था जो कई बार उधर से इधर और इधर से उधर सडक़ पार कर चुका था। एक जीप थी जो पामकिंग के मलए जगह की तलाश में कभी ◌र्ायें जाती थी, कभी बायें। स्टैंड के बीचोंबीच सन्तरों की एक िोकरी मकसी बस के पमहये से कुचल गयी थी और कई छोिी-बड़ी—हर उम्र के लोग मली◌र्ा होने से बचे सन्तरों पर इधर-उधर से झपि रहे थे। मैं आठवीं बार वेमिंग-रूम की सड़ाँध से बचने के मलए मफर बाहर मनकल आया था। एक बेबसी की नज़र सडक़ पर डालता हुआ सोच रहा था मक क्या यह सम्भव होगा मक समय से नीचे पहुँचकर मैं आज कहीं की भी गाड़ी पकड़ सकूँ!

एक तरफ बर्बू से मसर फिने को आ रहा था और ◌र्ूसरी तरफ अंतमडय़ों में भूख की कुलबुलाहि महसूस होने लगी थी। चलते समय रास्ते की जो योजना मर्माग में थी, वह सब गड़बड़ा गयी थी। सोचा था, साढे पाँच बजे अधरास्ते के उस छोिे-से होिल में चाय मपऊँगा मजसका बुड्ढा मामलक हर

आनेवाले की खामतरार्ारी के मलए स्वयं खड़ा रहता था। हर बार सफर करते हुए मन में आशंका रहती थी मक इस बार शायर् वह वहााँ नहीं ममलेगा। पर उसे र्ेख लेने पर एक आश्वासन-सा महसूस होता था मक इतना समय बीत जाने पर भी सब कुछ अभी उसी तरह है —मक उस बीच जो कुछ हुआ है , उसके होने से मकसी चीज़ में कोई अन्तर नहीं आया। वह बुड्ढा सरर्ार जैसे एक मसग्नल था, मजसके डाउन होने के बार् ही मज़न्दगी की पिररयााँ कोई वास्तमवक रुख बर्ल सकती थीं। वैसा ही एक और मसग्नल था बैरा रामजस —नीचे के स्टेशन की कैंिीन का—जो साल भर बार् वहााँ जा बैठने पर भी उसी पररचय की मुिाराहि के साथ मेज़ साफ करता था और खाना खाने से पहले झुककर पूछ लेता था, "वही आप वाला आडदर?" और मसर महला र्ेने पर अपनी यार्र्ाश्त के प्रमार् के तौर पर सूप से लेकर कॉफ़ी तक एक-एक चीज़ लाकर सामने रखने लगता था। सोचा था, साढे आठ बजे वहााँ पहुाँचकर खाना खा रहा हाँगा—रामजस को बता रहा हाँगा मक इसके बार् शायर् काफी मर्नों तक मेरा इस तरफ आना न हो। पर छ: बजने को थे और अभी यही पता नहीं था मक वहााँ से चलने में मकतना समय और लगेगा। गनीमत थी मक कुमलयों के साथ सामान भेज र्ेने के बार् िि्ल के मडब्बे में से थोड़ा-बहुत खाना हलक से नीचे उतार मलया था। खाना उतना ही गन्दा और उबकाने वाला था मजतना रोज़ होता था, बक्कि कुछ उससे ज़्यार्ा ही, या शायर् उस समय मुझे लगा वैसा था। पर साढे पााँच बजे तक अपने को भूख से सुरमक्षत रखने के मलए , जैसे अपने आाँख चुराते हुए, उससे थोड़ा बहुत पेि भर मलया था। अब ज्ों-ज्ों समय बीत रहा था, अपने शरमसार करता यह मवचार मन में जाग रहा था मक मजतना खाया था, उससे कुछ ज़्यार्ा क्यों नहीं खा मलया, मजससे मक वह सुरक्षा कुछ र्ेर और बनी रहती—कम से कम प्रतीक्षा का यह समय तो मनकल ही जाता।

मुचड़ा हुआ मिकि हाथ में था। बस का नम्बर र्ेखने के मलए उसे बार-बार जेब से मनकाल लेता था। मजतनी र्ेर हो चुकी थी, उसी से लग रहा था मक चाय की जगह शायर् खाना अधरास्ते के होिल में खाना पड़े और नीचे पहुाँचने पर रामजस से मसफद एक प्याली चाय पी लेने का मौका न ममले। एक ख्याल यह भी था मक खाने के वक़्त अधरास्ते का बुड्ढा सरर्ार भी अपनी जगह पर न ममला, तो यात्रा की शुरुआत से ही पिरी बर्ल जाने का एहसास न होने लगे—लगने लगे मक आगे का सब कुछ होने के अथद में उसका रूप अब मनममत है...।

मिकि को मसगरेि की तरह गोल करके हाथों में मलता हुआ मैं सडक़ के उस तरफ़ ढलान के घरों और उनसे आगे र्ायीं तरफ़ रेलवे शेड की छत को र्ेखता रहा। छत पर बन्दरों की एक िोली अड्डा जमाए थी। पन्द्रह-बीस बन्दर थे—छोिे-बड़े और मझोले—जो छत के कंगूरों पर िहलते हुए

आसपास की पूरी व्थथमत का मनरीक्षर् कर रहे थे। वे शायर् मकसी एक तरफ़ धावा बोलने से पहले अपनी योजना मनमित कर लेना चाहते थे। शेड के अन्दर से आता इंजन का धुआँ उनकी योजना को अपनी तरफ़ से एक मर्शा ◌र्े रहा था। शायर् यह वही इंजन था मजसे ◌िल-पिी की आव्खरी गाड़ी ले जानी थी—उस पिी की जो एक रात नीचे के स्टेशन पर किाकर आगे जाने को थी। पार्ी बेन्सन , बॉनी हाल, बुधवानी और कई लोगों की सीिें उस गाड़ी में बुक थीं। उस समय तक शायर् वे सब स्टेशन पर आ चुके थे और इंजन के शेड से आने की प्रतीक्षा में पिररयों पर आँखें गड़ाए थे। मैं अब भी हाथ का मिकि फाडक़र उन लोगों के साथ उस गाड़ी में जा सकता था। बुधवानी बता रहा था मक उस गाड़ी में तेरह सीिें खाली बची हैं। लेमकन उन लोगों के बीच जाना मफर से उसी घेरे में लौिना था मजससे इतनी बेसब्री से अपने को बाहर मनकालकर लाया था। एक बार ◌िल की सडक़ पार कर आने के बार् से मजन चेहरों को मन से बुझा ◌र्ेना चाह रहा था, नये मसरे से उन्हें अपने आसपास उभार लेने का अथद हो सकता था मफर से उनकी अपेक्षाओं के अनुसार मनधादररत होने लगना—उसी तरह बातें करना, सोचना, कुढऩा और शायर् बुधवानी के मवनम्र सुझाव के अनुसार सीधे खुरजा तक का मिकि ले लेना। मैंने अपना ध्यान ज़बरर्स्ती शेड की छत से हिाया और मफर अपने आसपास ◌र्ेखने लगा। हताश भाव से पनाले के मकनारे बैठकर बीमडय़ाँ फूँकते कुली। एक बस के नीचे लेिकर उसका साइलेंसर ठीक करता ममस्तरी। भीख के मलए हाथ फैलाए एक बुमढय़ा और तीन बच्चे। सफर में ममतली से बचने की गोमलयाँ बेचता एक र्वाईफरोश। एक मघनौनापन था जो उस पूरे वातावरर् से मुझ पर मघरा आ रहा था, पर वास्तव में वह मघनौनापन क्या उस वातावरर् में ही था? मुझे लगा मक चलने के समय तक मजस मशद्दत से कुछ और चाह रहा हाँ। पर वह कुछ और क्या था?

सुना मक सत्रह सौ इकावन नम्बर की बस खराब होकर बैररयर के पास रुकी है। अभी एक-डेढ घंिा और लगेगा उसे ठीक होकर आने में। उतने समय के मलए सफर की शुरुआत का और थथमगत हो जाना मुझे उस समय अच्छा ही लगा। मैं एक बार मफर लौिकर वेमिंग-रूम की चौहद्दी में गया, पर र्स-बीस सेकेंड से ज़्यार्ा वहाँ नहीं रुक सका। वहाँ रखे अपने सामान को इस नज़र से ◌र्ेखा जैसे उसे भी खामखाह साथ ढोकर ले आया हाँ , सामान जैसी ही मचढ अपने आप से भी हुई—मक क्यों मैं इस व्यव्ि को भी हर जगह साथ ढोने के मलए मववश हाँ, जो हर तरह से स्वति होने के मलए छिपिाता हुआ भी हर ◌र्ो घंिे में भूख की बात सोचने और उसका उपाय करने के मलए कुछ भी कूड़ा-कचरा पेि में भरने लगता है ? इस बार वेमिंग-रूम से बाहर आना जैसे सामान और उस व्यव्ि ◌र्ोनों से अपने को अलगा लेने की कोमशश करना था , जैसे मक ◌र्ोनों को वहीं छोडक़र मुझे चुपचाप सडक़ पर आगे कहीं को चल ◌र्ेना था।

मोर-स्टैंड पर अ ाँधेरा उतर रहा था। शेड के नीचे से इंजन फफ्-फफ्-फफ् धुआाँ छोड़ता प्लेिफामद की तरफ़ चला गया था। सत्रह सौ इकावन के प्राय: सभी मुसामफर जो कुछ ेर्र पहले एक- ूसरे से उस बस के मवषय में पूछ रहे थे , अब इधर-उधर मछतरा गये थे। मुझे रात को नीचे पहुाँचकर कहीं की भी गाड़ी ममल सकेगी, इसकी अब सम्भावना नहीं रही थी। आसपास गामडय़ों, आर्ममयों और ढोए जाने वाले सामान की कुलबुलाहि तनाव के मशखर पर पहुाँचकर जैसे वहीं ठहर गयी थी। जाम होकर घरघराता इंजन अब मसफद घरघरा रहा था—जाम को तोडक़र आगे बढऩे की कोमशश उसके अन्दर से जवाब े र् गयी थी। मैंने पास से गुजरते एक फल वाले को रोककर उससे ेर्ो बासी सेब खरीर् मलये और सत्रह सौ इकावन के मिकि को एक हाथ से मसलता कचर-कचर सेब खाने लगा।